

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182320

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 81.6 / 815A Accession No. G.H. 225

Author शेयद एजाज हुसैन 1

Title 'अकबर' इलाहाबाद 11954

This book should be returned on or before the date
last marked below.

‘अकबर’ इलाहाबादी

सम्पादक

डा० सैयद एजाज हुसैन, एम० ए०, डी० लिट०

अध्यक्ष, उर्दू विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय

प्रकाशक

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

१९५४]

[मूल्य ढाई रुपया

प्रथम संस्करण १९५४

मुद्रक और प्रकाशक

जे० के० शर्मा, इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस, इलाहाबाद

अपनी बात

यह किताब आप खरीदकर या माँगकर या और किसी तरीकेसे हासिल करके पढ़ें, पढ़ना जरूरी है। इसलिए नहीं कि मैंने अच्छा संकलन या अच्छी आलोचना की है, बल्कि इसलिए कि यह 'अकबर' की रचना है, जिसमें हर मौक़ेके लिहाज़से हास्यरसमें कोई न कोई छन्द आपको मिल जायगा। ऊँचीसे ऊँची सोसाइटीसे लेकर नीची-से-नीची जगहके लिए भी अकबरने कुछ न कुछ कहा है। अगर आप आँखसे देखकर किताब न पढ़ना चाहें तो कानसे सुनकर मन ही मन में कुछ छन्दों या चरणोंका मज़ा उठावेंगे। ऐसे छन्दों और चरणोंको सुनकर आप कैसे भूल जायेंगे:—

रंज लीडरको बहुत हं मगर आरामके साथ,
क्रौमके ग़ममें 'डिनर' खाते हं हुक्कामके साथ।

शेख़ साहब देखकर उस बुतको साकित हो गये,
मास्टर साहब बहुत कमज़ोर थे चित हो गये।

बुद्ध मियाँ भी हज़रते-गांधीके साथ हैं,
गो गर्दे-राह हैं मगर आँधीके साथ हैं।

बतायें आपसे मरनेके बाद क्या होगा,
पुलाव खायेंगे अहबाब फ़ातहा होगा।

न 'उफ़' कीजिये और न 'बट' कीजिये,
जो साहब कहें उसको भट कीजिये ।

हरीफ़ोंने रपट लिखवाई है जा-जाके थानेमें,
कि अकबर नाम लेता है खुदाका इस ज़मानेमें ।

✓ भूठे हैं हम तो आप हैं भूठोंके बादशाह ।

✓ हमारी क्या है ए भाई न 'मिस्टर' है न मौलाना ।

✓ इतना दौड़ाया लंगोटी कर दिया पतलूनको ।

मेरा लाल कालेज का काकातुआ है ।

✓ जी रहे हैं अभी कुछ अगले ज़मानेवाले ।

इस किस्मके छन्द या चरण उठते-बैठते आपको सुनाई देंगे । इसीलिए मैंने कहा कि इस किताबको पढ़ना जरूरी है । आपका जी जाहे किताबकी कीमत दें या न दें । मगर एक टैक्स आपको जरूर अदा करना है ।

हिन्दीमें मुझे उर्दू व्याकरणकी दो बातें नहीं मिलीं 'अफ़' और 'इज़ाफ़त' । अफ़ में (१) 'वाव' होता है जिसके माने 'और' के होते हैं । हिन्दीमें इसके लिए 'व' होता है जिसके मानी लोग आम तौरसे जानते हैं । मुझे इस सिलसिलेमें दूसरी बात कहनी है । यानी छन्दमें 'वाव' को कभी आवाज़

बढ़ाकर पढ़ना पड़ता है और कभी घटाकर। इजाफ़तके लिए उर्दूमें कोई अक्षर नहीं है सिर्फ़ शब्दके नीचे एक छोटी सी तिरछी लकीर (,) खींच देते हैं और उसका मतलब 'का' 'की' से निकलता है। मैंने इजाफ़तको हर जगह 'ए' की मात्रासे और अल्फ़ को 'ओ' से जाहिर किया है। इसको समझना और याद रखना एक बौद्धिक मूल्य है जिसे आपको अदा करना है। जी चाहता है कि हिन्दीमें भी इस किस्मकी बात बढ़ जाय ताकि पढ़ने वालेको यह धोखा न हो कि इस किस्मकी तरमीमोंसे जो हिन्दी शब्दोंकी सूरत बदल गई हैं उसके मानी कुछ और होंगे।

इस किताबमें मंकलन ज्यादातर सरल ज़बान और अच्छी रुचि देखकर किया गया है। आपको पसन्द आ जाय तो अकबरको दुआ दीजियेगा और न पसन्द आये तो मुझे भला-बुरा कहकर ख़ुश हो लीजियेगा क्योंकि ख़ुश रहना ज़रूरी है।

संकलनमें चूँकि यह चीज़ भी सामने थी कि पूरा अकबर आपके सामने आ जाय इसीलिए अकबरके हर दौर और हर तरहकी कविता दी गई है। काव्य प्रकारके लिहाज़से ग़ज़ल और रुबाई अलग अलग भी दे दी गई हैं। आप पढ़ तो सभी डालिए नतीजा चाहे जो कुछ हो, क्योंकि कवि खुद कह गया :—

शेरे-अकबरको समझ लो या यादगारे इन्क़लाब,

और इन्क़लाब तथा ज़िन्दावादके कायल आप भी होंगे।

मैं शुक्रियाको रस्मी बात समझकर हमेशा छोड़ दिया करता हूँ लेकिन आपकी नज़रें शायद ढूँढ़ रही हों किमीका शुक्रिया इस किताबमें अदा किया गया है या नहीं। इस लिहाज़से मैं अपने दोस्त स्थानीय दैनिक 'अमृतपत्रिका' के सह-सम्पादक श्री बाबूलाल श्रीवास्तवका नाम पेश करता हूँ जिन्होंने रात दिन एक करके इस किताबकी तैयारीमें मेरी हर तरहकी मदद की और अब यह महसूस होता है कि जैसे मैं सचमुच उनका शुक्रगुज़ार हूँ। मुमकिन है कि जब यह किताब मेरे प्रिय दोस्त डा० रामकुमार वर्माके

हाथ पड़े और इस सिलसिलेमें वे अपना नाम देखें तो बहुत खुश न हों और मन ही मन यह भी कहें कि दोस्ती और आडम्बरसे क्या नाता, लेकिन फिर भी इस किताबकी ज़बान और बयान जाँच कर, कई जगह बहुत मुफ़ीद सुझाव देकर उन्होंने मुझे बहुत मदद दी है ।

‘नशेमन’

इलाहाबाद

एजाज़

२६ जनवरी १९५४

विषय-सूची

	पृष्ठ		पृष्ठ
अपनी बात	३	वर्त्तमान युग	१४४
‘अकबर’ इलाहाबादी	६	बोटके शैदाई	१४५
‘अकबर’ और उनकी		इशरत का घर	१४६
शायरी	१६	बिगड़ी दशाका कारण	१४७
उर्दू काव्यमें व्यंग और		एक बूढ़ा और लड़के	१४७
हास्य	५५	अकबर और कालिज	१४८
हास्य रसकी कविताएँ	६३	एक मिस और जबान	१४८
बड़ी कविताएँ—		मजनूँ और उसकी सास	१४९
जलवए-दरबारे-		सवाल जवाब	१५०
दिल्ली	९९	एक वहमी	१५०
पानीका बहाव	१०३	स्थायी तरक्की	१५१
कान्फ्रेन्स	१०६	भौरेका राग	१५१
गजलें	१०९	बीमारी	१५१
मुस्तजात	१३२	कटहलका पारसल	१५२
रुबाइयाँ	१३४	नए लड़के	१५२
अन्य कविताएँ—		क्रौमी राग	१५२
बर्क-कलीसा	१३९	शायरी क्या है	१५३
वापस आनेके लिये	१४०	सेल्फ गवर्नमेन्टका नतीजा	१५३
डैमफूल	१४१	पूरब और पच्छिम	१५३
हुजूर जार्ज और हम	१४२	बिना केन्द्र बिन्दुके गोलाई	१५४
अकबर और एक बुजुर्ग	१४३	नए युग की नारी	१५४
		दिल्ली दरबार	१५५

	पृष्ठ		पृष्ठ
शैख और नई शिक्षा	१५५	कहां तक है	१५८
कल क्या होगा	१५६	अलफ़ाज़ और मअानी	१५८
दिसम्बर भो माह जून हुआ	१५६	क्या गुज़री	१५९
इन्सान कौन है	१५७	दवा	१५९
शैख और अकबर	१५७	क्या हो रहा है	१५९
बदला हुआ ज़माना	१५७	धरम	१५९
भगवानका प्रेम	१५८	इल्म और जहालत	१६०
दालमें काला	१५८	हरिको जपना	१६०

‘अकबर’ इलाहाबादी

हिन्दुस्तानमें अकबर नामके दो ही ऐसे कुशल व्यक्ति हुए हैं जिनको दुनिया आज तक याद करती है। एकने शासनका सहारा लेकर भूमि पर राज्य किया और दूसरेने साहित्यकी देवीका आशीर्वाद लेकर दिलोंपर राज्य किया और उसके राज्यकी सीमा दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। एकने गंगा यमुनाके नगरमें किला बनाया और दूसरेने इसी बस्तीमें घर बनाया। एक अकबराबादके सिकन्दराबादमें दफ़न है और दूसरा इलाहाबादमें हमेशाकी नींद सो रहा है लेकिन दोनों आज तक बराबर याद किये जाते हैं। दोनों ही इतिहासके दो पन्ने हो गए हैं लेकिन एक राजनीतिक है और दूसरा साहित्यिक। इस समय हमको पहले अर्थात् राजनीतिक अकबरसे शरज़ नही, साहित्यिक अकबरसे सरोकार है जिनके जीवनका हाल और कविताओंकी आलोचना यहाँ हम इसलिये दे देना ज़रूरी समझते हैं कि उनके साहित्यको समझनेमें कुछ मदद मिल जाय।

‘अकबर’ इलाहाबादी १६ नवम्बर १८४६ में पैदा हुए। उनका जन्म-स्थान इलाहाबादका एक गाँव है जिसका नाम बारा है। यह गाँव इलाहाबाद शहरसे कोई १२ मीलकी दूरी पर है। इसी नामकी तहसील भी है। इसी तहसीलमें अकबरके चचा सय्यद वारिस अली तहसीलदार थे। अकबरके बापका नाम तफ़ज़्जुल हुसैन था। ये अपने समयके बहुत पढ़े लिखे आदमी थे। गणितके विशेषज्ञ थे और ईश्वर भक्तितने उन्हें महात्मा बना दिया था। उन्हें ‘रहस्यवाद’ में विशेष रुचि थी। अकबरको प्रारम्भिक शिक्षा उनके पितासे ही मिली, इसीका यह फल था कि अकबरको भी रहस्यवादकी काफ़ी जानकारी हो गई। उनकी रचनाओंमें कभी कभी इसकी झलक साफ़ नज़र आती है। आठ-नौ वर्षकी उम्र तक अकबर

घर पर ही पढ़ते रहे इसके बाद उनकी माँ उनकी शिक्षाके खयालसे शहर (इलाहाबाद) में चली आई और यहीं मौलवियोंसे अकबर पढ़ते रहे । १८५६ में अकबर जमुना मिशन स्कूलमें दाखिल हुए । लेकिन उन्होंने दो-चार अंग्रेजी किताबें पढ़कर १८५६† में स्कूल छोड़ दिया ।

अकबर न ऐसे घरानेमें पैदा हुए जहाँ आर्थिक कठिनाइयाँ रहती हों और न गवर्नमेण्ट स्कूलोंमें पढ़े, न किसी मदरसे में । शायद महीने दो महीनेके लिए किसी मस्जिदके मदरसेमें पढ़ा था ।

अकबरको बचपनसे ही पढ़ने-लिखनेका शौक था । उन्होंने अपने आप अंग्रेजीमें योग्यता प्राप्त की और अच्छे-अच्छे मशहूर उर्दू शायरोंके कलामको पढ़ डाला । उनको पढ़ने-लिखनेका शौक ज़िन्दगी भर रहा । आखिरी उम्रमें उन्होंने 'मिल' और 'स्पेन्सर' आदिकी मशहूर किताबें पढ़ कर दर्शनका भी ज्ञान प्राप्त कर लिया था ।

अकबरको नौकरीकी तलाशमें काफ़ी समय इधर-उधर भटकना पड़ा । उन्होंने कभी जमुनाके पुल पर और कभी रेलवेके मालगोदाममें काम किया । जब जमुना पर पुल बन रहा था तो कुछ दिनों वहाँ पत्थरोंकी नाप-जोखके लिए नौकर रहे । वहाँसे निकलकर इलाहाबाद स्टेशनके मालगोदाममें बीस रुपये मासिक पर नौकर हो गये । थोड़े दिनों बाद इस नौकरी-से भी जी ऊब उठा और इसको भी छोड़ दिया । अब उन्हें यह शौक हुआ कि कचहरीमें कोई नौकरी की जाय । अतएव उन्होंने एक अर्जी लिखकर कलक्टरके यहाँ भेज दी । इस अर्जीकी कहानी कुछ दिलचस्प है इसलिए पूरी तरह बयान करनेको जी चाहता है:—

अकबरने एक अर्जी लिखी और पेशकारको दे दी । वह अर्जी दूसरे कागज़ोंमें लिपटकर कहीं खो गई । हाज़िरीके दिन अकबर दूसरे उम्मीद-वारोंके साथ दफ़्तर गये । उस समय उनकी अवस्था तेरह सालकी थी

और उम्मीदवारोंमें वह सबसे छोटे थे । कलक्टरने अकबरको देखते ही पहचान लिया । मुस्कराकर उन्होंने कहा—“इस बच्चेने एक ज़रा-सा पर्चा लिखकर दिया था, वह कहीं खो गया है । हम मजबूर हैं क्या करें ।” अकबर घर लौट आये और फिर बाज़ार जाकर एक बहुत बड़ा कागज़ खरीद लाये । कागज़ इतना बड़ा था जितना बड़ा स्कूलोंमें नक्शा टंगा होता है । बड़े मोटे-मोटे अक्षरोंमें उस पर अर्ज़ी लिखी । दूसरे दिन बिना कुछ सोचे कलक्टरके सामने वह अर्ज़ी पेश करदी । अर्ज़ीकी लम्बाई-चौड़ाई-ने पूरी मेज़ घेर ली । कलक्टर साहबको ‘ज़रासा पर्चा’ वाला क्रिस्सा याद आ गया और उन्होंने उसी समय अकबरको नज़र नवीसके स्थानपर नियुक्त कर दिया ।

यह नौकरी अधिक दिनों न चल सकी और दो सालके बाद अकबरने इसे भी छोड़ दिया । १८६६ के करीब अकबरको ख्याल आया कि वकालत करनी चाहिए । अतः उन्होंने इम्तहानकी तैयारी शुरू कर दी । उस समय तक अकबरकी अँग्रेज़ीकी योग्यता ऐसी न थी कि वे क़ानूनकी मुश्किल किताबोंका मतलब समझ लेते । लेकिन अकबरने अपनी हिम्मत और प्रतिभाका सहारा लेकर पढ़ना शुरू कर दिया । इस तैयारीके सिलसिलेमें एक अजीब घटना घटी । एक दिन अकबर सिराजुद्दीन हैदर नामक अपने एक रिश्तेदारसे मिले और कहा कि आप अपनी किताब ‘ताज़ीराते-हिन्द’ और ‘क़ानूने-शहादत’ मुझे शामको दे दिया कीजिए मैं सुबह वापस कर दिया करूँगा । उनके रिश्तेदारने पूछा कि क्या करोगे, तो अकबरने कहा, कुछ नहीं, देखूँगा कि इसमें क्या लिखा है । इस पर सिराजुद्दीन हँस पड़े और बोले कि इस ख़तको छोड़ो । इसकी इबारत मुश्किल है और मतलब बहुत पेचदार है । पर अकबर न माने । लाचार होकर सिराजुद्दीनने दोनों किताबें दे दीं । दूसरे दिन सुबह अकबर जब किताबें वापस करने गये तो सिराजुद्दीनने पूछा—“कुछ पढ़ा, कुछ समझे ?” अकबरने जवाब दिया—“दोनों किताबोंके पचास-पचास पृष्ठ

पढ़ लिये । किताबें समझमें तो आती हैं आप कहींसे पूछिए ।” सिराजुद्दीन-ने किताब खोली, एक जगहसे एक दफा पूछी । अकबरने उस दफाकी पूरी-पूरी इबारत और उसका मतलब सब बयान कर दिया । सिराजुद्दीन भोचबके रह गये । ऐसा प्रतिभाशाली और इतनी तीव्र स्मरणशक्ति वाला आदमी उन्होंने अपनी ज़िन्दगीभरमें कोई और न देखा था ।

अकबर इम्तहानकी तैयारीमें ही लगे थे कि कलक्टरने उनकी तारीफ़ सुनकर तहसीलदार बना दिया, और उसी तहसीलमें भेज दिया जिसमें वे पैदा हुए थे । वहाँ देहातमें अकबरका जी क्या लगता । जब तक हो सका छुट्टियाँ लेते रहे और अन्तमें इस्तीफ़ा देकर घर चले आये ।

सन् १८७० में अकबर हाईकोर्टमें ‘मिसिलस्वाँ’ की जगह पर नौकर हो गये । हाईकोर्टके वातावरणमें वे क़ानूनके और निकट होते गये । किताबें पढ़ते रहे, वहाँसे सुनते रहे और उनकी उम्रमें बढ़ती रहीं यहाँ तक कि वकालतका इम्तहान पास कर लिया । उन्होंने सात साल तक इलाहाबाद, गोंडा, गोरखपुर और आगरामें वकालत की । इस पेशेमें उन्हें बड़ी सफलता मिली । बहस करनेमें उनका खास नाम हो गया । उनकी इस सफलताको देखकर सरकारने अपनी ओर खींच लिया । १८८० में वे मुन्सिफ़के पदके लिए चुन लिये गये और इस प्रकार उनकी स्वतंत्रता ख़तम हो गई ।

मुन्सिफ़ीमें भी अकबरने बड़ी योग्यताका सबूत दिया और क्रमशः उन्नति करते-करते सन् १८९४ में सेशंस जज हो गये । वे शीघ्र ही हाईकोर्टके भी जज बना दिये गये होते क्योंकि यह तय हो गया था कि जस्टिस एकमनके अवकाश ग्रहण करते ही अकबरको हाईकोर्टका जज बना दिया जायगा किन्तु उनकी आँखोंकी रोशनी कम होने लगी इसलिए उन्होंने समयसे पहले ही सन् १९०३ में स्वयं पेन्शन ले ली और हाईकोर्टके जज होनेकी जगह अपने घरमें स्वतन्त्र होकर बैठ गये ।

अकबरने अपने सोचे-समझे विचारोंको कविताकी भाषामें इस तरह प्रस्तुत किया कि समस्त देश अकबरकी तारीफ़ करने लगा । उन्होंने अपनी

शायरी द्वारा जिस तरह अपने देशकी सेवा की और यश कमाया वह हाईकोर्टमें बैठकर फ़ैसले करनेसे सम्भव नहीं हो सकता था चाहे वे एक बार नहीं दो बार हाईकोर्टके जज हो गये होते ।

पेंशन लेकर अकबर अपने मकान ‘इशरत मंज़िल’में चले आये । यह मकान कोतवालीके पीछे एक आलीशान कोठी है । अकबरने स्वयं ही इसको बनवाया था । अपने घरमें वे एकान्तवास करने लगे । दुनियासे अलग हो जानेका विचार उनको बहुत पहले से हो चला था । एक दुर्घटनाके कारण उनका मन इतनी ख्याति और क्रदरदानीके वावजूद भी उचाट हो गया था । यह दुर्घटना सन् १९०३ में घटी जब कि उनके हाशिम नामके लड़के का स्वर्गवास हो गया । अकबर उसको बहुत अधिक चाहते थे । उनकी दृष्टिमें वह दूसरा अकबर हो रहा था । वैसा ही प्रतिभाशाली और उन्हीं जैसा पढ़ने-लिखनेमें होशियार । वह केवल चौदह वर्ष ही इस संसारमें रह सका । उसकी बेवक्त मौतने अकबरको जीते जी मुर्दा कर दिया था । अपने एक खतमें अकबरने अब्दुलमाजिद दरियाबादीको लिखा था:—

“हाशिम एकाएक मरज सरसाम (सन्निपात) में मुब्तिला होकर मुझसे हमेशाके लिए जुदा हो गया । बीबी पहले ही मर चुकी थी, वही लड़का दुनियावी ज़िन्दगीका सहारा था । मजहब, फ़लसफ़ा, तसव्वुफ़ने दीवानगीसे महफूज़ रखा लेकिन बेहद अफ़सर्दा और दुनियासे बेताल्लुक हो गया हूँ । होश-ओ-हवाससे मजबूरी है ।”

इस सदमेको अकबर ज़िन्दगी भर न भुला सके । इसके बाद यद्यपि वे अठ्ठारह साल तक जीते रहे पर बार-बार उसका ज़िक्र अफ़सोसके साथ करते रहे । पेंशन लेनेके बाद अकबरने अपनी बाक़ी ज़िन्दगी इलाहाबादमें ही गुज़ारी । वे मजहबके कामोंमें बड़ी दिलचस्पी लेते थे । रोज़ा, नमाज़, क़ुरान सबको गले लगाये रहते, तंगनज़री और पक्षपात उन्हें छू तक नहीं गया था । उनकी सोहबतमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सभी बराबर आया

करते और मज़ा यह था कि हर व्यक्ति अपनी जगह पर यह समझता था कि अकबर मुझसे अधिक किसीको नहीं मानते ।

हाशिमकी मृत्युके बाद अकबर बहुत उदास और अधिकतर खामोश रहा करते, फिर भी दूसरोंको हँसाते रहते थे । चूँकि मज़ाक़ उनकी प्रकृति बन गया था इसलिए कुछ न कहते हुए बहुत कुछ कर जाते या कह जाते । उनका एक लतीफ़ा है । यह शायद १६२० की बात है । एक दिन उन्होंने प्रोफ़ेसर नासिरीकी दावत की । नासिरी म्योर सेन्ट्रल कालेजमें अरबी, फ़ारसीके प्रोफ़ेसर थे । खुद उन्होंने ही यह लतीफ़ा मुझसे बयान किया । अकबरने जिस दिन उनकी दावत की थी उस दिन संयोगसे नासिरीको पेचिशकी शिकायत हो गई । उन्होंने अकबरको लिख भेजा कि मुझे पेचिश हो गई है इसलिए हाज़िर न हो सकूँगा । आज माफ़ी चाहता हूँ । अकबरने कहला भेजा कि आखिर कुछ न कुछ तो आप खायेंगे मेरे ग़रीब खानेपर ही खाइए । मैं आपही के मज़ाक़ (रुचि) के लोगोंको खानेपर बुला लूँगा । शामको नासिरीको जाना ही पड़ा । नासिरीका कहना है कि जब मैं अकबरके घर पहुँचा तो देखा कुर्सियों पर अजब-अजब ढंगके लोग बैठे हैं । कोई घुटने तक धोती बाँधे, कोई तहमद पहने, कोई कुर्सी पर पैर उठाकर बैठा है और कोई नंगे पाँव है । मैं समझा कि अकबरकी ज़मींदारी-से असामी आये होंगे, अब चले जायँगे । कुछ देर मैं चुप रहा आखिरमें अकबरसे मैंने पूछा—“आप लोगोंकी तारीफ़ ?” अकबरने बड़ी गम्भीरतासे जवाब दिया—“ये सब आपकी बिरादरीके लोग हैं, दावतमें शरीक होंगे ।” नासिरी अब भी कुछ न समझे । अकबर नासिरीकी हैरानीको समझ थोड़ा मुस्कराये और कहने लगे—“मौलाना ! इन सभीोंको पेचिश है । मैंने तमाम शहरके हकीमोंसे दरियाफ़्त कराके पता लगाया है कि आज इलाहाबादमें किस-किसको पेचिशकी शिकायत है । इसके बाद इन लोगोंको जमा किया है । सच बताइये इन लोगोंसे ज़्यादा आज आपका साथ खानेमें कौन दे सकता था । आप खानेके पहले और खानेके बाद जो

हरकतें करेंगे ये सब आपका साथ देंगे । क्यों भाई जुम्नन, बोलो भाई नत्थूलाल, और तुम क्यों चुप हो भाई बफ़ाती ?” जितने बैठे थे सभोंने कहा—“हज़ूर ! जो हुक्म हो, मौलाना जो कुछ करें वो तो करना ही है ।” खानेमें खिचड़ी दहीके साथ आई । नासिरीने कहा—“आप भी तो आइए ।” अकबरने कहा—“चूँकि मैं आपका आज हर काममें साथ नहीं दे सकता इसलिये माफ़ी चाहता हूँ । मैं अधूरा दोस्त नहीं बन सकता । बनूँगा तो पूरा यह क्या कि खानेमें साथ दूँ और पाखानेमें न दूँ ।”

अफ़सोस कि इस तरह दूसरोंको हँसा-हँसा कर खुश रखनेवाला इन्सान ७५ सालकी उम्रमें दस-बारह दिन बुखार और पेचिशका रोग भेलकर ६ सितम्बर सन् १६२१ को इस दुनियासे हमेशाके लिए चला गया ।

‘अकबर’ और उनकी शायरी

‘अकबर’ का वातावरण—

दुनियामें ऐसे व्यक्तित्व बहुत कम होते हैं जो पैदा होकर फिर नहीं मरते, अपने कामोंके कारण सदैव याद आते रहते हैं, मानो मरकर भी ज़िन्दा रहते हैं। जब तक उनका काम ज़िन्दा रहता है वे भी ज़िन्दा रहते हैं। लेकिन ऐसे व्यक्तित्व तो और भी कम होते हैं जो अपने नेक कामोंके कारण याद किये जायें। रावण, चंगेज, हिलाकू, हिटलर मशहूर होनेके बावजूद बदनाम भी हैं। वे ज़िन्दा हैं, सिर्फ़ बुरे कहे जानेके लिए। मगर कालिदास, गालिब, शेक्सपियर, और टैगोर ज़िन्दा हैं और हमेशा ज़िन्दा रहेंगे, इसलिए कि ये लोग नेक काम और कलाके उस स्तर पर पहुँच गये हैं जहाँ सदियोंके बाद आदमी पहुँचता है। साहित्यकारोंमें वही कलाकार ज़िन्दा रहते हैं जो अपनी कलाको एक नये ढंगसे पेश करके अपने विचारोंकी अभिव्यक्तिसे साहित्यमें एक नई सृष्टि कर देते हैं। अपनी कल्पना और शैलीसे दुनियाको मोह लेते हैं। जाति और देशकी सेवा करते हैं। यह और बात है कि लोग कभी कभी इनके विचारोंका विरोध करें, लेकिन फिर भी इनकी कलाकी ऊँचाईसे इन्कार नहीं कर सकते। इनकी सूझ-बूझसे अधिक सहमत न हों लेकिन पूरे तौरसे उनके कामोंको मानना ही पड़ता है। ऐसे ही कलाकारोंमें अकबर इलाहाबादी भी हैं। जिन्होंने सिर्फ़ उर्दूका ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तानभरको एक नया अन्दाज़, नया रास्ता सोचने और बात करनेका बता दिया।

अकबरकी इस कामयाबी और कलाको समझने और परखनेके लिए उनकी ज़िन्दगी, उनके वातावरण और उनके ज़मानेकी रफ़्तार पर एक सरसरी नज़र डाल लेना ज़रूरी है क्योंकि जबतक अकबरके बौद्धिक विकास

और उनके जीवनका अन्दाज़ा न होगा उनकी विचार-धाराको समझना आसान न होगा। कवि उसी समय अपनी रचनाको प्रभावशाली बना सकता है जब वह अत्यधिक संवेदनाशील होता है क्योंकि वगैर भरपूर संवेदनाके न रचनामें जान आ सकती है और न कविमें व्यक्तित्व और विचारका पता चल सकता है। और जब ये बातें न मालूम हो सकें तो फिर समझिये कि कवि उल्लेखके योग्य ही नहीं। हज़ारों लिखनेवालोंकी तरह वह भी कागज़ लीपता और क़लम घिसता हुआ दुनियासे चला गया।

‘अकबर’का जन्म सन् १५४६ में हुआ। इसके दस-ग्यारह साल बाद वह विद्रोह भी हुआ जिसे विदेशी लोग ग़दर कहते हैं और उन्हींकी तरह कुछ और नासमझ लोग भी इस आज़ादीकी पहली जंगको ग़दर समझते हैं। अकबरने जब आँख खोलकर देखा तो हिन्दुस्तान बड़ी तेज़ीसे बदल रहा था। एक तरफ़ तो वे लोग थे जो कट्टर रूढ़िवादी थे। धार्मिक शिक्षा और पुराने रीति रिवाज पर अड़े थे। वे समझते थे कि ज़मानेकी सबसे अच्छी दवा यही है कि पुराने तरीक़ों पर चला जाय। जितना धर्मने अवतक सिखाया है, उससे आगे न बढ़ा जाय। इस चीज़की क़द्र और क़ीमत धर्मवादी लोगोंकी आँखोंसे परखी जाय। इसी देशमें कुछ ऐसे भी लोग थे जिनकी संख्या अधिक न थी, जो ज़मानेके साथ बदलना चाहते थे और ज़रूरतके लिहाज़से हर उचित परिवर्तनको अच्छा समझते थे। संख्या कम होते हुए भी इस तरहके लोगोंमें अपेक्षाकृत शिक्षाका अधिक प्रसार था। वह युग और धर्मको अपनी बुद्धिसे देखते और समझते थे। अकबर जिस घरमें पैदा हुए थे वह पुरातनवादी था। अरबी-फ़ारसीकी शिक्षा, पुराने रिवाज और रहन-सहनका समर्थक था। यानी वह उस विचार धाराका था जिसका ज़िक्र हमने पहली किस्मके लोगोंमें किया है। खुद अकबरके पिता बड़े पुराने विचारोंके थे। धार्मिक दृष्टिसे वे मौलवी थे। अकबरकी शिक्षा-दीक्षा इसी वातावरणमें हुई। धार्मिक परम्पराओंका कड़ाईसे पालन करना, पूर्वको अध्यात्मवादका स्रोत मानना और यह समझना कि जीवन-

का अन्तिम लक्ष्य केवल अध्यात्मवादसे ही प्राप्त हो सकता है। ‘अकबर’ के प्रारम्भिक जीवनसे ही हिन्दुस्तानकी हालत बहुत बुरी दिखाई पड़ी। मुसलमानोंकी हालत और ज्यादा खराब थी। आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिसे मुसलमान सबसे अधिक अव्यवस्थित दिखाई देते थे। सँभलनेकी कोई सूरत नज़र न आती थी। ले-देके धर्मका सहारा लोगोंको नज़र आ रहा था। भय और आदरकी मिली-जुली भावनाएँ काम कर रही थीं। हर तबदीलीमें लोगोंको धर्मके लिए संकट दिखाई देता था। ज्यादातर लोग तबदीलीके लिए तैयार नहीं थे और न इसको अच्छी नज़रोंसे देखते ही थे। इन तमाम बातोंसे ‘अकबर’ जाने अनजाने प्रभावित हो रहे थे।

अभी ‘अकबर’ दस-ग्यारह ही सालके थे कि हिन्दुस्तानमें एक ज़बरदस्त क्रान्ति आगई। अबतक विदेशी हुकूमतने धीरे-धीरे हिन्दुस्तानकी ज़मीन पर अपने पाँव जमाये थे और वे तमाम खराबियाँ एक-एक करके आ रही थीं जो गुलाम मुल्कोंमें आया करती ह। सन् १८५६ से पहले हिन्दुस्तानका बहुत बड़ा हिस्सा अंग्रेज़ोंके कब्ज़ेमें चला गया था। उद्योग-धन्धे हिन्दुस्तानसे इंग्लैंड जा चुके थे। रुपया और वे तमाम राष्ट्रीय तथा क्रीमती चीज़ें जो कोहनूरकी तरह अंग्रेज़ोंके मुल्कको सजा सकती थीं, सब चली जा चुकी थीं। बड़े-बड़े जागीरदार, राजे-महाराजे, व्यापारी कंगाल हो चुके थे, मगर अंग्रेज़का पेट न भरता था। सन् १८५६ में अंग्रेज़ोंने अवधका इलाक़ा भी हड़प लिया और वहाँके आखिरी बादशाहको नज़रबन्द करके मटियाबुर्ज भेज दिया। सन् १८५७ में हिन्दुस्तानियोंने अंग्रेज़ोंको निकालनेकी आखिरी कोशिश की। जान-मालकी वाज़ी लगा दी। जनता और सेना सबने मिलकर विदेशियोंको भगाना शुरू किया। बहुत घमासान मचा। कई महीने तक हिन्दुस्तान महाभारतका मैदान बना रहा। हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ोंसे तादादमें भी ज्यादा थे और बहादुरीमें भी कम न थे। मगर चालाकी और मक्कारीमें बहुत पीछे थे। नतीजा यह हुआ कि आखिरीमें हिन्दुस्तानी पराजित हुए और जैसा अत्याचारी शासक किया करता

है अंग्रेजने भी किया । कल्ल, लूट, फांसी, बेइज्जती, गरज कि हर तरहकी तकलीफ हिन्दुस्तानियोंके लिए लिख दी गई । अंग्रेजी हुकूमत इस विजयके बाद हमेशासे ज्यादा मजबूत हो गई । हिन्दुस्तानी निराश और कमजोर हो गये । यहाँ तक कि ज्यादातर लोग अंग्रेजोंकी ही आँखसे देखने लगे । उन्हीके दिमागसे सोचने लगे ।

यह बौद्धिक दीवालियापन हर मुसीबतसे बड़ी मुसीबत थी । हिन्दुस्तानियोंने समझ लिया कि अब वगैर जमानेके साथ बदले काम नहीं चल सकता । रहन-सहन, सूझ-बूझ हर एक बातमें अंग्रेजोंकी नक़ल होने लगी । इंग्लैंड और अंग्रेजकी हर बुरी से बुरी बात या चीज़ अच्छी समझी जाती और हिन्दुस्तानकी हर खूबीमें खराबी नज़र आती । हिन्दुस्तानी अंग्रेजोंसे इतना दब गये थे कि कोई ऐसी मंस्था न थी जो सारे हिन्दुस्तानको एक राष्ट्रीय मंगठनमें बाँध सकती । कांग्रेस स्थापित हुई लेकिन काफ़ी देरमें । लोगोंने धर्मके आधार पर अपने अपने समुदाय अलग अलग कर लिये और धर्मको आगे रखकर मुधारकी योजनाएँ मोचीं । अंग्रेज़ बड़ा बाजीगर था । वह आपसमें फूट डालनेकी कोशिश करता रहा । खुशामद करनेवालोंको इनाम देता और स्वाभिमानी आदमियोंका अपमान करता रहा । मगर बावजूद इन बातोंके अपनी अपनी डफ़ली पर अपना-अपना राग हर एक अलापता रहा । इस हड़ब्रोंगमें बहुतसे आन्दोलन सारे देशमें फैले । मगर सबके सब सामाजिक या मुधारवादी थे और धार्मिक दृष्टि-कोण इन सबसे आगे था ।

इसी तरह मुसलमानोंमें एक ऐसा समुदाय भी था जो अंग्रेजी पढ़नेके खिलाफ़ था । अंग्रेजी पढ़नेवालोंको नफ़रतकी निगाहसे देखता था और दूसरी ओर एक ऐसा वर्ग था जो अंग्रेजी पढ़ना, अंग्रेजी तौर तरीक़ा अपनाना अपनी तरक्कीके लिए ज़रूरी समझता था । इस समुदायके नेता सर सैयद अहमद खां थे और विरोध करनेवालोंमें मौलवियोंका पूरा जत्था था । इस मोर्चेमें ‘अकबर’ एक ओर मौलवियोंके साथ और दूसरी

और सर सैयद और अलीगढ़ आन्दोलनके खिलाफ़ थे । 'अकबर' पूर्व और धर्मके इतने प्रेमी थे कि इसमें कोई परिवर्तन सहन नहीं कर सकते थे । यद्यपि युगकी मान्यताएँ बदल रही थीं, सामन्ती शासन बदलकर पूँजीवादी व्यवस्था आ रही थी, लोकतंत्रका जन्म हो रहा था, इस तोड़-फोड़में ज़िन्दगी बदल रही थी, पर 'अकबर' रूढ़िवादी विचारधाराके पुजारी थे । अपनी जगहसे हटना नहीं चाहते थे । वे परिवर्तनोंसे चिढ़ते थे । नये तौर-तरीकोंको बढ़ते देखकर उनका दिल दुखता था । वे यह समझते थे कि यूरोपके रास्ते पर चलनेका हक़ हिन्दुस्तानको नहीं है, उनको अपने बाप दादोंके ढंग पर चलना चाहिए । 'अकबर'का दृष्टिकोण सही या ग़लत था, इसका अन्दाज़ा बदले हुए ज़मानेमें खुद-ब-खुद हो जाता है । मगर यह ज़रूर है कि 'अकबर' महज़ फ़ैशनकी बुनियाद पर किसी चीज़की नक़ल बुरी समझते थे । सन् १८५७ के पहले ही से हिन्दुस्तानकी दुनिया बदल रही थी । मगर उसके बाद तो परिवर्तनमें बिजलीकी रफ़्तार आ गई थी । कुछ लोग ऐसे ज़रूर थे जो अपने विवेक और दूरदर्शिताकी बुनियाद पर नये युगमें परिवर्तन स्वीकार कर रहे थे । मगर ज्यादातर लोग ऐसे ही थे जो इन परिवर्तनोंको तत्कालीन शासक या अंग्रेज़की लाई हुई चीज़ समझकर आँखसे लगाते और दिलमें जगह देते । 'अकबर' ज्यादातर ऐसे ही वर्गके खिलाफ़ थे । ऐसे ही लोगोंके विचारों और ढंग पर अकबरका जी जलता था और तिलमिलाकर कुछ कह देते । दिलकी चोट उभर कर कविताका रूप धारण कर लेती ।

'अकबर'की इस प्रवृत्तिने स्वाभाविक रूप ग्रहण कर लिया था । वे हरएक जन आन्दोलनको देखते सुनते रहते थे और उसके बारेमें अपने विचार कविताके रूपमें पेश कर देते थे । सन् १८५७ के बाद जो हंगामे या आन्दोलन राजनीतिक तथा सामाजिक हिन्दुस्तानमें जब कभी आये 'अकबर' उनको अपनी कविताका विषय बनाते रहे । उनकी रचनाएँ देखिए तो हिन्दू-मुसलमान एकता या विरोध पर भी उन्होंने कुछ न कुछ लिखा । शुद्ध आन्दोलनपर भी उन्होंने अपने विचार प्रकट किये । चुनावके हंगामेसे

लेकर असहयोग आन्दोलन आदि सबपर उन्होंने कुछ न कुछ लिखा है। लेकिन अधिकतर उन्होंने सामाजिक बुराइयोंके संबंधमें ज़बान खोली। चाहे यह समझिये कि सरकारी कर्मचारी होनेके कारण बहुत कुछ न कह सकते थे, या यह समझिये कि उनमें राजनीतिक चेतनाकी कमी थी जिससे वह राजनीतिक समस्याओं पर स्पष्ट न लिख सकते थे।

अकबरकी कविता—

यह भी एक ऐतिहासिक संयोग है कि जिस सालकी घटनाको अंग्रेज़ ‘ग़दर’ कहते थे, भाग्यवश उसी साल ‘अकबर’ने कविता करनी शुरू की। यानी ग्यारह सालकी उम्रसे ‘अकबर’ने कविता लिखना आरम्भ किया। पुराने लोग बच्चोंको कविता करनेसे मना करते थे, इसीलिए ‘अकबर’को भी रोका गया। लेकिन एक दिन ‘अकबर’के चचा सैयद वारिसअलीने ‘अकबर’से पूछा—‘सुना तुम कविता करते हो’। ‘अकबर’ चुप रहे। वारिसअलीने कहा—‘एक चरण देता हूँ तुम दूसरा चरण बनाओ’। ‘अकबर’ने चरण सुनते ही दूसरा चरण इतना अच्छा कहा कि उनके चचा खुश हो गये और इजाज़त दी कि तुम कविता किया करो। इस तरह घर-वाले भी जान गये कि इस होनहार लड़केको कवितासे दिलचस्पी है और ‘अकबर’को भी अपनी काव्य-उमंगको छिपाने की चिन्ता न रही।

‘अकबर’के बचपनमें, बल्कि उसके पहले और उसके काफी बाद तक उर्दू कवितामें ग़ज़लका बोल वाला था। गाने-बजानेकी गोष्ठियोंमें, कवि सम्मेलनोंमें, साहित्यिक समारोहोंमें, गरज़ कि हर जगह ग़ज़लकी ही चर्चा थी। उस वक्त आम तौरसे सौन्दर्य और प्रेम (हुस्न व इश्क़) और तफ़रीहके बँधे-टंके ख़याल ग़ज़लोंमें जगह पा रहे थे। ‘दाग़’ और ‘अमीर’ वग़ैरहका कविताकी दुनियामें सिक्का चल रहा था। शोख़ी और छेड़-छाड़की बातें ग़ज़लकी जान थीं। वह बुलन्दी जो मीर और ग़ालिब वग़ैरहने पैदा की कम हो रही थी। इस आम रिवाजसे ‘हाली’ और ‘शेफ़ता’ वग़ैरह कुछ ही

ऐसे कवि थे जो अलग रास्ता बना रहे थे । कविताको फिर सच्चाई और बुलन्दीकी तरफ उभार रहे थे । गोया ये लोग अंधेरी रातमें जुगनूका काम कर रहे थे । इसी वातावरणमें ‘अकबर’ने कविता शुरू की । सामान्य कवियोंकी तरह उनकी कविता भी ग़ज़लसे शुरू हुई । लेकिन अभिव्यक्तिकी कलाकी खूबीसे पारखियोंको ‘अकबर’में कुछ ऐसे जौहर नज़र आये जिनसे उनका भविष्य शानदार दिखाई दिया ।

उस ज़मानेमें उस्तादी और शागिर्दीका कवितामें बड़ा रिवाज था । पुराने कवियोंको शागिर्द बनानेका मरज़ था और नये कवियोंको शागिर्द बननेका ख़व्त था । इसी रिवाजके लिहाज़से ‘अकबर’ने अपनी कविताका उस्ताद वहीदको बनाया । इनका नाम गुलाम हुसेन था । ये क़स्बा कड़ा ज़िला फ़तेहपुरके रहनेवाले थे और मोहम्मद वशीरके शागिर्द थे जो लखनऊ-के मशहूर कवि ख़्वाजा आतशके शागिर्द थे । वहीदकी कविताका नमूना देना यहाँ बेकार है, अलबत्ता उनकी ज़िन्दगीकी दर्दनाक घटना उल्लेखनीय है । सन् १८६२ में उनके घरमें आग लगी । वहीदके आठ काव्य-संग्रह (दीवान) एक कोठरीमें बन्द थे । वही कुछ नोट भी रखे थे । वहीद ‘हाय मेरे दीवान !’ कहकर अन्दर घुस गये । आग अपना काम कर रही थी । वहीद अपने काव्य-संग्रह लेकर कोठरीसे बाहर निकले तो सामनेका सायवान जलकर गिर पड़ा । बाहर निकलनेका रास्ता बन्द हो गया । किसी तरह लपटों और धुँएँसे लड़ते-लड़ते बाहर निकल आये । मगर दम घुट रहा था । एक हाथमें सारा काव्य-संग्रह और दूसरेमें नोट थे । वे खुद तो न बच सके मगर ये दोनों चीज़ें जलते-जलते भी कुछ बच गई । उनका कोई काव्य-संग्रह छप नहीं सका, हालाँकि उनके नातियोंके पास वे अब भी मौजूद हैं ।

‘अकबर’ १७ सालकी उम्रसे कवि-सम्मेलनोंमें जाने लगे । शोहरत धीरे-धीरे बढ़ने लगी इसलिये कि सामान्य कवियों के मुकाबले उनकी ग़ज़लोंमें एक जान थी, एक तेवर था और गम्भीरताके साथ साथ व्यंग

था। लेकिन उनकी शोहरत हिन्दुस्तानमें अच्छे ग़ज़ल कहनेवालोंके लिहाज़ से न हो सकी। उनकी गणना उर्दूके उन ग़ज़ल कहनेवालोंमें न हो सकी जो उनके ज़मानेमें चोटीके कवि समझे जाते थे। ‘अकबर’की शोहरतकी बुनियाद उस कविता पर क़ायम हुई जिसको दुनिया हास्यरसकी कविता कहती है। वह एक ऐसी चीज़ थी जो कमसे कम उर्दू वालोंके लिए नयी थी और बड़े कामकी थी। बड़ी सजधजके साथ मौक़ेसे सामने आई। उर्दू शायरीमें यों तो हँसने-हँसानेके सिलसिलेमें बहुत पहलेसे विभिन्न रूपोंमें इस तरहकी कविता चली आती थी। मगर उसकी यह सूरत न थी जो ‘अकबर’ने पेश की। इस तरहकी पुरानी कविता अधिकतर हँसने-हँसानेके लिए थी और कोई विशेष उद्देश्य या बड़ा काम इसके पीछे न था। ‘अकबर’की कविताका एक विशेष उद्देश्य था और उसकी बुनियाद एक ज़रूरत पर थी। इसमें दिलोंकी झनकार थी और ज़मानेकी पुकार।

‘अकबर’की हास्यरसकी कविता इस कारण भी आकर्षक मालूम हुई कि ग़ज़ल सुनते-सुनते लोग ऊब गये थे। इस तरहकी कवितामें एक नयापन था, एक हक्कोक्त थी, जिसने काव्यरुचिको ताज़गी दी। ‘अकबर’का एक विशेष कवि होना इससे भी ज़ाहिर होता है कि उनके सामने कोई नमूना न था जिसका वह अनुसरण करते। ऐसी हालतमें नया रास्ता पैदा करना और उस पर इस कामयाबीसे चलना कि ज़माना क्रोध करने लगे बड़ा मुश्किल काम था। जब हम सोचते हैं कि ‘अकबर’के ज़मानेमें कवितामें ग़ज़ल और परंपरागत कलाका बोलबाला था, दुनिया उसी तरफ़ झुकी जाती थी, एक बहाव था जिसमें साहित्यसे दिलचस्पी लेने वाले छोटे-बड़े सब बहे चले जाते थे तो ताज़्जुब होता है कि ‘अकबर’ने कहाँसे अपनी कविताकी धारा अलग की ओर क्योंकिर अपनी कविताको सफल बनाया। सफलताकी यह चरम सीमा थी कि बावजूद इतनी कद्रके कि हर अख़बार, हर पत्रिकामें, हर ज़बानमें ‘अकबर’की सी कविता होती थी मगर फिर भी कोई दूसरा अकबर पैदा न हो सका। यह नहीं कि किसीने कोशिश ही नहीं की।

औरोंका जिक्र क्या इक़बालने भी इस मैदानमें धोड़ा दौड़ानेकी मेहनत की, लेकिन मेहनत सफल न हुई। इक़बालको कोई इस तरहकी कवित्तके लिहाजसे याद भी नहीं करता। यह ‘अकबरकी’ कामयाबीका बड़ा सबूत है। आमतौरसे किसी आन्दोलन या कलाको जन्म देनेवाले मुश्किलसे ही अपने ज़मानेमें इतनी ऊँचाई पर पहुँचते हैं कि वे अपने काम पर संतोषकी साँस लेकर मरे हों। लेकिन यहाँ मामला उल्टा है। ‘अकबर’ अपनी कविताके केवल जन्मदाता ही नहीं, बल्कि इस किस्मकी कविताके आखिरी और सफल कलाकार भी हैं। ‘अकबर’ खुद भी अपनी कविताके नयेपनको महसूस करके खुश होते। एक जगह कहते हैं:—

क्योंकर न शेर-‘अकबर’ आये पसन्द सबको,
यह रंग ही नया है, कूचा ही दूसरा है।

उर्दूमें हँसने-हँसानेवाली कविताकी कमी न थी। मगर वह केवल दिल बहलानेकी चीज़ थी। ‘सौदा’ ‘इशा,’ ‘जुरअत,’ ऐसी कविताके लिहाजसे अच्छे कवि समझे जाते हैं। उनकी हास्यरसकी कवितामें एक मज़ा है, एक अंदा है, मगर गौर कीजिये तो साफ़ मालूम होता है कि उन लोगोंकी ऐसी कविताका उद्देश्य सिवाय तफ़रीहके और कुछ न था। ज्यादातर निजी मामलोंको सामने रखकर यह कविता लिखी गई है। कभी-कभी सुधारका उद्देश्य भी मिल जाता है। मगर वह भी साधारण रूपसे धर्मका पक्ष लिये हुए है। यानी उन लोगोंका मज़ाक़ उड़ाया गया है जिन्होंने कोई धार्मिक ग़लती की है। नहीं तो साधारण रीतिसे व्यक्तिगत ख़राबियोंको सामने रखकर किसीका मज़ाक़ उड़ाया गया है। उन कवियोंकी इस कवितामें भी कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं मिलता। अगर कहीं भूले-भटके मिलता है तो उसको भी यह समझना चाहिए कि योंही ऐसी बात ज़बानसे निकल गयी। इसकी वजह यह न थी कि हमारे उन कवियोंमें सूझ बूझकी कमी थी बल्कि जिस दौरमें वे लोग थे उसमें राजनीतिक चेतना

इतनी न उभरी थी जितनी ‘अकबर’ के ज़माने में। उस वक़्त राजनीतिक मामलों में दिलचस्पी लेना देशका कोई आन्दोलन न था। ‘अकबर’ के ज़माने में दुनिया बदल चुकी थी। जनता राजनीतिक मामलों में दिलचस्पी लेने लगी थी। एतराज़ करने और जवाब देनेका माद्दा लोगों में पैदा हो गया था। इसलिए ‘अकबर’ की रुचि स्वस्थ और ग्राह्य थी। यह ‘अकबर’ की दूरदर्शिता थी कि उन्होंने जनता की रुचिको भाप लिया और कवितासे वह काम लिया जो कवि और देश दोनों के लिए गर्वकी वस्तु बन गया। ‘अकबर’ ने ऐसा क्यों किया ? उनके सामने क्या चीज़ थी ? वह कहाँ तक अपने उद्देश्य में सफल हुए ? यह सब बातें सोचने और समझने की हैं। सन् १८५७ के बादसे हिन्दुस्तान की सभी विशेषताएँ और सभी मूल्यवान वस्तुएँ या तो बुरी बताई जाती थीं या यूरोप भेजी जा रही थीं। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में आँख के अन्धे, अक्ल के दिवालिये यूरोप की हर बात को अच्छी और अपनी हर अच्छाई को समझमुच बुराई समझने लगे थे। यूरोपवालों की तरह रहन-सहन की कोशिश करने लगे थे। उन्हीं की तरह सोचने की स्वाहिश हो गई थी। बाज़ हालतों में तो यह तरीका अच्छा हो सकता था और वास्तव में था भी। मगर ख़राबी यह थी कि यह दृष्टिकोण सोचे-समझे तरीके पर बहुत कम काम में लाया जा रहा था। अधिकतर नज़्काली अथवा फ़ैशन के कारण लोग इस परिवर्तन में बहे जा रहे थे। धर्म के प्रति उदासीनता, पुराने शिष्टाचार की उपेक्षा, अपने को तुच्छ समझना और ‘साहब’ को सबसे बड़ा आदमी जानना महामारी की भाँति फैल गया था आम तौर से लोग इसी ख़ब्त के शिकार थे।

‘अकबर’ पुराने ज़माने के लोगों की गोद में परवरिश पा चुके थे। बुजुर्गों की आँखें देख चुके थे। हिन्दुस्तान की नैतिक मान्यताओं से अच्छी तरह परिचित थे। वे इस तबदीली को पूरे तौर से अच्छा नहीं समझते थे। वे जानते थे कि यह परिवर्तन बौद्धिक दासता है; इसमें सूझ-बूझ बहुत कम है कुछ ही लोग इस लम्बे-चौड़े देश में सोच-समझकर अपने को बदल रहे हैं

और देशकी विजयसे भी अधिक अंग्रेजकी यह विजय हिन्दुस्तानके लिए खतरनाक साबित होगी। इसीलिए उन्होंने अपनी जिन्दगीका यह उद्देश्य बना लिया कि हिन्दुस्तानको इस अन्धानुसरणसे बचाया जाय, कविताको मनोरंजनका साधन बनानेकी अपेक्षा देश सेवामें लगाया जाय। कुछ और भी लोग थे जो ‘अकबर’की तरह सोचते-समझते थे। भाषणों और रचनाओंके द्वारा अपना विचार लोगो तक पहुँचाना चाहते थे। मगर ‘अकबर’ने बिल्कुल अलग ओर नया रास्ता अपनाया। वे जानते थे कि भाषणमें लोगोंको कड़वाहट मालूम होती है, भाषण देनेवाला आमतौरसे किसी और दुनियाका निवासी समझा जाता है; उसको लोग मौलवी या पंडित समझने लगते हैं और दिलचस्पी लेनेवालोंकी तादाद कम हो जाती है। लेकिन इन्हीं लोगोंमें घुलमिलकर या हंस-हँसाकर बात की जाय या नमीहत भी की जाय तो न वह कटु मालूम होगी और न अपरिचित ही। इसलिए उन्होंने भाषणके रूखेपन और नसीहतकी कड़वाहटसे अलग होकर मजाक और दिलचस्प तरीकोंको अपनाया। अपनी कविताके लिए जो रूप उन्होंने चुना वह नया—बिल्कुल नया था। वह प्रभावशाली भी था और ग्राह्य भी।

‘अकबर’ हिन्दुस्तानको पुराने ढंग और परम्परा पर चलते हुए देखना चाहते थे। इसमें कुछ उनकी अपनी भावनाएँ भी थी। वह अधिकतर पुरानी चीजों और बातोंको ही अच्छा समझते थे। नयी चीजोंसे घबराते थे। इसको आप अच्छा समझें या बुरा, यह खूबी या खराबी उनमें जरूर थी। वे चीजोंकी अच्छाई या बुराईको अपनी तौर पर समझ चुके थे। उनकी अपनी एक राय थी और वह उस पर अटल थी। चाहे सरकार हो चाहे जनता, कोई जाहिल हो, या मौलवी या कोई नेता, सबसे टक्कर लेनेको तैयार थे। हम उनकी रायसे हरजगह सहमत नहीं, इसलिए कि वे किसी तर्क या किसी शर्त पर पुरानी बातोंको छोड़नेके लिए तैयार न थे। हालाँकि ज़मानेके लिहाज़से और देशकी ज़रूरतके ख्यालसे भी कुछ बातें

बदलनेके काविल हो जाती है और आर्थिक दृष्टिकोणसे मान्यताएँ भी बदलती रहती है। मगर ऐसा जान पड़ता है कि ‘अकबर’ पुराने युग और उसकी परम्पराओंको धार्मिक-भावनासे ग्रहण करते थे। नई मान्यताओंका स्वागत करते हुए उनको बड़ा दुख होता था। उदाहरण स्वरूप पर्दा प्रथा हिन्दुस्तानमें काफ़ी पुरानी चीज़ हो गई। उसके फ़ायदोसे किसीको इन्कार न होगा लेकिन उसमें बहुत ख़राबियाँ भी थी। जिस ढंगसे पर्दा हिन्दुस्तानमें रिवाजके सायेमें बढ़ रहा था, उसमें ख़राबियाँ ज़्यादा थी और ख़ूबियाँ कम। मगर ‘अकबर’ इन ख़राबियोंको समझनेके लिए तैयार न थे, उनमें किसी तबदीलीकी ज़रूरत न समझते थे। एक जगह कहते हैं:—

✓बे पर्दा आयीं कल जो नज़र चन्द बीबियाँ

‘अकबर’ ज़मीमें ग़ैरते-क़ौमीसे गड़ गया।

पूछा जो उनसे आपका पर्दा वह क्या हुआ,

कहने लगीं कि अक़ल पै मदोंके पड़ गया।

इसी तरह वे धार्मिक बातोंको भी मानते थे। उनको अमलकी कसौटीपर न कसना अच्छा ही नहीं, बल्कि ज़रूरी भी समझते थे। उनके खिलाफ़ कुछ सुननेके लिए वे तैयार न थे। उन्होंने खुद एक जगह इसे स्वीकार किया। कहते हैं:—

✓मजहबी बहस मैंने की ही नहीं,

फ़ालतू अक़ल मुझमें थी ही नहीं।

इस ‘फ़ालतू अक़ल’ के टुकड़ेसे साफ़ मालूम होता है कि वह धर्मके खिलाफ़ कुछ सुनना नहीं चाहते थे। बल्कि इस बहसको ‘फ़ालतू अक़ल’ समझकर घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। इस बहसको यहाँ यह कह कर हम छोड़ देना चाहते हैं कि :—

✓अगले बक्तोंके हैं ये लोग, इन्हें कुछ न कहो

‘अकबर’ ने जब होश सम्भाला, और उसके बाद एक ज़माने तक हिन्दुस्तानमें कुछ नई बातें इस तरहसे प्रचलित हो गई थीं कि उनको लोग बेतहाशा आस्थाकी भांति पकड़े चले जाते थे । उदाहरण स्वरूप ‘पायनियर’ अखबारकी हर बातको सही समझना और उसमें किसीकी चर्चा आ जानेको बड़ी कामयाबी सोचना, कोट-पतलूनका पहनना, कौंसिलकी मेम्बरीपर जान देना, खिताब हासिल करनेकी फ़िक्र, अंग्रेज़को बहादुर और किस्मतका धनी मानना, गरज़ कि इस किस्मकी बीसों सामाजिक बातें ऐसी थीं जो वातावरणमें गूँज रही थीं । इनके अलावा राजनीतिक बातें भी नये रूपमें उभर रही थीं । अंग्रेज़ हिन्दुस्तानियोंको लड़ाकर हुकूमत करना चाहता था । वह तरह-तरहसे जनताको अलग-अलग समुदायोंमें बाँटकर अपना काम निकालना चाहता था । कभी हिन्दू मुसलमानका सवाल और कभी हिन्दी-उर्दूका झगड़ा लोगोंके सामने खड़ा कर देता था । हिन्दुस्तानी अंग्रेज़का जादू मानते चले जाते थे । आपसमें अलग-अलग खाने बनाये जाते थे । अपनी-अपनी डफ़ली अपना-अपना रागके नियम पर काम कर रहे थे । प्रान्तीयताकी भावना भी बढ़ती जाती थी । अपनी ज़बानको छोड़कर सारा जोर विदेशी ज़बानपर इसलिए दिया जा रहा था कि ‘साहब’ से करीब हो जानेका मौक़ा मिले । किसी अच्छी सी नौकरीका सामान हो जाय । ‘अकबर’ इन तमाम बातोंको देख रहे थे । जब ज़ब्त न हो सकता था तो कुछ न कुछ कह देते थे चाहे किसीको बुरा लगे या भला । उनकी इस निर्भयता और स्पष्टवादितासे उनको कोई ताक़त ज़बान खोलनेसे रोक नहीं सकी । हुकूमत, दोस्त, लीडर, मौलवी, पंडित वह किसीको भी माफ़ नहीं कर सकते थे । यहाँ तक कि दुख और क्रोधमें अपने लड़केको भी उल्टा सीधा सब कुछ कह जाते थे । उदाहरणके लिए यह घटना याद कीजिये जब उनके बड़े लड़के इशरत हुसेन इंग्लैंड शिक्षा प्राप्त करनेके लिए गये और वहाँकी रंग-रलियोंमें ज़्यादा उलझ गये तो अकबरने झुंझलाकर कहा:—

✓ इशरती घरकी मुहब्बतका मज्जा भूल गये,
खाके लन्दन की हवा अहदे-वफ़ा भूल गये
पहुँचे होटल में तो फिर ईद की परवा न रही,
‘केक’ को चखके सिवईयोंका मज्जा भूल गये ।
मोमकी पुतलियों पर पिघली तबियत ऐसी,
चमनेहिन्दकी परियोंकी अदा भूल गये ।

सर सैयद उस वक़्त मुसलमानोंके सुधारकी चिन्तामें थे । उनकी ख्याति सारे हिन्दुस्तानमें फैल गई थी । मगर ‘अकबर’को सर सैयदके दृष्टिकोणसे मतभेद था ही । उन्होंने पूरा विरोध सर सैयदका किया और जी भरके उनको कवितामें बुरा-भला कहा । कुछ उदाहरण देख लीजिए:—

कहे कोई शेखसे ये जाकर, कि देखिए आप बरमे सैयद,
ये रौनक और ये चहल पहल हो तो क्या बुरा है गुनाह करना ।

क्या जानिये सैयद थे हक़ आगाह कहाँ तक,
समझे न कि सीधी है मेरी राह कहाँ तक ।

कहनेका मतलब यह है कि अकबर पश्चिमकी बातोंको ज्यादातर बुरा समझते थे । मगर उनके पास कोई भौतिक दर्शन हिन्दुस्तानको उभारनेका न था । वे सिर्फ़ धर्मका सहारा लेकर सबकुछ दुरुस्त करना चाहते थे और धर्मके हर अंगको सही समझते थे, वास्तविक अर्थमें वह धर्म ही था न हो । धर्मके परदेमें जरूरतके लिहाजसे कुछ ऐसी रस्में आ जाती हैं जिनका छोड़ देना कभी-कभी जरूरी हो जाता है । मगर ‘अकबर’ इसको भी सहन नहीं कर सकते थे । इस कमजोरीने ‘अकबर’को यूरोपकी हर बातसे नफ़रत करनेवाला बना दिया था, या कमसे कम वे यह सोचते थे कि हिन्दुस्तानके लिए ये चीज़ें उचित नहीं । वे यूरोपकी शिक्षा और

विज्ञानको अच्छी नज़रसे न देखते थे। 'डारविन' के सिद्धान्तका हमेशा मज़ाक उड़ाते रहे। अंग्रेज़ी न पढ़नेपर बड़ा जोर देते रहे। इसी विरोधकी वजहसे वह सर मैयदसे नाराज़ थे क्योंकि सर मैयद अंग्रेज़ी पढ़ने पर जोर दे रहे थे।

'अकबर' के दिमागमें धर्म और धार्मिक बातें इस तरह जगह पा गई थी कि उनका निकलना मुश्किल था। उनका यह तो एहसान है कि उन्होंने हिन्दुस्तानको पश्चिमकी खोखली नक्कालीसे बचानेकी कोशिश की, मगर उनसे यह शिकायत भी है कि इस बहावमें उन्होंने यूरोपकी अच्छाइयोंको भी अच्छी नज़रसे न देखा। हालाँकि ज़माना उनकी खूबियोंकी वजहसे आगे बढ़ रहा था। और 'अकबर' इसे अनुभव भी करते थे। जैसे पर्देको कायम रखनेकी कोशिशमें 'अकबर' ने बहुत-कुछ ऊँच-नीच समझाया मगर जब ज़माने पर असर न हुआ तो उनको भी दबी ज़वानसे कहना पड़ा:—

बिठायी जायेंगी पर्दोंमें बीबियाँ कबतक,
बने रहोगे तुम इस मुल्कमें मियाँ कबतक।

मुना है हज़रते अकबर हैं हामिये-पर्दा,
मगर वो कबतक और उनकी रुबाइयाँ कबतक।

मगर वावजूद इस पराजयके वह अपनी बात पर अड़े थे। इसी तरह वह 'स्पेंसर' और 'मिल' से भी घबराते थे। इसलिए कि उनकी मानी हुई आस्थाओं पर एक चोट पड़ती थी। एक जगह कहते हैं:—

किताबे-दिल मुझे काफ़ी है अकबर दर्से-हिकमत को
मैं 'स्पेंसर' से मुस्तगनी हूँ मुझ से 'मिल' नहीं मिलता।

इन्हीं बातोंने उनके विचारोंमें अच्छा-खासा विरोधाभास पैदा कर दिया था। कही वे किसी बातका समर्थन करने लगते हैं और कभी आगे चलकर उसीका विरोध करने लगते हैं। अंग्रेज़ोंकी दुराई भी करते हैं

और तारीफ़ भी जी खोलकर करते हैं। उन्हींको भूठोंका बादशाह भी कहते हैं और उन्हींको दुआएँ भी देते हैं। हिन्दू मुसलमानोंको एक साथ रहने का उपदेश भी देते हैं और कभी-कभी मुसलमानोंको हिन्दुओंसे अलग रहने का भी संकेत कर देते हैं। सरज़ यह कि इस किस्म की और बातें हैं जिनमें अकबर एक राय पर कायम नहीं रहते। यह सब इसलिए कि उनके पास कोई राजनीतिक दृष्टिकोण धर्मसे अलग न था। मगर बावजूद इन खराबियोंके अकबरने जो कुछ भी समाज और शासनकी आलोचना की है उसका ज्यादा हिस्सा ऐसा है जिससे सभी सहमत हो सकते हैं।

सन् १८५७ के विद्रोहके बाद जो सख्ती जवानों पर सरकारकी तरफसे थी उसका आज अन्दाज़ा आसानीसे नहीं किया जा सकता। और फिर अकबर अंग्रेज़ी सरकारके नौकर भी थे। उनको और ज्यादा डरना चाहिए था। इस बातको भी ध्यानमें रख लीजिये कि हिन्दुस्तानकी राजनीतिक चेतना भी न जागी थी। कांग्रेस जो बादमें सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी हो गई, वह शुरू-शुरूमें सुधारात्मक योजनाएँ लेकर सामने आई थी। कोई विशेष राजनीतिक जागृति ही हिन्दुस्तानमें न थी। ऐसी दशामें अकबरसे उम्मीद करना कि हर मौके पर वह राजनीतिक कार्यों पर हमारी आजकी जिन्दगीके लिहाजसे और आजके नेताओंकी तरह सरकारके खिलाफ़ आवाज़ बुलन्द करते, उचित नहीं है। उनका अपना दृष्टिकोण था जिसकी बुनियाद धर्म और परम्पराओपर थी। इससे अलग होना अकबरके बसकी बात नहीं थी। और आखीरमें यह भी सोचना चाहिए कि अकबर कवि थे, राजनीतिक नेता न थे। इन कठिनाइयोंको सामने रखते हुए जब हम अकबरके जीवन-दर्शन पर विचार करते हैं तो अमहमत होते हुए भी उनकी कमजोरियोंको माफ़ करनेकी इच्छा रखते हैं और खूबियोंकी तारीफ़में निडर हो जानेका जी चाहता है।

अकबर की कला—

यह तो आरम्भमें हम बता चुके हैं कि अपने ज़मानेके रिवाजके मुताबिक़

अकबरने भी ग़ज़लसे कविता शुरू की। ग़ज़लमें भी उन्होंने स्थानीय ख्याति प्राप्त कर ली, मगर कोई विशेष प्रसिद्धि न मिल सकी। उस वक्तकी ग़ज़लोंमें आम तौरसे रंगीनी थी। एक ही दर्जेके शब्दोंके प्रयोग पर ज्यादा जोर दिया जाता था जैसे छन्दमें अगर 'शमा' का शब्द आ गया तो 'परवाना' जरूर लाया जाता है। 'रात' का शब्द आ गया तो 'दिन' का भी लिखना जरूरी है। इसी तरहसे एक शब्दके विपरीत दूसरा मुकाबलेका शब्द या अर्थ या इससे मिलता-जुलता शब्द लानेकी कवियोंको आमतौरसे ख्वाहिश रहती भी है। अकबर भी इस किस्मकी रियायत अपनी ग़ज़लोंमें बरतते थे। ज़िलाजुगतका भी काफ़ी रिवाज था। यह मज़ाक़ इतना बढ़ गया था कि बदमज़ाक़ी पैदा हो गई थी। विषय पर कम जोर दिया जाता था शब्दों पर ज्यादा। एक ही तरहके शब्द इकट्ठा कर दिये जाते थे गोया शब्दोंसे खेलनेका शौक पैदा हो गया था। अकबरके दिमाग़में भी यह बात अच्छी तरह बस गई थी। इस बातको अकबरने अपनी नई कवितामें बड़ी खूबीसे निभाया। ग़ज़लके लिए तो यह बात चाहे बुरी रही हो मगर हास्य-रसकी कवितामें यही बात लाभकर सिद्ध हुई। शब्दोंके उलट-फेरसे वह विचारोंको दिलचस्प और बातको प्रभावशाली बना देते हैं जैसे:—

'स्माल'^१ नहीं 'ग्रेट'^२ होना अच्छा, सर होना बुरा है पेट होना अच्छा।

उनके दस्ते नाज़नों से पायी 'टी'^३, अब कहाँ बाक़ी है हममें 'पायटी'।

उर्दू ग़ज़ल अपने जन्मसे ही इशारोंमें बातें करती आयी थी। वजह यह थी कि मुहब्बतकी दुनियामें साफ़-साफ़ बातें करना मुनासिब नहीं समझा जाता। और फिर ग़ज़लकी 'टेकनीक' भी ऐसी थी कि ज्यादा बात फैलाकर

^१छोटा ^२बड़ा ^३चाय ^४Piety

नहीं की जा सकती। बड़े से बड़े विषयको कम से कम शब्दोंमें बयान करना पड़ता है। दो चरणोंमें ग़ज़ल कहने वालेको वह सब कुछ समझना पड़ता है, जो आम तौरसे एक कविको लंबी कवितामें। इसके अलावा किसी दुश्मन या दोस्तका नाम ग़ज़लमें लाना उचित नहीं। माशूक (प्रेयसी) को वह ‘किसी’ ‘कोई’ ‘तुम’ या ‘आप’ कहकर याद करते हैं। पंडित, शेख, ज़ाहिद, वाइज़से ग़ज़ल कहने वालोंका मतलब उन लोगोंमें होता है जो धर्मका नाम लेकर सबको डराया-धमकाया करते हैं। अपनेको भगवानका थानेदार ख़्याल करते हैं। इस तरह अकबर भी अपनी रचनामें संकेत और इशारा पैदा करते हैं। वे ग़ज़ल कहते-सुनते इन सब भेदोंसे वाकिफ़ हो गये थे। इशारोंमें बातें करना और पर्दोंमें सब कुछ इस तरह कह जाना कि समझनेवाले समझ ले और पकड़में भी न आये, अकबरके लिए मामूली बात थी। उन्होंने ‘वह’ ‘किसी’ ‘कोई’ इत्यादिका प्रयोग करके अंग्रेज़ी सरकारको सब कुछ कह दिया है। प्रेयसी (माशूक) की तरह उसे अत्याचारी बताकर वे उसके अत्याचारको ज़ाहिर कर देते हैं। उसका भरम खुल जाता है। हिन्दी-उर्दू समझनेवाले मतलब समझ लेते थे, पतेकी बात इशारोंमें पाकर आनन्द उठा लेते थे और अंग्रेज़ी सरकार धर-पकड़ नहीं कर सकती थी। जैसे एक खास मौक़े पर हिंदुस्तानियों पर गोली चलायी गई तो अकबरने कहा:—

हम आह भी करते हैं, तो हो जाते हैं बबनाम,
वह क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता।

इसमें एक इशारा यह भी था कि प्रेस क़ानूनकी सख्ती और सेसरकी वजहसे रक्तपातका पूरा ज़िक्क भी अख़बारोंमें नहीं आ सकता था।

एक ज़माना था कि कौंसिलमें पहुँचकर हिन्दुस्तानी मेम्बर भी अंग्रेज़ोंके असरसे ऐसे क़ानून बनाया करते जो साधारणतः हिन्दुस्तानियोंके प्रतिकूल पड़ते थे। उस पर कहा था:—

कस रहे हैं अपनी मिनकारों^१ से फंदा जालका,
तायरो^२ पर सेह^३ है सैयादके एक्रबालका ।

इसी तरहके विचारको एक जगह और प्रकट किया है:—

उन्हींके मतलबकी कह रहा हूँ, जबान मेरी है बात उनकी,
उन्हींकी महफ़िल सँवारता हूँ, चिराग मेरा है रात उनकी ।

इन सब बातोंका मतलब यह है कि 'अकबर' ने गज़लकी उस परम्पराको, जो माशूक वगैरहके लिए थी, सरकारके खिलाफ़ इस्तेमाल किया और चूँकि घटनाएँ सामने थीं इशारोंको समझनेमें देर न लगी । आसानीसे जीकी बात जबान पर आ गई । दुनिया समझ गई और सरकार कुछ कर न सकी । प्रेसक़ानूनकी सख्ती इस कलाको अपने शिकंजेमें जकड़ न सकी ।

'अकबर' के ज़मानेमें प्रेस क़ानूनकी सख्ती इतनी ज़्यादा थी कि सरकार-के खिलाफ़ ज़बान खोलना आसान न था । 'अकबर' को छोड़कर देखिये तो इक्रबाल, चकबस्तने भी, जो ज़्यादातर राजनीतिक कवि थे, पदों ही पदोंमें ख्यालोंको जाहिर किया है । लेकिन 'अकबर' बावजूद सरकारी नौकर होनेके कभी कभी खुलकर भी बातें कर गये हैं । 'अकबर' की सफलता और कलाका रहस्य एक और भी है, जिसे हमी-खेलका सामान समझ कर लोग मुसकराते हुए आगे बढ़ गये हालाँकि ज़रूरत इसकी थी कि ज़रा दूर तक नज़र दौड़ाते और थमकर सोचते । आइये उस रहस्यको यहाँसे देखा जाय ।

साहित्यमें ऐसे चरित्र पैदा करना जो अमर हो जायें बड़ा मुश्किल काम है । और यह भी आसान काम नहीं कि अनेक चरित्र ऐसे दिये जायें जो बराबर दिल व दिमाग़ पर कुछ दिन तक छाये रहें और अपनी विशेषताओंके लिहाज़से आकर्षक बने रहें । लेकिन इसमें 'अकबर' को बड़ा कमाल हासिल

है। उन्होंने मामूली नामोंको लेकर अपनी कविताको प्रभावशाली ही नहीं बनाया बल्कि अपनी बुद्धिमानी और सूझ-बूझका बड़ा अच्छा प्रमाण दिया। बुद्ध, बफाती, जम्मन, कल्लू, मुन्नी, चुन्नी, नसीबन ऐसे नाम हैं जिनको सुनकर ऊँचे वर्गके तथा पढ़े लिखे लोग मुस्करा देते हैं। कवितामें हमेशा अच्छे-से-अच्छे शब्द प्रयोग करनेकी कविको चिन्ता रहती है। खासकर उस ज़मानेमें जब ‘अकबर’ कविता कर रहे थे उर्दूवालोंको इसका बड़ा लिहाज था। जिस काव्यक्षेत्रमें ‘अकबर’का बौद्धिक विकास हुआ या यानी ख्वाजा आतशकी लखनवी परम्परा, उसमें इस बातका ज़रूरतसे ज्यादा ख्याल रक्खा जाता था। मगर ‘अकबर’का कमाल था और उनकी बुद्धिका चमत्कार था कि इतने भेदे शब्दोंको उन्होंने इस तरहसे इस्तेमाल किया और इस खूबीके साथ, कि मालूम होता है कि उनकी कविताके लिए ही इतने दिनोंसे हिन्दुस्तान इन शब्दोंको ज़बान और दिमागके ख़राद पर बिगाड़-बना कर चला रहा था। सचमुच ऐसे शब्दोंका इस्तेमाल करना बड़ी हिम्मतका काम था। मगर ‘अकबर’ने बेधड़क इन शब्दोंको अपने मुख्य चरित्रोंमें जगह दी। और कलाकी यह खूबी थी कि उन्होंने उनको इस मौक़ेसे और इस तरह सजाया कि सारा विचार और कविता जगमगा उठी।

इन भेदे या बुरे नामोंमें बड़ी व्यापकता थी। ये सब ऐसे नाम थे जो आम तौरसे उस वर्गमें होते हैं जिसका सम्बन्ध साधारण जनतासे है और जनता भी वह जो ग़रीबी और मुफ़लिसीमें पड़ी रहती है, अनपढ़ होती है। कपड़े-लत्तेसे दुरुस्त नहीं होती। शकल व सूरतके लिहाजसे भी ज्यादातर बुरी होती है। गरज यह कि इन नामोंके आते ही उनके ख़ान्दान, सूरत-शकल, लियाक़त और सामाजिक स्तरका आदमी अन्दाज़ कर लेता है। लेकिन जब हिन्दुस्तानने करवट ली तो ज्यादा फ़िक्र इसीकी हुई कि ग़रीबी दूर की जाय। शिक्षा ज्यादा से ज्यादा दी जाय। ग़रीबोंको साथ लेकर आज़ादी हासिल की जाय। ज़मानेने ज़रूरी समझा कि हर साहित्य

जीवनकी अभिव्यक्ति है और यह वर्ग वह था कि जिस पर साहित्यकारोंने बहुत कम ध्यान दिया था। गोया साहित्यकारके कर्तव्यका पूरी तरहसे पालन नहीं हुआ था। जाहिर है कि बगैर जनताके जीवनको व्यक्त किये वर्तमानयुग कविताको अच्छी नज़रोंसे नहीं देख सकता था। ‘अकबर’ने जाने-अनजाने इस बातको महसूस कर लिया था, हिम्मत करके वे अपनी कवितामें इन शब्दों या नामोंको घसीट लाये। और ऐसे मौकेसे उन्होंने इनको कवितामें जगह दी कि इन्हीं भेदे नामोंने उनकी कविताको आसमान पर पहुँचा दिया।

इन नामोंको ‘अकबर’ने ज्यादातर व्यंगके लिए इस्तेमाल किया है। गोया यह बताया है कि हिन्दुस्तानमें ऐसे लोग ज्यादा हैं जो गरीब या जाहिल हैं हालाँकि वह अपने धर्मके पक्के और सच्चे हैं। मगर दुनियामें आदमीकी कद्र कब होती है खाम कर हिन्दुस्तानमें। यहाँ तो दौलतकी पूजा होती है। गरीबकी गरीबी, उसकी लियाक़त, उसका भरम सब कुछ खो देती है। इसी रहस्यको मैकडों साल पहले वली दक्खिनीने कितने प्रभावशाली ढंगसे कह दिया था:—

✓ मुफ़लिसी सब बहार खोती है, मर्दका एतबार खोती है।

अकबरने इस वर्गको उभारनेकी कोशिश की। अमीरोंके साथ-साथ कवितामें उसको जगह देकर समझदार दुनियाका ध्यान खींचा कि इन गरीबोंको देखो, समझो उनकी कद्र करो, इनमें मच्चाई और लियाक़तकी दबी हुई चिनगारियाँ हैं। उनको इसका ज़िन्दगी भर अफ़मोस रहा कि बावजूद इसके कि गरीब धर्मके लिए सब कुछ करता है या करनेको तैयार है मगर लोग बुलन्दी पर पहुँचकर उसको गिराते चले जाते हैं। ये दौलत-मन्द लोग अपने तौर पर मस्जिदमें भी अपना दर्जा ऊँचा रखना चाहते हैं। गरीबोंको पीछे जगह देते हैं हालाँकि मस्जिद ऐसी जगह नहीं जहाँ जात-पात, हैसियत, दौलतकी वजहसे कोई फ़र्क़ एक दूसरेसे किया जा सके।

मगर मौजूदा दौरमें यह सब कुछ हो गया है । एक जगह ‘अकबर’ कहते हैं:—

शाने नमाज ‘अकबर’ शाहाना हो चली है,
कह दो मियाँ बफ़ाती मस्जिद अलग बनायें ।

कितना अच्छा व्यंग है और कितनी बड़ी बात । एक दूसरी जगह कहते हैं:—

न नमाज है न रोज़ा, न जकात है न हज है,
तो फिर इसकी क्या ख़ुशी है कोई ‘जन्ट’ कोई ‘जज’ है ।

बुद्ध मियाँ भी हज़रते-गांधीके साथ है,
गो गर्द-राह है मगर आँधीके साथ है ।

‘अकबर’ की गज़लकी एक और विशेषता है । उर्दू गज़ल अमसे तुकान्त पर जोर दे रही थी । एक युग तो ऐसा भी आया था कि गज़ले ज्यादातर तुक ही के जोर पर चलती हुई दिखाई देती हैं हालाँकि तुक गज़लके अलावा हर तरहकी काव्य-कलाके लिए जरूरी था । मुश्किलसे ही कोई छन्द बग़ैर तुक या काफ़िएके होता था चाहे वह कोई काव्य हो । मगर गज़ल कहनेवालोंने एक ज़मानेमें काफ़िये पर जरूरतसे ज्यादा जोर दिया ।

इसी पर छन्दका दारोमदार हो गया । ऐसा अनुभव होने लगा कि बाज़ कवियोंके यहाँ काफ़िया ही सब कुछ है इसीसे स्याल पैदा होता है, इसीसे मुहावरे बनते हैं, इसीके लिहाज़से रदीफ़ (अनुप्रास) लाई जाती है । यह प्रणाली ‘अकबर’ के ज़मानेमें भी रही और बहुत काफ़ी रही । ‘अकबर’ बौद्धिक रूपसे अपने साथके गज़ल कहने वालोंमें सबसे ज्यादा बुद्धिमान थे । उन्होंने इस चलते हुए सिक्केका अपनी नई कवितामें प्रचलन कर दिया और इस खूबीसे कि अर्थ भी पैदा हों और व्यंग और हास्य भी इन्हींके सहारे कवितामें दौड़ने लगे । एक तरफ़ तो उन्होंने लोगोंकी हास्य भावनाको

संतुष्ट किया और दूसरी तरफ़ इससे कल्पनाको रंगीन बना दिया। यह कोई मामूली काम न था। सिर्फ़ एक अच्छा कलाकार ही इस सलीकेके साथ इसको निबाह सकता था। यद्यपि हम यह मानते हैं कि कहीं-कहीं ‘अकबर’ भी क्राफ़ियेका अच्छी तरह प्रयोग नहीं कर सके, ख़ूबी नहीं पैदा कर सके। मालूम होता है कि छन्द केवल क्राफ़ियेके लिए कहा गया है जैसे:—

मे क्या कहूँगा अजीजो ये ‘पार्टी’ लेकर,
मज़ा तो जब है कि आये वह यार ‘टो’ लेकर।

✓वाइज़ का जो इरशाद है वह “रीजनेबिल” है,
रिन्दोंकी यह मस्ती भी मगर ‘सीजनेबिल’ है।

एक जगह उन्होंने खुद क्राफ़िया बाँधनेके शौकको जाहिर कर दिया है। कहते हैं:—

मौज है दिलमें मेरे क्राफ़िया पैमाई की,
जाके गंगा पै कहा करता हूँ जय माई की।

मगर इस तरहकी कमज़ोरियाँ ज्यादा नहीं। आम तौरसे वे क्राफ़िया बाँधनेमें सफल हुए हैं, अर्थ पैदा किया है और इन्हीकी मददसे व्यंग या हास्य भी अच्छा खासा पैदा हो गया है। उदाहरणके लिए इनकी पूरी-पूरी कविताएँ देख लीजिए—‘जलवा’, ‘दरबारे देहली’, ‘साउदे’ की नज़मका अनुवाद—इन कविताओंमें क्राफ़ियेकी वजहसे बयान और ज़बान दोनोंको ‘अकबर’ने कितना बुलन्द कर दिया है।

‘अकबर’के होशियार कलाकार होनेमें किसको शक हो सकता है ! उन्होंने अपना सन्देश पहुँचानेके लिए यह ज़रूरी समझा कि साफ़ और सीधी ज़बानमें कविता लिखी जाय और बयान करनेका ढंग ऐसा हो जो आम

और खास सबको पसन्द आये । न तो इतनी गाढ़ी जबान हो कि साधारण लोग समझ ही न सकें और न इतनी गिर जाय कि फुस-फुसापन आ जाय । उन्हें पंडिताऊ शैली और साधारण शैलीके बीच अपना रास्ता निकालना था । वे दोनोंके बीचमें चलना चाहते थे । मगर रास्ता खतरनाक भी था । कहीं-कहीं पावें डगमगा भी गये हैं ।

जैसे:—

पेट चलता है आँख आयी है, शाह एडवर्डकी दुहाई है ।

दुनिया ही अब दुरुस्त है, कायम न दीन है,
जरकी तलबमें शेख भी कौड़ी का तीन है ।

मगर यह बात या ऐब बहुत कम है । आम तौरसे वे अपने विचारोंको ऐसे शब्दोंमें पेश करते हैं जो सर्वसाधारणकी समझमें आयें और सुलझे हों । सिर्फ़ तरतीब और लहजेसे हास्यरस पैदा हो जाता है । ज्यादातर वे कारीगरी पर भरोसा करते हैं कभी उदाहरण देकर, कभी मुहावरेको व्यंग और हँसीकी चाशनी देकर । ‘अकबर’की कलामें यह ऐब भी न होता अगर वह कभी-कभी अपनी रचनाओंको आलोचनात्मक दृष्टिसे देख लेते । मगर काफ़ी मात्रामें कविता लिखनेकी इच्छाके कारण काट-छांटकी ओर उनका ध्यान न गया । अक्सर कलाकारोंके यहाँ एक ऐसा वक्त धा जाता है जब उनको अपनी उम्र या मर्तबेकी वजहसे यह गलतफ़हमी हो जाती है कि वे जो कुछ कह देंगे वह अटल हो जायगा । इसी लिए मीरने पुकारकर कह दिया था:—

मुस्तनद है मेरा फ़रमाया हुआ

इसी कच्चे ख्यालने ‘अकबर’को भी नुकसान पहुँचाया । एक जगह कह भी गये हैं:—

**बस इतनी बात है सामअमें हो मज्जाके-सुखन,
मजाल क्या है मेरे शेर पर उछल न पड़े ।**

गोया उनकी कविता पर न उछलना मुननेवालेकी बदमज्जाकीकी वजहसे है, कविताकी खराबीकी वजहसे नहीं । हालाँकि काफ़ी तादाद ‘अकबर’की कविताओंकी ऐसी है जिसमें कोई हास्य या व्यंग नहीं पैदा हो सका । ऐसा मालूम होता है कि कविता लिखनेके लिए लिखी गई है । खैर बात कहीसे कही जा पहुँची । कहना तो यह था कि ‘अकबर’ने बयान और ज़बानका वह रास्ता अपनाया था जो ज्यादा पढ़े लिखे और कम पढ़े लिखे सबको प्रभावित करे । यह और बात है कि कहीं-कहीं पावें बहक गये हैं । ‘अकबर’ भी तो आदमी थे । ऐसी कमज़ोरियाँ अगर उनकी कविताओंमें आ गई तो इतना बड़ा पाप नहीं कि माफ न किया जाय । इन्साफ़ तो यह कि इन खराबियोंसे गुज़रकर उनके कमाल और कलाको गौरसे देखा जाय, घटनाओंकी पृष्ठभूमि पर समझा जाय और असर लिया जाय ।

‘अकबर’के इस बौद्धिक विश्लेषणके बाद हम इस नर्ताजे पर पहुँचते हैं कि ‘अकबर’ कट्टर धार्मिक प्रवृत्तिके व्यक्ति थे । मगर धर्मांधतासे दूर थे । अपने धर्मका पालन आँख बन्द करके करते थे और उनके अपने दृष्टि-कोणसे धर्ममें वे परम्पराएँ भी शामिल होती थी जिनका अनुसरण पुराने ज़मानेसे धर्मके पुजारी करते आये हैं । परम्पराओंको भी वे धार्मिक पवित्रता के साथ देखते थे । धर्ममें ही हर मरजका इलाज ढूँढ़ते थे । इसलिए हिन्दुस्तान और खासकर मुसलमानोंकी तरक्की किसी और तरीके पर मोचना नहीं चाहते थे । वे इससे खुश न थे कि कोई ‘जंट’ या ‘जज’ हो जाय और नमाज़ रोज़ासे अलहदा रहे । इसी धार्मिक दृष्टिकोणसे वे पचमका विशिरोध करते थे । वे नहीं समझते थे कि पश्चिमकी तरक्कीके राज़ क्या हैं । उनका ख्याल था कि चूँकि गिरजेमें लोग प्रार्थनाके लिए हाज़िर होते हैं इसी लिए उनकी तरक्की होती है । उनका यह सोचना मुश्किल था कि

गिरजेमें लोग रस्मी या शौकिया तौरसे जाते हैं; वहाँ जाने और न जानेमें सांसारिक सुख पर प्रभाव नहीं पडा बल्कि अनगिनत खूबियाँ यूरोपवालोंमें पैदा हो गई है जिनसे धर्मका कोई सम्बन्ध नहीं ।

‘अकबर’ पूर्वको पश्चिमकी नक़लसे बचते रहनेका उपदेश इसी लिए देते हैं कि पूर्वकी आध्यात्मिक शक्ति जो पूर्वजोंसे चली आ रही है नष्ट न हो जाय । वे ‘किपलिग’ (अंग्रेज़ साहित्यकार) के साम्राज्यवादी विचारोंके आकार पर हमेशा मोचते थे कि एशिया और यूरोप कभी एक नहीं हो सकते । उनके लिए पूर्व पूर्व और पश्चिम पश्चिम है । दोनोंका मिलाप मानसिक हो या राजनीतिक हानिकर है । पश्चिमकी मशीन-पूजा पूर्वकी धार्मिक प्रवृत्तिको ख़त्म कर देगी । उनके पास ज़मानेको समझनेके लिए कोई उपयुक्त साधन न था । वे कभी अपने अनुभवसे या कभी पुरानी मान्यताओंसे और सबसे अधिक अपनी काव्यशक्तिसे ज़मानेको समझनेकी कोशिश करते थे । तरक्कीके नये रास्तोंपर वह चलना नहीं चाहते थे इसलिए कि पूर्वजोंने इस तरफ़ क़दम नहीं बढ़ाये थे । विज्ञानकी शिक्षा ओर उन्नतिमें वह ईश्वरकी महानता और प्रकृति दोनोंकी पराजय अनुभव करते थे । इसी वजहसे वह सर सैयदके खिलाफ़ थे, क्योंकि सर सैयद बावजूद कुछ कमज़ोरियोंके बदले हुए ज़मानेमें सामाजिक परिवर्तन बदले हुए सिद्धान्तोंसे करना चाहते थे । वे पश्चिमकी नक़ल पर गर्व करते थे । वे अंग्रेज़ी शिक्षा ज़रूरी समझते थे और ‘अकबर’ इन सब बातोंमें जातिकी बरवादीका ख़तरा महसूस करते थे ।

इन सब बातोंके बावजूद ‘अकबर’की क़द्र करनी पड़ती है इसलिए कि मतभेद दूसरी चीज़ है मगर ज़ौहरसे इन्कार करना जहालत है । उनका पश्चिमसे मतभेद ग़लत था या सही, धर्मको हर बीमारीकी दवा समझना अक़लसे दूर था या करीब, इसका सवाल नहीं । सोचना यह है कि ‘अकबर’ने जो भी विरोध किया वह अपनी किस्मत बदलनेके लिए नहीं । अपने किसी जाती फ़ायदेके लिए नहीं बल्कि हमेशा जाति और देशके

फ़ायदेको सामने रख कर वे विरोध करते थे । अपनी रायमें वे उन्हीं बातोंको मना करते थे जो समाज या देशके लिए हानिकर हों । इस भावनाकी कद्र न करना गुनाह है । मालूम नहीं यह कद्रके क़ाबिल ख़याल उनको कहाँसे मिला । वे ग़ज़ल कहते रहे; ग़ज़ल सुनते रहे । नौकरी करते थे । इन तमाम जगहोंमें अपनी व्यक्तिगत भावनाएँ रहती हैं । सार्वजनिक विचार बहुत कम आता है । ऐसी दुनियाके रहनेवालेके लिए तो ज़्यादातर अपने ही फ़ायदेकी बातें कहनी चाहिए थीं । मगर ‘अकबर’ने यह कभी नहीं किया । जब किसी आन्दोलनका विरोध करते तो दुनियाका एक नुक़सान समझकर । कहना पड़ता है कि उनका यह रवैया उनका अपना था और इतना सशक्त था कि न वे किसी आदमीसे डरे और न हुकूमत से । जो कुछ वे महसूस करते थे एलानिया कहते थे ।

‘अकबर’की राजनीतिक जानकारी कम रही हो, उनको बड़े पैमानेपर बेलौस होनेका मौक़ा न मिला हो, लेकिन जनता और इन्सानके प्रति उन्होंने जिस दोस्तीका सबूत दिया है वह उनको हर लिहाज़से कद्रके क़ाबिल कवि मनवानेके लिए काफ़ी है । और जब हम यह सोचते हैं कि सरकारी नौकरीमें रहकर भी जितनी बुराई उन्होंने खुले शब्दोंमें शासन और अंग्रेज़की की है वह भी किसी दूसरेके यहाँ कम मिलती है । इसीलिए तो ‘अकबर’की कद्र और ज़्यादा बढ़ जाती है और कहना पड़ता है कि सचमुच वे कवि थे । अपनी कला और कल्पनाके कारण उन्होंने शैली और विचारके आचार्य होनेका प्रमाण दिया । उन्होंने हिन्दुस्तानियोंको जिस तरीक़ेसे अन्धविश्वासके लिए मना किया है उसका एहसान भुला देना आसान नहीं ।

जैसे-जैसे ‘अकबर’की उम्र ज़्यादा होती जाती थी वह गंभीर और खामोश होते जाते थे इस लिये उनके चौथे काव्य संग्रहमें सफ़े भी कम हैं और शोखी भी अपेक्षाकृत कम है । व्यंग ज़रूर है मगर हास्यरस कम होता गया है । इस कमीकी वजह कुछ तो बुढ़ापा था और कुछ लड़केका मरना, कुछ

बदली हुई स्थितिसे इनका पुराने रंगमें न रहना और यह देखना कि जिन बातोंका मैंने ज्यादा से ज्यादा विरोध किया, वही हो रही हैं। जैसे पर्दा, अंग्रेजी शिक्षा, पश्चिमी ढंगपर चलना ये चीजें ‘अकबर’को नागवार थीं मगर ज़मानेको पसन्द थीं। हिन्दुस्तानने इन चीजोंकी ज़रूरत समझी। पूरा देश उसी तरफ़ चला गया। यहाँ तक कि लोग धर्मसे अपरिचितसे हो गये। इन सब बातोंको ‘अकबर’ने बहुत महसूस किया। उनकी हास्यप्रियता पर इसका काफ़ी असर पड़ा। इनकी रचनाओंमें कहीं-कहीं इसके उदाहरण मिलते हैं। कभी पर्देका विरोध किया था आगे चलकर उनको कहना पड़ा:—

✓ अवाम बांध लें दोहर को ‘थर्ड’-ओ-‘इन्टर’में,
‘सेकेन्ड’ व ‘फ़र्स्ट’ की हों बन्द खिड़कियाँ कबतक।

इन छन्दोंमें शोखी बरायनाम है। हर छन्दसे नाउम्मीदी बरस रही है। इस वक़्त उनकी कवितासे पढ़ने वालोंको हमदर्दी पैदा हो जाती है। हँसी नहीं आती लेकिन इस मौक़े पर भी ‘अकबर’के बड़ेपनका एक तरहसे सबूत मिलता है। यानी वे जिस चीज़का विरोध करते आये थे वही चीज़ अगर ज़मानेने पसन्द ही कर ली तो ‘अकबर’ अपनी हार मान लेते हैं मानो वे यह समझ लेते हैं कि समाज व्यक्तिसे बड़ी चीज़ है। मेरे निजी विरोधकी हार समाजकी जिद या पसन्दकी वजहसे है तो मुझे इसको मान लेनेमें कोई दुख या चिन्ता न होनी चाहिए। यही हाल उनका व्यक्तिके लिए भी था। शुरू-शुरूमें बराबर सर सैयदका विरोध करते रहे, मज़ाक़ उड़ाते रहे, उनके पतनका इन्तज़ार करते रहे। मगर जब यह ख़्वाब पूरा न हुआ तो उन्होंने अपनी रायमें तब्दीली की और बुराईके बजाय तारीफ़ करने पर मजबूर हुए। एक जगह कहते हैं:—

हमारी बातें ही बातें हैं सैयद काम करता था,
न भूलो फ़र्क़ जो है कहनेवाले करनेवाले में।

✓ कोई जो कुछ कहे मैं तो यही कहता हूँ ए ‘अकबर’,
खुदा बख्शे बहुत सी खूबियाँ थीं मरनेवालेमें ।

बावजूद विरोधके जब आदमी किसी बातको सही स्वीकार करने पर मजबूर हो जाय और अपनी रायको गलत मान ले यह आसान काम नहीं और खास कर ‘अकबर’ ऐसे व्यक्तिके लिए जो पदके लिहाजसे ऐसे लोगोंके बीचमें घिरा रहा जो तारीफ़के पुल बाँधते रहते थे, जो उनकी कविता सुन कर हमेशा वाह-वाह किया करते थे । ‘अकबर’का दृष्टिकोण एक जिद्दी व्यक्तिका होना चाहिए था मगर उनका स्वाभाविक यथार्थवादी होना और जिसको जैसा पाना वैसा ही कहना उनको हमेशा बडेपनकी श्रेणीमें लाकर खड़ा कर देता है और वे गम्भीरतासे आन्दोलन या व्यक्तिके महत्वको स्वीकार कर लेते हैं । यह सिर्फ़ एक इन्साफ़ पसन्द आदमी कर सकता है । आखिरी उम्रमें अकबरके यहाँ शोखीकी कमीकी एक और वजह मालूम होती है । शुरू-शुरूमें जब हिन्दुस्तान पश्चिम या अंग्रेज़का अनुसरण आँख बन्द करके करता रहा होगा तो सचमुच हँसनेके काबिल रहा होगा, चाहे वास्तवमें अनुसरण बुरा न रहा हो । जिस चीज़का अनुसरण किया जा रहा था वह खुद लाभप्रद रही हो मगर चूँकि अनुसरण करने वाले बग़ैर सोचे समझे अनुसरण कर रहे थे इस वजहसे अगर किसी आदमीको हँसी आ जाय तो ताज्जुब नहीं । बल्कि हँसना ज़रूरी हो जाता है । लेकिन जब हिन्दुस्तानने गांधीजीके नेतृत्वमें राजनीतिक क्रदम उठाया तो उसकी कुरबानीके अवसर पर हँसनेका मौका कहाँ था । हँसना अपने ऊपर मुमकिन था कि हम वह नहीं कर सकते जो मुल्कको आज़ाद करा दे । ‘अकबर’ गांधीजीके आन्दोलनसे बेहद प्रभावित थे । बावजूद सरकारी नौकर होनेके अक्सर खुल्लम-खुल्ला गांधीजीकी और उनके आन्दोलनकी तारीफ़ कर जाते हैं । उदाहरणके लिए उनकी कविताओंके कुछ छन्द सामने हैं:—

सुनलो यह भेद मुल्क जो गांधीके साथ है,
तुम क्या हो सिर्फ पेट हो वह क्या है हाथ है ।

भाई गांधीका निहायत ही मुकद्दस काम है,
रामपुरी^१ साथ है और राम होका नाम है ।

भाई गांधीने मुल्कसे जय ली,
लाट साहबकी पालिसी फैली ।
थे जो चलते हुए वह रुक ही गये,
लद गयी उन पे ‘कैश’ की थैली ।

इस असरको लेनेके बाद अब कहाँ गुजाइश थी कि ‘अकबर’ उमी हास्य भावनासे काम लेते जो उठती जवानीमें उनके यहाँ दिखाई देती थी । हिन्दुस्तानकी रुचिके साथ ‘अकबर’की रुचि भी बदलती रही ।

‘अकबर’ राजनीतिक आदमी न थे । मगर हर घटना पर उनकी नज़र थी । वह अपने तौर पर हर राजनीतिक आन्दोलनको अच्छा या बुरा समझते थे । इसलिए स्वशासन, होमरूल, असहयोग, सविनय अवज्ञा हर एकके बारे-में उनकी एक अपनी राय थी । उनकी रचनाओंमें स्थान-स्थान पर इन आन्दोलनोंपर छन्द मिलते हैं जिनसे पता चलता है कि वे आखिरी उम्रसे कुछ पहले ही हिन्दुस्तानमें आनेवाली क्रान्तिका अनुभव कर रहे थे । सरकारी नौकर होनेकी वजहसे आन्दोलनोंके बारेमें उन्होंने खुलकर तो ज्यादा नहीं कहा, लेकिन दबी ज़बानसे भी उन्होंने जो कुछ कह दिया है वह उनके दिलकी गहराइयोंका पता देता है ।

^१मौलाना मोहम्मदअली और मौलाना शीकतअली जो रामपुरके थे ।

जब हम यह सोचते हैं कि उस वक्त अंग्रेजी हुकूमत आज़ादीके कितने खिलाफ़ थी, इस माँग पर क्या-क्या सज़ाएँ दी जाती थीं तो ‘अकबर’की कद्र दिलसे होती है कि इस मर्द शायरने हिम्मतसे काम लेकर इतना भी कह दिया । ऐसा मालूम होता है कि वह अपनी संवेदनाकी उग्रतासे बेचैन हो जाते थे और बावजूद ज़ब्तके बात मुँहसे निकल ही जाती थी । और जब यह बेचैन कर देनेवाली भावना किसी दिलमें पैदा हो जाती है तो समझना पड़ता है कि वाक़ई यह व्यक्ति कवि है । वह जो कुछ महसूस करता है उसके कहनेमें न सज़ाका लिहाज़ होता है और न समाजका । इस कैफ़ियतके साथ कविता करने वाले की रचनाओंमें असर होना ज़रूरी है । बहुत सी वजहोंमें ‘अकबर’की कविताके आकर्षणकी एक खास वजह यह भी है ।

‘अकबर’की राजनीतिक चेतनाके हम कायल नहीं । मगर यह ज़रूर मानते हैं कि वे एक सच्चे हिन्दुस्तानीकी तरह अपने देशके हर आन्दोलनसे दिलचस्पी ले रहे थे । वे निर्जीव न थे, वे अंग्रेज़ोंके गुलाम न थे । उन्होंने उस ज़मानेमें भी अपनी ज़बान न वन्द की जब असहयोग या सविनय अवज्ञाकी हवाएँ चल रही थीं और विदेशी सरकार हर मुमकिन तरीक़ेसे रोकनेकी कोशिश कर रही थी । ‘अकबर’के राजनीतिक विचारोंसे चाहे आप सहमत हों या असहमत, मगर इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि वह चुप रहने-वाला इन्सान न था । जिसको दुनिया हँसने-हँसानेवाला कवि समझती है वह परिस्थितिके अनुसार बहुत शान्त और गम्भीर भी हो जाता है । इसलिए कि उसके दिलमें दर्द था । सिर्फ़ स्थान और अवसरके अनुसार अपनी कलाकी कभी हास्यके साँचेमें ढाल लेता था और कभी ज़रूरत पड़ती तो एक गम्भीर बुजुर्गकी तरह अपनी राय पेश करता । इसका अन्दाज़ा आपको उसी वक्त हो सकता है जब स्वराज वगैरहके बारेमें आप उनकी कविताएँ देख लें:—

किया तलब जो स्वराज भाई गांधीने,
मची यह धूम कि ऐसे ह्यालकी क्या बात ।

✓ कमाल प्यारसे अंग्रेजने कहा उनसे,
हमों तुम्हारे हैं फिर मुल्क-ओ-मालकी क्या बात ।

ढीट जब हटसे सिवा ये ‘ननको अपरूँ’^१ हो गये,
चुप हुए ‘चिन्तामनी’^२ खामोश ‘सपरू’^३ हो गये ।

जो हैं ‘मालवी’ और ‘शौकत’ मियाँ,
लगे करने आपसमें सरगोशियाँ^४ ।
वह बोले कि काबुलसे होगा गजन्द^५,
करेंगे हम अंग्रेज ही को पसन्द ।
यह बोले कि हिन्दूका होगा जो ‘रूल’^६,
हम अंग्रेज ही को करेंगे कबूल ।

जान इनकी कहीं तकें मवालात^७ न मारे,
कहते हैं कहीं तुर्क मुआलात न मारे ।

मैं तो हूँ ‘ननकोअपरेशन’ के लिए तैयारे-जस्त^८,
तुम तो लेकिन ‘एन्टी ननकोअपरेशनमें’^९ हो मस्त ।

‘असहयोग आन्दोलनकारी’^१ स्वर्गीय सी० वाई० चिन्तामणि—
इलाहाबादके ‘लीडर’ अखबारके तत्कालीन सम्पादक और दक्षिण पंथी नेता । आप असहयोग आन्दोलनसे असहमत थे ।^२ स्वर्गीय सर तेज बहादुर सप्रू—इलाहाबादके मशहूर दक्षिण पंथी नेता ।^३ छेड़-छाड़,
‘नुकसान,’ ‘हुकूमत,’ ‘असहयोग,’ ‘कूदनेके लिए तैयार,’ ‘असहयोग आन्दोलन विरोधी ।

वह दिलाता है बिले-दींदार' को तक्रबा'की याद,
'एन्टी ननकोअपरेशन' है मगर शरों-फ़साद' ।

'अकबर'की एक शैली ऐसी भी उनकी रचनाओंसे ज्ञात होती है जिससे मालूम होता है कि वे ज़मानेके साथ अपने दृष्टिकोणको बदलते रहते थे । कभी विरोध करते थे कभी समर्थन । लेकिन इसके यह मानी नहीं कि वे स्वार्थके लिहाज़से राय बदलते थे बल्कि सामाजिक और देशकी जरूरत और महत्वको सामने रखकर ज़मानेके साथ अपनेको चलाते थे । यह उनके छोटेपन नहीं बल्कि बड़ेपनका सबूत है । जब कभी महसूस करते थे कि पहले जो राय मैंने क़ायम की थी वह सही नहीं है तो वे अपनी ग़लतीको स्वीकार भी कर लेते थे जिससे उनकी महानता और उदारताका अन्दाज़ा किया जा सकता है । और यह एक ऐसी खूबी है कि मतभेद होनेके बावजूद उनकी रचनाओंमें आज भी ताज़गीकी लहरे दौड़ती नज़र आती हैं ।

इस किताबमें चूँकि हम 'अकबर'के हर दौर और हर तरहकी रचना देख रहे हैं इसलिए मुनासिब मालूम होता है कि संक्षेपमें उनकी उस कविताके बारेमें भी कुछ कहा जाय जिसका संबंध उनकी ग़ज़लों तथा अन्य काव्य-रूपोंसे है । हम पहले कह चुके हैं कि 'अकबर'ने भी ग़ज़लमें अपनी कविताका आरम्भ किया—ग़ज़लकी चर्चा उर्दू साहित्यमें शुरूसे ही रही और उसकी लय इतनी बढ़ी कि दूसरे काव्यरूपों पर छा गई । उसमें खूबियाँ थी और कुछ ख़राबियाँ भी । कलाकी दृष्टिसे यह एक साथ ही मुश्किल और आसान थी । इसमें क़ाविल से क़ाविल आदमी हिस्सा ले सकता था और कम से कम पढ़ा आदमी भी । नतीजा यह हुआ कि ज़्यादातर लोग ग़ज़ल ही कहने लगे और ग़ज़ल ही का अच्छा कहने वाला उस्ताद माना गया । इसीलिए मीर उर्दूका सबसे बड़ा कवि समझा गया, और सौदा

१धर्मवाले २पवित्रता, ३लड़ाई भगड़ा ।

जिसने सबसे अच्छे कसीदे कहे वह इस मर्तबेका कवि न समझा गया। मीर हसन जिन्होंने उर्दूमें सबसे अच्छी मसनवी कही वह भी मीरके बराबर जगह न पा सके। कहनेका मतलब यह कि ग़ज़लका प्रभुत्व माहित्य और साहित्यकारों दोनों पर इतना छा गया कि लोग सब कुछ इसीको समझ बैठे, ग़ज़लको ही पूरा साहित्य ग़लतीसे मानने लगे। अस्तु इस बहसको हम यहाँ छोड़ना अनावश्यक समझते हैं। मगर यह बताना जरूरी है कि ‘अकबर’के ज़मानेमें ग़ज़लका बड़ा जोरदार साहित्यिक आन्दोलन था। इसलिए ‘अकबर’को भी दूसरोंकी तरह इस बहावमें बह जाना पड़ा।

‘अकबर’की ग़ज़लोंमें ऐसी खूबियाँ कम हैं कि उनको दूसरे बड़े ग़ज़ल कहनेवालोंके बराबर जगह दी जाय। ‘अकबर’की ग़ज़लोंमें न विचारोंकी गहराई है कि ग़ालिबके मुक़ाबलेमें उनको रक्खा जा सके और न रहस्यवाद के मूल तत्व ही हैं कि ‘दर्द’ के साथ खड़ा किया जा सके। उनमें वह दर्द भी नहीं जो मीर तकी ‘मीर’ के यहाँ पाया जाता है। लेकिन उनकी ग़ज़लोंमें इतनी जान है कि अपने ज़मानेके कवियोंमें उनको उचित स्थान मिल सके। उनकी ग़ज़लोंमें ज़्यादातर हुस्न व इश्क़ (सौन्दर्य और प्रेम) की कहानियाँ हैं जो परम्परागत हैं। उनका आन्तरिक पक्ष न बहुत गहरा है और न बहुत उथला। आमतौरसे अपने युगकी रुचिके लिहाज़से एक औसतका पहलू लिए हुए उनकी ग़ज़लें सामने आती हैं। ज़वान और बयानके लिहाज़से सफ़ाई और सादगी उनकी ग़ज़लोंमें स्पष्ट है। ‘आतिश’ की परम्पराका जो शब्दों और मुहावरों पर जोर था वह निहायत खूबीसे ‘अकबर’के यहाँ भी मौजूद है। साधारणतः वे ऐसे ही शब्द लाते हैं जिन्हें सर्वसाधारण समझ सकते हैं। लेकिन बन्दिश इतनी चुस्त और मज़ेकी होती है कि मामूली बात भी आकर्षक हो जाती है। ‘अकबर’ने ग़ज़लोंमें बयानका जो तरीका अस्तियार किया था वह गंभीर और प्रभावकारी था। ज़्यादातर तो वे उन्हीं बातोंको लिखते हैं जो ग़ज़लोंमें मान्य हो चुकी थीं। मगर कभी-कभी जब वे अपने तज़ुब और दिल पर गुज़री हुई कैफ़ियत बयान कर जाते हैं तो

बड़ा अर्थ-गाम्भीर्य और आकर्षण पैदा हो जाता है । उदाहरणके लिए एक छन्द देख लीजिये:—

✓ मेरी उनकी निगाहें लड़ गयी थीं रात महफ़िलमें,
यह दुनिया है बस इतनी बात फैली दास्तां होकर ।

देखनेमें सीधे-सादे शब्दोंमें एक मामूली सी बात कह दी गई है । मगर जो लोग प्रेमकी गलियोंसे गुज़रे हैं; जिन्होंने दिल पर चोट खाई है वे जानते हैं कि दो आँखोंके मिल जानेसे क्या होता है । चेहरेका रंग कितनी बार बदलता है; दिलकी धड़कनें कितनी तेज़ हो जाती हैं; ज़िगरमें कैसी टीस उठती है, अँगड़ाई आने लगती है; बातें करनेमें जवान लड़खड़ा जाती है और हवास गुम हो जाते हैं । इस आलमको देखनेवाले ताड़ जाते हैं कि दो नज़रोंने मिलकर एक दूसरेसे क्या कह दिया । यद्यपि ऊपरसे कुछ नहीं हुआ, औरोंकी तरह दो मुहब्बत भरी आँखें दो-चार हो गई । न किसीने मुँहसे कुछ कहा और न कानसे सुना । न कोई कानूनी जुर्म हुआ और न नैतिक । सिर्फ़ समझनेवाले कुछ समझे और इधर-उधर कुछ बातें फैलने लगीं । किसीने उस व्यक्तिसे भी पूछ ही लिया जिसकी आँखें किसीसे मिली थीं कि तुम्हारे बारेमें लोग अजब अजब बातें कर रहे हैं हकीकत क्या है । ‘अकबर’ इसी घटनाको किस खूबमूरतीसे बयान कर देते हैं कि :—

यह दुनिया है बस इतनी बात फैली दास्तां होकर ।

‘यह दुनिया है’ कहकर सारा दोष और बुराई दूसरों पर लाद दी । मानो यह समझा दिया कि दुनियावाले ज़रा सी बातको एक अफ़साना बनाकर कह दिया करते हैं । बात ज़रा सी थी वदनाम करनेके लिए किस्सा बना दिया । ‘अकबर’का यह कमाल उनको प्रथम श्रेणीके कवियोंमें खड़ा कर देता मगर अफ़सोस कि उनके यहाँ ये खूबियाँ बहुत कम हैं ।

‘अकबर’की ग़ज़लोंमें शुरूसे ही कुछ झलकियाँ ऐसी मिलती हैं जो बता देती हैं कि आगं चलकर यह कवि हास्यरस में प्रवीण हो जायगा

और बड़ी खूबीसे अपना रास्ता अलग करके अच्छी खासी शोहरत हासिल कर लेगा। गंभीरताके साथ गज़ल कहते-कहते कभी-कभी एकाध छन्द बीचमें ऐसा कह जाते हैं जो गज़लके पुराने वातावरणसे अलग होता है और उसका जवाब पुरानी कविताओंमें मुश्किलसे मिलता है। उदाहरणके लिए गज़लोंसे कुछ छन्द मुलाहज़ा हों—

इज़ज़त मिली है शिरकते-कौंसिलकी शंखको,
ग़ाज़ा मला गया है रखे फ़ाक्रा-मस्त पर।

मेरी ज़र्दिये-रुख़ का ज़िफ़ है लब-हाय जानाँ पर
मज़ा देखो कि हलवेमें पड़ा हूँ जाफ़राँ होकर।

✓हूँ मैं वो रिद अगर हश्ममें मुलज़िम ठहलूँ,
फ़ैसलेके लिये हूँ हूँ का कमीशन बंटे।

✓जो चलता है दिले-सोज़ाँका इंजन राहे उलफ़तमें,
ख़बर देनेको फ़ौरन आँसुओंका तार आता है।

गज़लके अतिरिक्त दो-तीन भाँतिकी उर्दू कविता पर भी ‘अकबर’ने प्रयोग किया है। उदाहरण स्वरूप ‘क़ता’, ‘रुबाई’, ‘फ़र्द’, ‘मुस्तज़ाद’ वगैरह। इस किस्मकी कविताको ‘अकबर’ने विस्तृत कर दिया है, खासकर ‘क़ता’ और ‘रुबाई’ को। ‘क़ता’ टेकनीकके लिहाज़से गज़लसे कुछ मिलता जुलता है। फ़र्क़ सिर्फ़ यह है कि ज़रूरी नहीं कि ‘क़ता’ का पहला छन्द ‘मतला’ हो। यानी उसके पहले छन्दके दोनों चरणोंमें ‘काफ़िया’ हो। गज़लका हर छन्द एक दूसरेसे अलग होता है। ‘क़ता’ के छन्द एक दूसरेसे अर्थके

लिहाजमे मिले रहते हैं। दूसरे शब्दोंमें यह कहा जा सकता है कि कतामें अविच्छिन्नता रहती है और गज़लमें नहीं।

उर्दूमें कताका रिवाज बहुत कम था। ‘अकबर’ने इसको ज्यादा उभार दिया। इस्तेमालके लिहाजमें भी इसको ज्यादा काममें लाये और विषयके लिहाजमें भी उन्होंने विभिन्नता पैदा कर दी। हास्य और गभीरता दोनोंसे इसको मजानेकी कोशिश की—‘कता’ और ‘रुवाई’ की तरफ ध्यान देनेमें भी ‘अकबर’ने बड़ी दृग्दर्शिताका सबूत दिया। वे उर्दूकी दूसरी किस्मकी कविता उदाहरण स्वरूप ‘मसनवी’ ‘मुसद्दस’ वगैरहको इस्तेमाल करके अविच्छिन्न विषयको जगह दे सकते थे। मगर रिवाजके लिहाजमें इन सब किस्मोंमें विषयको विस्तृत करना पड़ता था। इसके प्रतिकूल कतामें ज्यादा छन्द कहनेका रिवाज न था और रुवाई तो केवल चार चरणों तक ही सीमित है। उसके अधिक फैलावकी गुजाइश नहीं। इन दोनों किस्मोंमें हमेशासे विषयकी अविच्छिन्नताकी ज़रूरत रही है। जब कभी किसीने ‘कता’ या ‘रुवाई’ कही है तो उसने अविच्छिन्न विषयके साथ ही कहा है। इसलिए कहना पड़ता है कि ‘अकबर’ने बड़ी अक्लमन्दीसे काम लिया जो काव्यके इन रूपोंको अपनानेकी फ़िक्र की क्योंकि उनके दिमागमें जो विषय होते थे वे ज्यादा विस्तार न चाहते थे। आम तौरसे थोड़ेसे छन्दोंमें ख़त्म हो जाते थे। यानी उनको लम्बी कविताएँ लिखनेकी ज़रूरत कम थी। उनके लिए ‘कता’ या ‘रुवाई’ के रूप ज्यादा मुनासिब थे। सच पूछिये तो ‘अकबर’ छोटी कविता पसन्द करते थे। तादादमें चाहे वे ज्यादा छन्द कहते रहे हों मगर लम्बी कविता ज्यादा नहीं कही। कभी-कभी तो उन्होंने अपने विचारको एक ही छन्दमें कहनेकी कामयाब कोशिश की, यानी जिस रूपको उर्दूमें ‘फ़र्द’ या ‘बैत’ कहते हैं। ‘अकबर’की इस शैलीसे उनकी कलाका सबूत मिलता है। उनके बड़ा कलाकार होनेका भी पता चलता है। उन्होंने इसकी परवाह हर जगह गालिबकी तरह नहीं की कि अपने ज़मानेके रिवाजके लिहाजमें ‘मतला’ भी कहे और उसके बाद कुछ छन्द और फिर अपना

तखल्लुस (उपनाम) लानेकी फ़िक्र करें। जब समझते थे कि उनका मतलब पूरा अदा हो गया तो मिलसिलेको पूरा करनेके लिए या परम्पराको निवाहनेके लिए ज़बरदस्ती कुछ कहना ज़रूरी नहीं समझते थे। उनके नज़दीक अगर एक ही छन्द पूरे विचारको साफ़ कर दे तो बहुत काफ़ी है। इसका सबूत आपको उनकी सादी रचनाओंमें मिलेगा।

‘रुवाई’ जिसको ‘चौबंती’ भी कहते हैं चार चरणोंकी एक कविता होती है। उसके पहले दूसरे और चौथे चरणमें क़ाफ़िया होता है तीसरे में नहीं। उर्दूमें इसका चलन बहुत पहलेसे है। मगर ज्यादातर नैतिक या धार्मिक विषय इसमें रहते थे। ‘अकबर’ने अपने कामकी चीज़ देखकर हर तरहके विषय इसमें खपानेकी कोशिश की, धार्मिक भी और हास्यरम युक्त भी। नैतिक विषयोंके साथ हास्यरसका अंश भी बढ़ा दिया। जिससे रुवाईका विस्तार ज्यादा हो गया।

इन बातोंको देखनेसे मालूम होता है कि ‘अकबर’ हर प्रकारकी कविताके आचार्य थे। और लुप्त यह है कि हर एक साँचेमें वे अपने रंगके छन्द ढाल लेते हैं। यही नहीं बल्कि इससे एक कदम आगे भी रखते हैं। नई नई शकलोंको भी उर्दूमें लानेकी फ़िक्र करते थे जैसे अतुकान्त कविता। अतुकान्त कविता उर्दूके लिए नई चीज़ थी मगर ‘अकबर’ने इसको भी अपनानेकी कोशिश की। यद्यपि यह शैली उस वक्त लोक प्रिय न हो सकी, इसके लिए उर्दू साहित्यको नये ज़मानेका इन्तज़ार था। मगर बावजूद इसके प्रचलित न होनेके हमको ‘अकबर’का कृतज्ञ होना पड़ता है कि उन्होंने लाभकर बातोंको भी लानेकी कोशिश की।

आख़िरमें इस संग्रहके बारेमें भी कुछ कह देना ज़रूरी है जो आपके हाथोंमें मौजूद है। हमने शुरूसे इसका ख़याल रखा है कि ‘अकबर’की श्रेष्ठ कविताएँ आप इस किताबमें पा सकें। लेकिन कभी-कभी यह दिक्कत आ पड़ी है कि अच्छे छन्दोंमें कठिन शब्द आ गये हैं उनको आसानीसे समझना मुश्किल था या कहीं कहीं अरबी या फ़ारसीके पूरे पूरे चरण या पंक्तियाँ

आगई हैं। या ऐसे प्रसंग आ गये हैं कि बगैर उनको समझे हुए छन्दका पूरा लुप्त नहीं उठाया जा सकता। फ़ुटनोटमें ये बातें दी जा सकती थीं मगर कहाँ तक पढ़नेवाला बार-बार गर्दन झुकाकर फ़ुटनोट देखता। इसलिए हमने ऐसे छन्द छोड़ दिये हैं। हमने कोशिश की है कि अच्छे से अच्छे छन्द लिये जायें जिनको कमसे कम फ़ुटनोटकी ज़रूरत हो।

फ़ुटनोटमें शब्दकोषके लिहाजसे अर्थ कम दिये गये हैं ज्यादातर मतलबके लिहाजसे मानी दिये गये हैं। कहीं-कहीं आपको अंग्रेज़ी शब्द फ़ुटनोटमें लिखे दिखायी देंगे। ये शब्द ऐसे हैं जिनके मानी सब समझते हैं, लिखनेकी ज़रूरत न थी। मगर यह ख्याल करके कि कहीं कोई शब्द अंग्रेज़ीका हो और दूसरी लिपिमें देखकर किसीको यह ख्याल न हो कि अरबी फ़ारसी या संस्कृतका कोई शब्द हो इसलिए कहीं कहीं ऐसे शब्दोंको रोमन लिपिमें लिख दिया गया है जैसे फ़ेम, (Fame) पायटी (Piety) वगैरह। शायद ‘अकबर’को खुद इस ग़लत फ़हमीका डर उर्दूवालोंसे भी था क्योंकि जो संग्रह उनकी जिन्दगीमें छपे हैं उनमें उन्होंने भी अकबर अंग्रेज़ी शब्दोंको फ़ुटनोटमें दे दिया है।

उर्दू काव्यमें व्यंग और हास्य

(सौदा से अकबर तक)

हँसना और रोना मानव स्वभावके दो ऐसे पहलू हैं जैसे समयके लिए रात दिन। आदिकालसे अभीतक कोई क्षण ऐसा नहीं बीता जब कि यह दोनों भावनाएं प्रकट न हुई हों। इतिहासका कोई पृष्ठ ऐसा नहीं है जिसमें यह दोनों चीजें न मिले। संभव है किसी कालमें रोनेकी आवाज़ ज्यादा आये और हँसनेकी कम या किसी ज़मानेमें हँसी ठट्टेसे आसमान गूँज गया हो और रोनेकी आवाज़ मद्धिम पड़ गई हो, लेकिन ऐसा कोई ज़माना नहीं जिसमें इन दोनोंमें कोई भी ख़त्म हो गया हो।

इन दोनों भावनाओंमें कौन ऊंची है इस समय इस बहसमें पड़ना अनुचित है। विशेषतः ऐसी अवस्थामें इस भेद-भावकी और भी उपेक्षा करनी पड़ती है जब हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि हँसना और रोना दोनों ही भावनाओंकी असाधारण अभिव्यक्ति है। केवल परिस्थितिके ही उलट फेरसे कोई बात हँसी या रोनेमें कही जाती है। खैर, यह तय है कि यह दोनों चीजें दुनियाके लिए ज़रूरी हैं। हँसीका भी आवश्यकता-नुसार वर्गीकरण कर लिया गया है, जैसे मुस्कान, दबी हँसी, क़हक़हा। मेरे विचारसे यह सभी चीजें हास्य में आ जाती हैं।

चूँकि रोना और हँसना दोनों मानव स्वभावके अविच्छिन्न अंग हैं और कविता मानवीय भावनाओंकी अभिव्यक्ति, इसलिए कवितामें इन दोनोंका आना ज़रूरी है। वली हों या मीर, जौक़ हों या ग़ालिब, काव्य संसारमें थोड़ी देरके लिए सभी हँसी दिल्लगी कर जाते हैं। कभी उपदेशक (नासेह) की ग़त बनायी गयी, कभी प्रतिद्वंदी (रक़ीब) पर कीचड़ उछाला गया, कभी कर्मकांडी (शेख़) से हाथापाई हुई, कभी खिज़रकी दाढ़ी

पर दाग लगाया गया । और यह सब हुआ कहां ? हज़ल, हज़ो या रेख्तीके क्षेत्रमें नहीं बल्कि ग़ज़लके ही गंभीर वातावरणमें । तो क्या हमारे पुराने कवियोंने अपनी सीमाका उल्लंघन कर दिया था । नहीं, उनके नज़दीक ग़ज़ल नाम था भावनाओंकी अभिव्यक्तिका और प्रेम संसारमें जो भी उल्लेखनीय भाव उन्हें मिल जाता था उसीको वे अभिव्यक्ति कर देते थे ।

इन बातोंके अलावा ग़ज़लमें कभी कभी ऐसा परिहास भी दिखायी देता है जो सीधा प्रियतमके लिए तानेके तौर पर होता है । उदाहरणके लिए कुछ शेर लीजिए:—

✓ 'गर नाज़नी' कहेसे बुरा मानते हो तुम

मेरी तरफ़ तो देखो मैं ही नाज़नी सही

'न हम समझे न आप आये कहीं से

पसीना पोंछिए अपनी जबों' से'

'कहा तुमने कि क्यों हो ग़रके' मिलनेसे रुसवाई'

बजा कहते हो सच कहते हो फिर कहियो कि हां क्यों हो

—(ग़ालिब)

इसी सिलसिलेमें कवि कभी कभी अपने पर भी व्यंग कर देते हैं:—

'चाहते हैं खूबरूयों' को "असद"

आपकी सूरत तो देखा चाहिए'

'नोची दाढ़ीने आबरू रख ली

क्रज़ पी आये इक दूकानसे आज'

परिहास पर कुछ कहनेके पूर्व, जिससे साहित्य और संस्कृति पर भला या बुरा असर पड़ता है, हम इसके भेदों और उप-भेदों पर भी एक निगाह

'कोमलांग,

'माथा

'प्रतिद्वंदी,

'बदनामी,

'सुंदरी,

डाल ले ताकि हमें आलोचनामें मदद मिलती रहे । मैं पहले ही कह चुका हूं कि मैंने परिहासमें प्रसन्नताकी सभी अनुभूतियोंका समावेश कर दिया है । इसलिए इसके कुछ भेदोंका भी उल्लेख कर देना चाहिए । यह निम्न-लिखित है:—

फ़बती—यह पूर्णतः उपमासे सम्बन्धित है । इसके लिए ऐसी उपमाएं दी जाती हैं जो वाहि्यात होती हैं । कभी यह उपमाएं शरीरके किसी अंग पर होती हैं, कभी स्वभावपर कभी चाल ढाल और कपड़ों पर और कभी नामकी विशेषता पर । उदाहरणार्थ:—

‘समझा कि रखके सर पे मेरी चाक ले चले
दौड़ा कुम्हार शेखकी दस्तार’ देखकर

ज़िलाजुगुत—यह शब्दोंके उलट फेर या काटछांटका नाम है या मिलते-जुलते शब्दोंको नये ढंगसे रखना है । इसमें शब्दोंका चमत्कार होता है । जैसे—एक काज़ी^१के लिए कहा गया है:—

‘काज़ी^१ की मादाका काज़ी नाम है’

फ़िक्करेबाज़ी—यह व्यंग है जो एक ही वाक्यांशमें ख़त्म हो जाय । यह अधिकतर गद्यमें होता है लेकिन पद्यमें भी कभी कभी आ जाता है । सौदा एक मरियल घोड़ेके लिए कहते हैं:—

पहिए इसे लगाओ कि ता^२ होवे यह रवां^३

हज़ल—देखनेमें ग़ज़लकी बहन मालूम होती है लेकिन है उसकी कुरूप सौत । नाक नक़शा वही है लेकिन बातचीतका ढंग बेहूदासा होता है । गंभीरता उसमें लगभग नहीं ही होती, चिंतनका कहीं नाम नहीं । ‘जरीफ़’ की हज़लके तीन शेर सुनिए:—

^१पगड़ी, ^२धार्मिक न्यायाधीश, ^३एक पक्षी, ^४ताकि, ^५चालू,

‘मुंह फुला कर तिश्नाकामाने मुहब्बत’ को हुजूर
 शर्बते-दीदारका पूरा घड़ा देने लगे
 ‘जबसे आशिक हो गये उस बुत पे चौकीदार तक
 सोने वाले जागते रहना सदा’ देने लगे’
 ‘उनके बीमारोंका घुंघरू बोलना जब सुन लिया
 जल्दी जल्दी ताल मिस्टर कालका देने लगे’

हज़लमें गज़लकी तरह ही प्रेमका विषय होता है, उसी तरह हर शेर अलग होता है और रदीफ़ काफ़ियेकी पाबंदी भी वैसी ही होती है ।

हजो^१—परिहासमें इस काव्यांगका वही दर्जा है जो गंभीर कवितामें कसीदाका । यह लम्बी और सम्बद्ध कविता होती है । इससे सुधारका भी काम लिया जा सकता है । लोगोंकी बुराइयोंको स्पष्ट करनेके लिए इसका प्रयोग हो सकता है । इसे प्रभावशाली बनानेके लिए इसमें फ़वती, ताना सभीका समावेश किया जा सकता है ।

परिहासके जितने अंग हमने यहां गिनाये हैं उनमें हमारे विचारसे सबसे महत्वपूर्ण हजो ही है । पहले तो इस कारण कि उसमें खुद बहुत से गुण हैं, और दूसरे इस लिए कि इसका भंडार विशाल है और तीसरे इसलिए कि इसका प्रभाव भी व्यापक हुआ है । अब तक भी जो परिहास काव्य प्रचलित है वह भी इसी ढंगका है । वर्णनशैली भिन्न है, दृष्टिकोण भी दूसरा है, वर्तमान कवि परिहासके उपयोगी पहलू पर भी ध्यान देते हैं, फिर भी हजो को परिहास काव्यकी मां कहना ही पड़ेगा ।

हम खुद इस पक्षमें हैं कि हमारा वर्तमान परिहास काव्य हजोसे अलग रखा जाय और उसका नाम भी कुछ और हो, क्योंकि जैसे मांसे

कुछ बेटियां आगे बढ़ जाती है उसी तरह हमारी वर्तमान परिहासकी कविताएं हजोसे बहुत अच्छी और उपयोगी साबित हुई हैं।

पुराने जमानेमें 'सौदा' परिहासके क्षेत्रमें अग्रणी थे। इस वहादुरने अपने व्यंगवाणोंसे किसीको न छोड़ा। न उसे धर्म गुरुओंका ख्याल है न रण योद्धाओंका भय। औरत हो या मर्द, बूढ़ा हो या जवान, विद्वान हो या मूर्ख—वह सब पर बरस पड़ता है और ऐसा बरसता है कि उन्हें हमेशाके लिए खामोश कर देता है। अपने जोशमे वह कभी कभी सभ्यताकी सीमा भी लांघ जाता है।

सौदाकी परिहासात्मक कविताओंको निम्नलिखित वर्गोंमें बांटा जा सकता है:—

(१) केवल व्यक्तिगत निंदाएं जिनका सार्वजनिक मूल्य कुछ नहीं है,
(२) ऐसे लोगोंकी निंदाएं जो गुणी न होते हुए अनेकों गुण दिखाकर लोगोंको धोखा देना चाहते हैं,

(३) नैतिकतासे अलग होकर धर्मकी ओटमें दूसरोंपर गलत आपत्ति करनेवालोंकी निंदाएं,

(४) सामाजिक, राजनीतिक, नैतिक और कलात्मक आलोचनाओसे सम्बन्धित कविताएं। इनमे सौदाने व्यक्तिगत बातोंसे ऊपर उठकर अपने कालके सर्वसाधारणके जीवनका चित्रण परिहासके ढंगसे किया है। ऊपरी नज़रसे मालूम होता है कि कविका उद्देश्य पाठकोंको हँसाना भर है लेकिन गहरी नज़रसे देखिए तो साफ़ मालूम होता है कि कहनेवाला रो रहा है लेकिन चाहता है कि आप अपनी और अपने पूर्वजोंकी दशा पर हँसते-हँसते रोने लगे और हमेशाके लिए आंखे खोल लें।

सौदाके बाद अगर कोई इस क्षेत्रमें चमक सकता था तो वह इंशा थे। इस इंशाकी सबसे घुलने-मिलनेकी आदत, ज्ञान, मुंहफट-पन, भाषा पर अधिकार आदि सब कुछ योग्य था कि वे इस अंगको और चमकाते लेकिन

वे जिस वातावरणमें थे उसमें आम जनताका गुजर भी नहीं था। वे उस वर्गके साथ थे जिसके लिए जीवनकी साधारण आवश्यकताओंका कोई मूल्य ही न था। और जहां दिमागी गंदगी पूरी तरहसे जमी बैठी थी। मसहफीने सौदासे ही व्यक्तिगत आक्षेप करना सीख लिया था। उनकी सौदासे कई चोटें चल चुकी थी। जब इंशा लखनऊ आये तो इनसे भी चलने लगी। कवितामें यह कुरूपता इतनी आयी कि हाथापाई तक होने लगी, दरबारके बाहर भगड़े होने लगे और इन लेखनी शूरोंको अलग करनेके लिए फ़ौजियोंकी जरूरत होने लगी। इंशा और मसहफी दोनोंने हजो कहीं लेकिन वे केवल व्यक्तिगत ही थी, उनमें कोई भी बात सार्व-भौमिक और उपयोगी नहीं थी।

इंशाके विचार ऊंचे नहीं तो उनकी कला परिहासके संसारमें गंदी नालियोंमें उलझकर रह गयी वही आसमान पर उड़ती दिखायी देती। और जनसाधारण उसके साथ होते। इंशाने अपनी कविता दरबारदारी तक ही सीमित कर दी थी। उन्हें हमेशा नवाबको खुश करनेकी फ़िक्र रहती थी। वे गद्य पद्य दोनोंमें ही मसखरेपनके बग़ैर एक कदम भी नहीं चले।

इस युगके बाद परिहास क्षेत्रमें सन्नाटा सा छा गया। भूले भटके कहीसे एक आध हजो सुनायी भी दीं तो ऐसी जिनका न कोई उद्देश्य था न जो इंशा और सौदाके मुक्ताबलेमें कहीं ठहरती है।

ग़दरके बाद परिहासके लिए दिल्ली और लखनऊ दोनोंके दिल बुझ गये थे। बर्बादीने हँसी खुशी बुरी तरह दबायी थी। एक मुद्दतके बाद परिहासका श्रोत फिर फटा तो ऐसी जगहमें जहां पहले किसीकी नज़र ही नहीं जा सकती थी, इस ढंगसे जो बिल्कुल नया था और ऐसे उद्देश्यके साथ जो नश्वर बन कर उस समयके फोड़ेको ठीक करके स्वर्गीय ‘अकबर’ ने गुल और बुलबुलके संसारमें न मालूम कहाँसे यह मीख लिया था कि अगर

देश और जातिकी उन्नति करनी है तो शृंगारिक काव्य और ग़ज़ल क़सीदा का पुराना हथियार काम न देगा और न कोरे उपदेशोंसे काम चलेगा। उन्होंने लोगोंको हँसा हँसा कर हलाया, किसी व्यक्ति विशेष पर व्यंग न किया बल्कि विशेष व्यक्तियोंको लक्ष्य करके अपनी बात सभीके लिए कह दी।

‘अकबर’की कवितामें जो सबसे पहली चीज़ दिखायी देती है वह बड़ी उपयोगी है। उर्दू काव्यमें बहुत दिनोंसे यह कमज़ोरी आ रही थी कि वह सर्वसाधारणसे दूर होता जा रहा था। मौदाके बाद सबसे पहले ‘अकबर’ ही इस रास्ते पर आगे बढ़े किन्तु उनका ढंग बिल्कुल अलग था यानी वह सोद्देश्य था। वे अपने नौजवानोंको पश्चिमीयताकी बाढ़में बहते देखकर घबरा गये। वे उनकी नक़लवाज़ीका मज़ाक उड़ाने लगे। उन्होंने अपने पूर्वजोंकी भांति किसी व्यक्तिवर्ग विशेषकी खाल उधेड़ने तक ही सीमित न रखा। सर सय्यदसे लेकर जुम्मन और बुद्दूके भटकाव पर वे खुल कर हँसे, राजनीतिसे लेकर कोट पतलून तक को ले डाला और सबकी धज्जियां उड़ा कर रख दीं। उनका उद्देश्य यह था कि हर वह व्यक्ति या संस्था जो अकारण ही साधारणतासे हट गयी है ठीक रास्ते पर आये। मौदा वग़ैरहके विपरीत ‘अकबर’की कविता बाज़ारूपनसे बिल्कुल साफ़ है। उसमें कोई शब्द या कोई विचार ऐसा नहीं आता जो सम्यसे सम्य समाजके लिए भी अनुचित हो।

‘अकबर’का परिहास हज़ो किसी तरह नहीं कहा जा सकता। सौदा इंशा वग़ैरहसे उनकी तुलना करना ग़लत है। हमने इस सम्बन्धमें जो कुछ कहा है वह भी सिर्फ़ उर्दू काव्यके परिहासात्मक अंगको दिखानेके लिए है। वैसे सौदा और ‘अकबर’के परिहासमें आकाश पातालका अंतर है।

हास्यरसकी कविताएँ

बाहम^१ शबे-विसाल^२ गलत फ़हमियाँ हुई,
मुझको परीका शुब्ह^३ हुआ उनको भूतका ।

✓ मुल्की तरक्कियोंमें दिवाले निकालिये,
पलटन नहीं तो खैर, रिसाले^४ निकालिये ।
काफ़ी है बहरे-शाल^५ कलीसाएँ^६-फ़िक्के-रिज़क^७
अब दिलसे मसजिद और शिवाले निकालिये ।

✓ जापान-ओ-रूससे नहीं कुछ वास्ता हमे,
खर्चकी याँ तो बहस है तिब्बतकी बात है ।
✓ बी० ए० भी पास हों मिले बीवी भी दिल पसन्द,
मेहनतकी है वो बात, ये क्रिस्मतकी बात है ।
तहजीबे-मग़रोबीमें^८ है बोसें^९ तलक मुआफ़,
इससे अगर बढ़ो तो शरारतकी बात है ।

उठाना पड़ता था दिन रात बारे-उलफ़ते-खूबाँ^{१०}
जवानी बया थी नेचर^{११} ने मुझे बेगार पकड़ा था ।
✓ इस क़दर था खटमलों का चारपाई में हुजूम
वरल^{१२} का दिल से मेरे अरमान रहसत हो गया ।

^१परस्पर, ^२मिलनकी रात ^३सन्देह ^४पत्रिकाएँ ^५दिलचस्पीके लिए
^६गिरजा ^७रोटीकी चिन्ता ^८पश्चिमी सभ्यतामें ^९चुम्बन ^{१०}हसीनोंकी
मुहब्बतका बोझ ^{११}प्रकृति ^{१२}मिलन

✓ मेरी तकरीर^१ का उस 'मिस' पे कुछ क़ाबू नहीं चलता,
 जहाँ बन्दूक चलती है वहाँ जादू नहीं चलता।
 कमर बांधी भी यारोंने जो राहे हुब्बे-क़ौमी^२ में,
 ये बोले 'तू नहीं चलता', वो बोले 'तू नहीं चलता।'
 कहा पीरे-तरीक़तने^३ अकड़कर अपनी टमटमपर
 ये वो मंज़िल है जिसमें शैख़का टट्टू नहीं चलता।

यह बात ग़लत कि मुल्के-इस्लाम है हिन्द,
 यह झूठ कि मुल्के-लछमन-ओ-राम है हिन्द।
 हम सब हैं मुती-ओ-ख़ैरख़वाहे^४-इंगलिश,
 योरपके लिये बस एक गोदाम है हिन्द।
 अफ़सोस है बदगुमाँ^५ की आज़ादी पर,
 ख़ालिफ़^६ कभी ख़ुश न होगा बरबादी पर।
 ताऊन^७ से बयों है इतनी वहशत^८ 'अकबर'
 यह तो एक टैक्स है इस आबादी पर।

✓ हुआ इस क़दर मुहज़ज़ब^९ कभी घर का मुंह न देखा
 कटी उम्र होटलोंमें मरे अस्पताल जाकर।
 दाख़िल मेरी दानिस्त^{१०} में यह काम है पुन^{११} में
 पहुँचायगा क़ूबत^{१२} शज़रे-मुल्क^{१३} की बुन^{१४} में।
 तहरीके-स्वदेशी^{१५} पे मुझे वज्द^{१६} है 'अकबर'
 क्या ख़ूब ये नग़मा^{१७} है छिड़ा देशकी धुनमें।

^१भाषण ^२राष्ट्रप्रेम ^३पथ प्रदर्शकने ^४आज्ञाकारी
 और शुभचिन्तक ^५बुरी भावना वाला, शक्ति ^६निर्माता ^७प्लेग
 'परेशानी घबराहट ^८सम्य ^९समझमें ^{१०}पुण्य ^{११}शक्ति ^{१२}देशका वृक्ष
^{१३}जड़ ^{१४}स्वदेशी आन्दोलन ^{१५}अत्यधिक प्रसन्नता ^{१६}गीत

✓इनायत^१ मुझ पै फ़रमाते हैं शैख-ओ-बरहमन दोनों,
मुआफ़िक अपने अपने पाते हैं मेरा चलन दोनों।
तराने मेरे हम-आहंगे-दैर-ओ-काबा^२ हैं यकसाँ,
जबों पर मेरी मौजू होती हैं हम्द^३-ओ-भजन दोनों।
मुझे होटल भी खुश आता है और ठाकुरदुवारा भी,
तबर्क^४ है मेरे नज़दीक़ प्रसाद और 'मटन' दोनों।

गोलियोंके जोरसे करते हैं वो दुनियाको हज़म,
इससे बेहतर इम ग़िज़ा^५ के वास्ते चूरन नहीं।

ये बोले रो के पीरू और गयादीन,
धरम दुनियासे उट्ठा और गया दीन^६
हिन्दु-ओ-मुस्लिम एक है दोनों,
यानी ये दोनों एशियाई हैं
हम वतन, हम जबों व हम क्रिस्मत,
क्यों न कह दूँ कि भाई भाई हैं।

या कसके कमर पए-खुशामद^७ बांधो,
या हुजरेमें^८ घुसके बँठो तहमद बांधो।
क्या फ़ायदा बेक़रीनगी^९ से ए शैख़ !
बेहतर है यही कि अपनी एक हद बांधो।

दुनिया ही अब दुरुस्त^{१०} है, कायम न दीन^{११} है,
ज़र^{१२} की तलबगे शैख़ भी कौड़ीका तीन है।

^१कृपा ^२हम आहंग—मिले हुए दैर=मंदिर काबा=पवित्र स्थान
(मुसलमानोका) ^३खुदा की तारीफ़ ^४प्रसाद ^५भोजन ^६धर्म
^७पए=लिये, खुशामदके लिये ^८मसजिदमें रहनेकी कोठरी ^९बेढगापन
^{१०}ठीक ^{११}धर्म ^{१२}धन

✓ एक दिन वो था कि दब गए थे लोग दीनसे,
एक दिन ये है कि दीन दबा है मशीनसे ।

बिला ताकत तहे-अफ़लाक^१ इन्सांकी नहीं चलती,
वहाँ तो रेल चलती है, यहाँ रोटी नहीं चलती ।

✓ थे ‘केक’ की फ़िक्क में सो रोटी भी गई
चाही थी शं^२ बड़ी सो छोटी भी गई ।
वाइज^३ की नसीहतें न मानीं आखिर,
पतलूनकी ताकमें लँगोटी भी गई ।

✓ गाहकको मोल भावकी परवा नहीं रही,
मांभीको अपनी नावकी परवा नहीं रही ।
दिलको कहीं लगावकी परवा नहीं रही,
चूहोंको नान पावकी परवा नहीं रही ।

✓ कौंसिलमे नुक्ताचीनों^४ की टोली बहुत पिटी,
अच्छा हुआ सँभल गई अब यूनिवरसिटी ।
बेकार कालिजोंसे भरेगा न हर सिटी,
इस बिलसे ये शिकायते-अहबाब^५ भी मिटी ।

मेरी नज़रोंमें एकसाँ है शुतर^६ हो या गऊ माता,
मुझे करते जो वो मदऊ^७ कथामे मैं भी भ्रूम आता ।

✓ जमाना कह रहा है सबसे फिर जा,
न मंदिर जा, न मसजिद जा, न गिरजा ।

^१आकाशोंके नीचे, मुसलमानोंमें मान आकाश माने जाते हैं ‘चीज

^२उपदेशक ^३टीका करनेवालों ^४‘मित्रोंकी शिकायत ^५ऊँट ^६आमत्रिन

✓ ऐसा शौक न करना 'अकबर' गोरेको न बनाना साला,
भाई रंग यही है अच्छा हम भी काले यार भी काला ।

पानी पीना पड़ा है पाइपका,
हर्फ^१ पढ़ना पड़ा है टाइपका ।
पेट फूला है, आँख आई है,
शाह एडवर्ड^२ की दुहाई है ।

पका लें पीसकर दो रोटियाँ थोड़ेसे जी लाना,
हमारी क्या है ए भाई न मिस्टर है न मौलाना ।

अंधेर मचा है जेरे-फलक,^३ खिलकत^४ भी है चुप और राज भी चुप,
हम देख रहे हैं आँखोंसे, पर कल भी थे चुप और आज भी चुप ।
साहबजादे नश्वे^५ में हैं, और 'बीक'^६ कुँवर जो का है 'टिफिन'^७
है मौलवी साहब क़िबला^८ भी चुप, और पंडित जी महाराज भी चुप ।

हर रंगकी बातोंका मेरे दिलमें है भुरमुट,
अजमेरमें कुलचा^९ हूँ, अलीगढ़में हूँ बिस्कुट ।
पाबन्द किसी मशरब-ओ-मिल्लत^{१०} का नहीं हूँ,
घोड़ा मेरी आजादीका अब जाता है बगटुट ।

• कूदते फिरते हैं ये बागमें मल्लूकी तरह,
बागबां दबके हुए बैठे हैं उल्लूकी तरह ।
इन नई रोशनी वालोंसे नहीं है कुछ फ़ैज,^{११}
शबे तारीक^{१२} में चमका करें जुगनूकी तरह ।

^१अक्षर ^२सम्राट एडवर्ड सप्तम ^३आकाशके नीचे ^४जनता ^५गोमांस
^६बजुर्गोंको क़िबला कहते हैं ^७बिस्कुटका ही एक नाम ^८मशरब=डग,
तौर तरीका ^९मिल्लत=धर्म, सम्प्रदाय ^{१०}लाभ ^{११}अधेरी रात

✓ इनकार नहीं नमाज रोजेसे मुझे,
लेकिन ये तरीक़ा^१ अब है फ़ैशनके खिलाफ़ ।

उन्हें शौक़े-इबादत^२ भी है और गानेकी आदत भी,
निकलती है दुआएँ उनके मुँहसे ठुमरियाँ होकर ।
तअल्लुक़^३ आशिक़-ओ-माशूक़का एक लुत्फ़ रखता है,
मजे अब वो कहाँ बाक़ी रहे बीबी मियाँ होकर ।
न थी मुतलक़ तवक्को^४ ‘बिल’ बनाकर पेश कर दोगे,
मेरी जाँ ! लुट गया मैं तो तुम्हारा मेहमाँ होकर ।
हकीक़तमें मैं बुलबुल हूँ मगर चारेकी ख़्वाहिश मे,
बना हूँ मेम्बरे-कौंसिल यहाँ मिट्ठू मियाँ होकर ।
✓ निकाला करती है घरसे ये कहकर तू तो मजनुँ है,
सता रक्खा है मुझको सासने लंलाकी माँ होकर ।

आगे इंजनके दीन है क्या चीज़,
भंसके आगे बीन है क्या चीज़ ।

हम क्या ख़ाली हवाई गोला छोड़े
किस जोग के बल पर अपना चोला छोड़े
हज़रत ने तो छावनी में रक्खी है दुकाँ
हम क्यों अपना मुहल्ला-टोला छोड़े

योरप वाले जो चाहें दिल में भर दें
जिसके सिर पर जो चाहें तोहमत^५ धर दें

^१तीर तरीक़ा ^२पूजा पाठका शौक ^३सम्बन्ध ^४आशा
^५आरोप, दोष

बचते रहो इनकी तेज़ियोंसे 'अकबर'
तुम क्या हो, खुदाके तीन टुकड़े कर दे ।

✓ कोठीमें जमअ है न 'डिपाज़िट'^१ है 'बैंक्स'^२ में,
कल्लाश^३ कर दिया मुझे दोचार 'थैंक्स'^४ में ।

शबोंमें 'कोर्स'^५ दिनमें 'फ़ारमूला'^६ 'वर्क'^७ करते हैं
अदीमुल-फ़ुरसती^८ से उनकी उलफ़त तर्क^९ करते हैं ।

✓ रक़ीबों^{१०} ने रपट लिखाई जा जाके थानेमें,
कि 'अकबर' ज़िफ़ करता है खुदा का इस ज़माने में ।

वो लुफ़ अब हिन्दू-ओ-मुसलमाँ में कहाँ,
अग़ियार^{११} इन पर गुज़रते हैं ख़न्दा-जनों^{१२} ।
भगड़ा कभी गायका, जबाँकी कभी बहस,
है सलत मुज़िर^{१३} ये नुस्ख़ए-गाव-ज़बाँ^{१४} ।

वो ऐसी रीश^{१५} वालेको भला कब पान देते हैं,
जनाबे-शैख़ नाहक इस हविस^{१६} में जान देते हैं ।

✓ मजहबने पुकारा ए 'अकबर' ! अल्लाह नहीं तो कुछ भी नहीं
यारोंने कहा—'ये कौल ग़लत, तनह्वाह नहीं तो कुछ भी नहीं' ।

^१जमा ^२बैंकोंमें ^३कगाल ^४धन्यवादों ^५पाठ्य-विषय ^६सूत्र
^७काम करना या हल करना ^८फ़रसत न होना ^९त्यागना ^{१०}प्रतिद्वंद्वियों
^{११}शैर, दुश्मन ^{१२}हंसते हैं ^{१३}हानिकारक ^{१४}गाव-ज़बान (एक दबा) का
नुस्खा, यहाँ गाय और भाषाके सवालको मिलाया गया है ^{१५}दाढ़ी ^{१६}लोभ

हम ऐसी कुल किताबे काबिले-जब्ती^१ समझते हैं,
कि जिनको पढ़के लड़के बापको खबती^२ समझते हैं।

शौक्रे-लैलाए-सिविल-सर्विसने मुझ मजनूनको,
इतना दौड़ाया लँगोटी कर दिया पतलूनको।

क्रौमसे मय^३ की सिफारिश क्या करूँ,
नेकको शंतान कर देती है यह।
एक जौहर है फ़क़त इसमें मुफ़ोद^४,
खुदकुशी^५ आसान कर देती है यह

'अकबर'का नगमा क्रौम के हक़में मुफ़ोद है,
दिलको तो गर्म रखता है गो बेसुरा सही।

✓ सुनता नहीं लेक्चर, मैं पड़ा रहता हूँ दिन रात,
लगता है फ़क़त लेडियोंमें वक्ते-डिनर^६ जी।

दर पर मज़लूम^७ एक पड़ा रोता है,
बेचारा बलामें मुब्तिला^८ रोता, है।
कहता है वो शोख़ ताल सम ठीक नहीं,
क्या इसकी सुनूँ कि बेसुरा रोता है।

✓ शोख़ साहब देखकर उस 'मिस' को साकित^९ हो गए,
मास्टर साहब बहुत कमज़ोर थे चित हो गए।

^१जबन करने योग्य ^२भागल, सनकी ^३शराब ^४लाभदायक ^५आत्म
हत्या ^६रातके खाने के समय ^७पोड़ित ^८मुसीबतमें फँसा ^९स्वस्थ

- ✓ अपनी गिरहसे कुछ न मुझे आप दीजिये,
अखबारमें तो नाम मेरा छाप दीजिये ।
देखो जिसे वो 'पानिघर'^१ आफ़िसमें है डटा,
बहरे-खुदा^२ मुझे भी कहीं छाप दीजिये ।
- ✓ दावा बहुत बड़ा है रियाज़ी^३ मे आपको,
तूले-शबे-फ़िराक़^४ ज़रा नाप दीजिये ।
- ✓ सुनते नहीं हैं शौख नई रोशनीकी बात,
इंजनकी इनके कानमें अब भाप दीजिये ।

कामियाबीका स्वदेशीपर हर एक दर-बस्ता^५ है,
चोंच तोतारामने खोली मगर पर-बस्ता^६ है ।

- ✓ न कुछ इन्तज़ारे-गज़ट कीजिये,
जो अफ़सर कहे बस वो भट कीजिये ।
कहाँका हलाल और कैसा हराम,
जो साहब खिलाए वो चट कीजिये ।
बहुत शौक अंग्रेज़ बननेका है,
तो चेहरेपर अपने गिलट^७ कीजिये ।
अजल^८ आई 'अकबर' गया वक़ते बहस
अब 'इफ़' कीजिये और न 'बट' कीजिये ।
-

सब समझते हैं कि ये इश्क़े-बुताँ^९ एक रोग है,
लेकिन इसको क्या करे मिलता जो मोहन भोग है ।

^१प्रसिद्ध अंग्रेज़ी दैनिक ^२खुदाके लिये ^३गणित शास्त्र ^४विरहकी रातकी लम्बाई ^५द्वारबन्द ^६पर बँधा हुआ ^७मुल्ममा ^८मृत्यु ^९मुन्दरियोका प्रेम

✓ शाहिदाने-मगरिबी^१ करते नहीं मुझको कुबूल^२
डाँट देते हैं ये कहकर 'आप काला लोग है।'

बाबू साहबने कहा एक बाग है मेरा कलाम^३
इसमें क्या शक है, मगर ये बाग 'शालामार' है।

✓ शैखजी घरसे न निकले और मुझसे कह दिया,
आप बी. ए. पास है तो बन्दा बीबी पास है।

✓ मुमकिन नहीं ए 'मिस' तेरा 'नोटिस'^४ न लिया जाय
गाल ऐसे परीजाद^५ हों और 'किस'^६ न लिया जाय।

लन्दन में बिगड़ जाओगे वसवास^७ यही है,
तुम पास रहो मेरे बड़ा 'पास'^८ यही है।
उर्दू के तीन रुबअ^९ के मालिक है खुद हुनूद^{१०},
फिर क्या सबब जो इससे उन्हें इनहराफ़^{११} है।
यानी उरद है चीज उन्हींके मजाक^{१२} की,
उर्दू के तीन जुज्व^{१३} यही साफ़ साफ़ है।

कुछ शक नहीं कि हजरते-वाइज है खूब शरस,
यह और बात है कि जरा बेवकूफ़ हैं।

शैख से छूटे, उलझे इंजन में,
उसमें बक बक थी इसमें भक भक है।

^१अंग्रेज़ सुन्दरियाँ ^२स्वीकार ^३कविता ^४'notice' ^५'मुन्दर' ^६'kiss'
चम्बन ^७'सन्देह' ^८'सफलता' ^९'तीन चौथाई' ^{१०}'हिन्दू' ^{११}'इनकार कर गये'
हैं ^{१२}'हचि' ^{१३}'टुकड़े'

भड़की है दिलकी आग खालिनके इश्क में,
अहबाब^१ हँसते हैं कि ये कंडेकी आग है।

✓हमसे शबे-विसाल^२ वो बेमेल हो गए,
अफ़सोस 'इन्टेन्स'^३ में हम फ़ेल हो गए।

इनको क्या काम है मुरव्वत से,
अपने रुख़से ये मुँह न मोड़ेंगे।
जान शायद फ़रिश्ते छोड़ भी दे,
डाक्टर फ़ीसको न छोड़ेंगे।
राह तो मुझको बतादी खिज़्र^४ ने,
ऊँट का लेकिन किराया कौन दे।

होता है नफ़ख़^५ योरोपियन नान पाव से,
मैं खुश हूँ एशियाके ख़याली पुलाव से।
ईमान बेचने पै है अब सब तुले हुए,
लेकिन ख़रीद हो जो अलीगढ़के शाव से।
धमका के बोसा लूंगा रुख़े-रश्के-माह^६ का,
चन्दा वसूल होता है साहब दबाव से।

चिट्ठी उस मिस की है कि यह जादू है,
दिल जोशे-मफ़ाख़रत^७ से बे क़ाबू है।

^१मित्रगण ^२मिलनकी रात ^३हाईस्कूल, प्रवेश ^४भलों भटकोंकी राह बतानेवाले एक पैगम्बर ^५पेट फूलना ^६चाँदकी जिससे ईर्ष्या हो उसके चेहरे ^७गर्व

ऐसी परी और हमको प्यारा लिखे,
अलकाब' मे देखिये डियर कल्लू है।

✓ नुक्ता^१ ये सुना है एक बंगाली से,
करना हो बसर जो तुमको खुशहाली से।
खाली हो जगह तो अपने भाई को दिलाओ,
गुस्सा आए तो काम लो गाली से।

आशिकीका हो बुरा इसने बिगाड़े सारे काम,
हम तो बी.ए. मे रहे, अगियार^२ बी.ए. हो गए।
मिलता नहीं घी तो खश्क^३ रौटी ही सही,
नेमत^४ जो बड़ी नहीं तो छोटी ही सही।
मैं क़ौमकी फ़रबही^५ का मुशताक^६ नहीं
बस जाइये मेरी अकल मोटी ही सही।

निकाला शेख को मजलिससे उसने यह कहकर,
ये बेवक़ूफ़ है मरनेका ज़िक्र करता है।

आदत जो पड़ी है हमेशा से, वो दूर भला कब होती है,
रक्खी है चुनौटी पाकिट में, पतलून के अन्दर धोती है।

पढ़के अंग्रेज़ीमे दाना^७ हो गया,
कम^८ का मतलब ही कमाना हो गया।

^१सिरनामा, ^२भेदकी बात ^३दुश्मन ^४सूखी ^५नियामत ^६मोटाई
^७इच्छुक ^८विद्वान ^९come आना

छोड़ लिट्रेचर^१ को अपनी हिस्ट्री^२ को भूल जा,
शैख-ओ-मसजिदसे तअल्लुक^३ तर्ककर स्कूल जा ।
चार दिन की जिन्दगी है कोपत^४ से क्या फ़ायदा,
खा उबल रोटी, कलक़ीकर^५ खुशीसे फूल जा ।

✓ मैं हुआ रहसत उनसे ए 'अकबर',
वस्ल के बाद 'थैक्यू'^६ कह कर ।

कर लिया बीबी ने उनकी 'इन्ट्रेंस'^७ इस साल पास,
वालिदा साहब तो हैं ख़ामोश लेकिन खुश हैं सास ।

/ जिधर साहब उधर दौलत, जिधर दौलत उधर चन्दा,
जिधर चन्दा उधर 'आनर'^८ जिधर 'आनर' उधर बन्दा ।

जिसे मौका मिला वो जा बसा बस्तीसे बंगलेमें,
मज़ा देती है ठुमरी उलफ़ते-क़ौमीके जंगलेमें ।

✓ शैख़ जी दौर^९ में बैठे हुए गाते थे भजन,
निगरां^{१०} सूए-बरहान^{११} थे ब-शौक़े-भोजन ।

पड़े गुनगुनाते थे लाला निरंजन,
न आँखोंमें अंजन, न दातोंमें मंजन ।

^१साहित्य ^२इतिहास ^३पछनाने, चिन्ता करने ^४धन्यवाद ^५इज़्जत,
पदवी ^६मंदिर ^७देखते ^८ब्राह्मणकी ओर

छुटे हमसे बिलकुल वो अगले तरीक़े,
कहाँ खींच ले जायगा हमको इंजन ।

बने बन्दरसे हम इन्साँ, तरक्की इसको कहते हैं,
तरक्की पर भी 'नेटिव'^१ बदनसीबी इसको कहते हैं ।

न लैसन्स हथियारका है न जोर,
कि टर्कीके दुश्मनसे जाकर लड़े ।
तहे-दिलसे हम कोसते हैं मगर,
कि इटलीकी तोपोंमे कीड़े पड़े ।

✓ न दिल पिसता है बिस्कुट पर न मैं पूरीसे लचता हूँ,
मज़ाक़ी हाशियेँ को छोड़कर दोनोंसे बचता हूँ ।
दिले-रंगीं हैं याँ लीला रचानेकी जरूरत क्या,
अकेला बैठकर लीलाकी सूरत खुद ही रचता हूँ ।

वोटोंके स्वास्तगारों^२ मे शंख जी घिरे हैं,
बारह बरस पर आखिर घूरेके दिन फिरे हैं ।

✓ उन्हें धोती मुबारक हो, उन्हें तहमद मुबारक हो,
मुझे पतलून और यारोंको मुझसे कद^३ मुबारक हो ।

क्रिस्मतका नाम लेकर अब भी गिला^४ है जायज़^५,
लेकिन उसीको, बी० ए०, एम० ए० जो हो चुका हो ।

^१देशवासी लेकिन अंग्रेजोंने हिन्दुस्तानियोंके लिये अपमान सूचक अर्थमें 'नेटिव' का प्रयोग शुरू कर दिया था ^२कालत् चीजों ^३इच्छुकों ^४वैर ^५शिकायत ^६उचित

लड़े क्यों हिन्दुओंसे, हम यहाँके उनसे पनपे हैं,
हमारी भी दुआ ये है कि गंगाजीकी बढ़ती हो।
मगर हाँ, शेख जी की 'पालिसी' से हम नहीं वाकिफ़,
इसी पर ख़त्म करते हैं कि जो साहबकी मरजी हो।

ज़र्रे-ज़र्रेसे लगावटकी ज़रूरत है यहाँ,
आक्रियत^१ चाहे तो इन्सान ज़मींदार न हो।

हर घड़ी फ़िक्र है बाज़ारी भी दरबारी भी,
एक मुसीबत है जवानीकी ज़मींदारी भी।

जो पूछा मैंने हूँ किस तरह 'हैपी'^२,
कहा उस 'मिस' ने 'मेरे साथ मय' पो।'

चीज़ वह है बने जो योरप में,
बात वह है जो 'पानियर' में छपे।

चक्कर आया एक ऐसा भूला भूले,
क्रोमी इज्जत की 'हिस्ट्री' को भूले।
जन्नतका खयाल है न बाग़े-दिल का,
गमलोंही पे अब तो रहते हैं हम फूले।

✓ बुनियाद डालते हैं वो हिकमत के बाग़ की,
'द्विस्की' से हो रही है सफ़ाई दिमाग़ की।

दरबारे-सलतनतमें है किन्न^१-ओ-खुदपसन्दी^२,
मजहबमें देखता हूँ जंग और गिरोहबन्दी।
रिन्दी व आशिक्रीका है शाल सबसे बेहतर,
'लेमनेड' है और 'विहस्की', बन्दा है और बन्दी।

✓ गए शरबत के दिन यारोंके आगे अब तो ए 'अकबर'
कभी सोडा, कभी लेमनेड, कभी विहस्की कभी 'टी' है।

रात अफ़सोससे कहते थे ये बंसी भाई,
हमसे नाहक है अलग कानफ़्रेन्सी भाई।

मुमकिन नहीं लगा सके वो तोप हर जगह,
देखो मगर 'पियर्स' का है 'सोप' हर जगह।

✓ वो तो गिरजापर रुका और ये गया काबेको फाँद
शेख़का टट्टू तो इन्जनसे भी बढ़कर तेज़ है।

क्राबिले-रदक है जमानेमे,
दिन वकीलोंका रात आशिक्री।

स्वदेशी गवर्नमेन्टसे लच गई,
ये बाई पिपरमेन्टसे पच गई।

नहीं बदली जबाँ उस शेख़की ये कौन कहता है ?
मैं जब जाता हूँ उसकी बज़म में 'सिट डाउन' कहता है।

^१, घमण्ड और आत्म प्रशस्ति ^२चाय 'भावुन' 'बैठ जाआ

✓ हम क्या कहें अहबाब क्या कारे-नुमायाँ^१ कर गए,
बी० ए० हुए, नौकर हुए, पेन्शन मिली फिर मर गए ।

✓ लिया सुब्हे-शबे-वस्ल^२ उसका बोसा मँने यह सच है,
इसी पर बोल उठी वो शोख मिस ये 'फ़ाइनल टच'^३ है ।

मक्के तक रेलका सामान हुआ जाता है,
अब तो इंजन भी मुसलमान हुआ जाता है ।

मुझको है पसन्द इस सबबसे यू० पी०
यानी यू० पी० का क्राफ़िया है 'रूपी' ।
हैं फ़स्ले-बहारी भी हम-आहंग इसकी
जब आती है करती है इशारा तू पी ।

शंखको गाँठ ले सलीक़ेसे,
चैन कर मगरिबी तरीक़ेसे ।

कुछ इलाहाबाद मे सामां नहीं बहबूद^४ के,
याँ धरा क्या है सिवा 'अकबर' के और अमरूदके ।

राहे-मगरिबमें ये लड़के लुट गए,
वाँ न पहुँचे और हमसे छुट गए ।
शौक़ है पुनका न ताक़त पापकी,
सब है बस बढ़ती बनाते आपकी ।

^१बड़े काम ^२मिलनकी रात की मुवह ^३मिली जुली ^४भलाई

हो चुके हुगलीके 'लेक्चर' अब हमें,

फ़िक्क है गंगा किनारे जाप की ।

✓ वो मिस बोली में करती आपका ज़िक्क अपने 'फ़ादर'^१ से
मगर आप अल्ला अल्ला करता है पागलका माफ़िक्क है ।

अज़ीज़ाने-वतनको पहले हीसे देता हूँ 'नोटिस',
चुस्ट और चायकी आमद है हुक्का पान जाता है ।

कुली एक इस तबीयतका मिला जो कल ये कहता था,
मेरे दिलमें खयालाते-बलन्द आने नहीं पाते ।
सड़क पर काममे तकलीफ़ है बंगले पे बेलुत्फ़ी,
यहाँ साया नहीं है और वहाँ गाने नहीं पाते ।

✓ 'अकबर' दबे नहीं किसी मुलतांकी फ़ौजसे,
लेकिन शहीद हो गए बेगमकी 'नौज' से ।

उन से बीबीने फ़क़त स्कूल ही की बात की,
यह न बतलाया कहाँ रखी है रोटी रातकी ।

✓ नहीं कुछ इसकी पुसिश^२ उलफ़ते-अल्लाह कितनी है,
यही सब पूछते हैं आपकी तनख़्वाह कितनी है ।

अब कहाँ दस्ते-जुनू^३ तारे गरेबाँ अब कहाँ,
'पानियर' और दस्ते-मजनूँ और ख़बर है तार की ।

ले लिया शीरीने कमसरियटमें ठीका दूधका,
रेल बनवाने लगे फ़रहाद अब कोहसार^१ की।

मजहबको शायरीके न पूछें जनाबे-शैख,
जिस वक़्त जो खयाल है मजहब भी है वही।

डिनरसे तुमको कब फ़ुरसत यहाँ फ़ाक़ेसे कब खाली,
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली।

लैलाका नाज़ रहसत, स्कूल 'मिस्ट्रेस'^२ हैं,
सौदाए-क्रैस गायब, अब वो बने हैं 'रीडर'^३।

आने वाले न रहे अंजुमने-दिलकी तरफ़,
कोई कालिजकी तरफ़ है कोई कौंसिलकी तरफ़।

तरक्कीकी तपे^४ हम पर चढ़ा कीं,
घटाकी दौलत, 'इस्पीचे'^५ बढ़ा कीं।
रहीं हिर फिरके आया बी नसीबन,
वो गो स्कूलमें बरसों पढ़ा कीं।

✓ होटलसे भला परहेज़ कहाँ ए पंडित जी महाराज तुम्हें,
सच बात कही जिसने ये कहा जब लाग लगी तब लाज कहाँ।

✓ सर झुका कर उनकी सेवा कर तू गरदनको न तान,
ब्रह्मन योरपको मान और एशियाको शूद्र जान।

^१पहाड़ अध्यापिका reader ^२बुखार ^३व्याख्यान

मोटरसे न गरदन कभी ए यार निकाली,
तूने न मेरी हसरते-दीदार निकाली।

तमाम क्रीम 'एडीटर' बनी है या 'लीडर',
सबब ये है कि कोई और दिल्लगी न रही।

✓ लुफ़ चाहो, एक बुते-नौखेज^१ को राज़ी करो,
नौकरी चाहो, किसी अंग्रेज़को राज़ी करो।

हो खैर यारब 'अकबरे'-आशुपता-हाल^२ की,
'सर्जन' रक्तीब^३ और दवा अस्पतालकी।

देखनेकी तो है यह बात रहा क्या इसमें
आप 'अकबर' से अबस^४ पूछते हैं क्या न रहा।

'रेज्यूलेशन'^५ की शोरिश^६ है मगर उसका असर गायब,
प्लेटोंकी सदा सुनता हूँ पर खाना नहीं आता।
✓ खुदाके फ़ज़लसे बीबी मियाँ दोनों मुहज़्ज़ब^७ हैं,
हिजाब^८ उसको नहीं आता इन्हें गुस्सा नहीं आता।

गरीब 'अकबर' ने बहस पर्देकी की बहुत कुछ मगर हुआ क्या,
नक्काब उलट ही दी उसने कहकर कि करही लेगा मेरा मुआ क्या ?
ये चाय हरगिज़ नहीं है काफ़ी, नहीं है लेमनेडका बन्दा क़ायल
शराब ही हल्क़^९ से न उतरी तो शैख़ साहबने फिर पिया क्या ?

'Editor' नवयुवती मुन्दरी 'परेशान' 'प्रतिद्विन्दी' 'व्यर्थ'
'प्रस्ताव' 'शोरगुल' 'सभ्य' 'लज्जा', शर्म 'गला

दफन कर दो, फ़ातिहा पढ़ दो सिधारो दोस्तो,
यह न पूछो तुम कि मैं क्यों कर मरा और कब मरा ?

✓ खुशीसे शंखे-कालिज सूए-मसजिद^१ अब नहीं चलता,
जहाँ रोटी नहीं चलती वहाँ मजहब नहीं चलता ।

कौंसिलोंमें सवाल करने लगे,
कौमी ताक़तने जब जवाब दिया ।

काम इस मुल्कमें हो 'सेल्फ़ गवर्मेन्ट' से क्या,
जह्ज़को हज़म करे कोई 'पिपरमेन्ट' से क्या ।

क्या गुज़री जो एक पर्देके उदू^२ रो रोके पुलिससे कहते थे,
इज्जत भी गई, दौलत भी गई, बीबी भी गई ज़ेवर भी गया ।

✓ क्या ख़बर कौनसा क्रानून सज़ा देगा मुझे,
मुझ पे इलज़ाम है मजहबकी तरफ़शरीका ।

क्या अजब हो गए मुझसे मेरे दमसाज़^३ जुदा,
दौरे-फ़ानीमें गलेसे हुई आवाज़ जुदा ।
मालगाड़ी पे भरोसा है जिन्हें ए 'अकबर',
उनको क्या ग़म है गुनाहोंकी ग़रांबारी^४ का ।

'पोलिटिकल'^५ भुरोंसे हरगिज़ न साज़^६ करना,
वो चुसद है जो चाहे बुलबुलको बाज़^७ करना ।

^१मसजिदकी ओर ^२दुश्मन ^३साथी ^४बोझिल ^५राजनैतिक ^६मेलजोल
^७बाज़पक्षी

खानसामाँ दोनोंने समझा उन्हें अन्दाज़से,
क्या बताऊँ क्या कहा बेगमने, मिसने क्या कहा ।

✓ तंग दुनियासे दिल इस दौरे-फ़लक^१ में आगया,
जिस जगह मैंने बनाया घर सड़कमें आगया ।

एक दिन और क़यामत^२ खसक आएगी इधर,
और क्या अर्ज़ करूँ आपसे कल क्या होगा ।

खुला दीवाँ^३ मेरा तो शोरे-तहसी^४ बज़म^५ में उट्ठा,
मगर सब हो गए ख़ामोश जब मतबे^६ का 'बिल' आया ।

शेख़ साहब 'जमअबन्दी' में न क्यों उलझे रहें,
हिन्दका इस्लाम ही 'खेवट' में दाख़िल हो गया ।

तहमदमें बटन जब लगने लगे, जब धोतीसे पतलून उगा,
हर पेड़ पे एक पहरा बैठा, हर खेतमें एक क़ानून उगा ।

✓ चश्मे-तर^७ देखकर वो 'मिस' बोली
मोहकमा^८ है ये आबपाशी^९ का ।

'प्रोफ़ेसरों' से हमें कुछ नहीं हासिल 'अकबर'
दिले-आशिक़में समाती नहीं स्कूलकी बात ।
शेख़ 'आनर' के लिए आते हैं मंदानके बीच,
वोट हाथोंमें है 'स्पीच' क़लमदानके बीच ।

^१आस्मानका चक्कर ^२प्रलय ^३कविता संग्रह ^४तारीफ़का शोर
^५महफ़िल ^६प्रेस ^७सजल नेत्र ^८विभाग ^९सिचाई

कौंसिलमें बड़ा रहे हें ताक़त अपनी,
आक़िल है, मुक़रर^१ भी भवानी प्रसाद ।

जहाँ सूई घड़ीकी होती थी वक़्त उसको कहते थे,
गई चोरी तो हम समझे ज़माना इसको कहते हैं ।

तार-बक़ी^२ से हुआ मालूम हाले-ज़ारे-रुस^३,
शोर बरपा है कलीसा^४ में, हरम^५ में, दरमें^६ ।
आस्मानी तोप चलती है कहीं सदियोंके बाद,
लेकिन उड़ जाती है सारी ग़फ़लते^७ दो फ़ैरमें ।

जहाँ दर्शन तुम्हारे हों वहीं धूनी रमाऊँगा,
इलाहाबादका क़ंदी न पाबन्दे-बनारस हूँ ।

✓क़तह-ओ-शिकस्त^८ पर नज़रें आप ही की हों,
अपनी तो दिल-लगी है फ़क़त 'पास' 'फ़ेल'में ।

ज़िल्लत उठा रहा हूँ मैं कुलियोंके गोलमें ।
अच्छे वही जो लिख गए 'आनर' के रोलमें ।

✓ख़ुदा जाने मेरा क्या वज़न^९ है उनकी निगाहोंमें,
सुना है आदमीको वो नज़रमें तोल लेते हैं ।

पड़ जाएँ अभी आबले 'अक़बर' के बदनमें,
पढ़कर जो कोई फूँक दे अप्रैल, मई, जून ।

^१भाषण कर्ता ^२तार, टेलीग्राफ़ ^३रुसके शामक ज़ारका हाल
^४'गिरजा' ^५'मसजिद' ^६'मंदिर' ^७'बेपरवाही' ^८'जीत और हार' ^९'वज़न'

मजहबी बहस मंने की ही नहीं,
फ़ालतू अक्ल मुझमे थी ही नहीं।
पूछा, 'अकबर' हं आदमी कैसा,
हँसके बोले वो आदमी ही नहीं।

क्यों सिविल सर्जनका आना रोकता हं हमनशी^१,
इसमें है एक बात 'आनर' की, शफ़ा^२ हो या न हों।
मौलवी साहब न छोड़ेंगे खुदा गो बरस दे,
घेर ही लेंगे पुलिस वाले सज़ा हो या न हो।
कौंसिलसे आप पर तो 'वार्निश' हो जायगी,
क्रौमकी हालतमें कुछ इससे ज़िला^३ हो या न हो।

क्रासिद^४ मिला जब उनसे, वो खेलते थे 'पौलो'^५
खत रख लिया ये कहकर 'अच्छा सलाम बोलो'।

✓ किसीको भी किसीसे कुछ नहीं इस बाब^६ में भगड़ा,
करो तुम ध्यान परमेश्वरका दिलको उसका दर्शन हो।
मगर मुश्किल तो ये है नाम सब लेते हैं मजहबका,
गरज़ लेकिन ये होती है कथा हो और भोजन हो।

✓ तेरी तनख्वाह बढ़ी शुक्र है लेकिन ए दोस्त
तेरी तो कुछ न तरक्की हुई तनख्वाहके साथ।

✓ ये उनका 'कोर्स' क्या कम है कि मैं भी कुछ कहूँ उनसे,
मेरी जानबसे बस कालिजके लड़कोंको दुआ कहिये।

^१साथी ^२स्वास्थ्यलाभ ^३पालिश ^४पत्रवाहक ^५घोड़ोंपर चढ़कर
गंद खेलनेका खेल ^६विषय

जो कहा मैंने कि प्यार आता है मुझको तुमपर,
हँसके कहने लगे और आपको आता क्या है।
आम इलजाम है 'अकबर' पे कि पीता है क्यों,
इसकी पुसिश नहीं होती कि ये खाता क्या है।

हर तरफसे जो टूटती है आस,
आदमी हरिका नाम जपता है।
गर्मिये-मौसमे-शबाब^१ उफ़ उफ़,
यह समझिये कि जेठ तपता है।

लो निकलना पड़ा सड़कके साथ,
आज तो मेरा घर भी नपता है।

तोप खिसकी 'प्रोफ़ेसर' पहुँचे,
जब बसूला हटा तो रंदा है।

अब न जंगी अलम, न भंडा है,
सिर्फ़ तावीज और गंडा है।

उन्हींके मतलबकी कह रहा हूँ जबान मेरी है बात उनकी,
उन्हींकी महफ़िल सँवारता हूँ चिराग़ मेरा है रात उनकी।

ताकीदे-इबादत^२ पे ये अब कहते हैं लड़के,
पीरी^३ में भी 'अकबर' की ज़राफ़त^४ नहीं जाती।

^१जवानीके मौसमकी गर्मी ^२तूजा पाठ करनेका आग्रह ^३बुढ़ापा
^४हँसोड़पन

आए वो खंजर-ब-कफ़^१ मैं डरके मारे मर गया,
उनकी वर्जिश^२ रह गई मेरी शहादत^३ रह गई ।

'नेचर'^४ में जवानीको तो मौजूद ही पाया,
'साइन्स' से सुनते थे कहीं भूत नहीं हैं ।

✓ मजहबके वास्ते न शराफ़तके वास्ते,
हैं अब तो जंग हुक्म-ओ-तिजारतके वास्ते ।

✓ ले ही गए घसीटके मुझको 'परेड' पर,
तैयार हो रहा था मैं जन्नतके वास्ते ।

दरियामें तो साहबसे 'अगिनबोट' में हारे
मैदाने-एलेक्शनमें गए 'बोट' में हारे ।

✓ जब गम हुआ चढ़ा लीं दो बोटलें इकट्ठी,
मुल्लाकी दौड़ मसजिद 'अकबर' की दौड़ भट्टी ।

तुमसे उस्तादोंमें मेरी शायरी बेकार है,
साथ सारंगीका बुलबुलके लिए दुश्वार है ।

बन्दूकका जो है नहीं लैसन्स, गम नहीं,
हमने तो इस खयाल ही को गोली मार दी ।
हज़रते 'अकबर' से कह दो क्राफ़िला तैयार है,
एक 'रज्यूलेशन' का टटू आप भी कस लीजिये ।

^१हाथमें खंजर ^२कमरत, व्यायाम ^३शहीद होना ^४प्रकृति nature

✓ क्या वो दुरुस्त हो मेरी नज़रोंकी 'फ़ोर्स'^१ से,
फ़ुरसत कहाँ है क़ौमको कालिजके कोर्ससे ।

अबलने अच्छी कही कल लाला मजलिस रायसे,
भुकके चलना चाहिए हम सबको 'वाइसराय' से ।

सेठजीको फ़िक्क थी एक एकके दस दस कीजिये,
मौत आ पहुँची कि हज़रत जान वापस कीजिये ।

इब्तिदा गर्मीकी है अप्रैलसे,
अब मैं घबराने लगा खपरैलसे ।

✓ कानमें बात बुजुर्गोंकी समाती ही नहीं,
नाकमें दम है जवानीके खरीदारोंसे ।

✓ मैं अपने दिलकी कीमत अर्ज ही कर दूंगा बिल आख़िर,
मगर इरशाद तो हो आपकी नीयत कहाँ तक है ।

नज्द^२ में भी मणारिबी तालीम जारी हो गई,
लंला-ओ-मजनूं^३में आख़िर फ़ौजदारी हो गई ।

✓ क़सीदे^४ से न चलता है न ये दोहेसे चलता है,
समझ लो ख़ूब कारे-सलतनत^५ लोहेसे चलता है ।

^१शक्ति ^२मजनूँका जन्मस्थान ^३प्रशस्ति ^५सलतनतका काम

भंडारे दे दूंगा ब-ख़ूशी 'सीधा' जो गुरूजी मांगेंगे,
हाँ काम जरा टेढ़ा होगा बिस्कुटकी जो सूजी मांगेंगे ।

✓लीडरोंकी धूम है और 'फ़ालोअर'^१ कोई नहीं,
सब तो जनरल हैं यहाँ आखिर सिपाही कौन है ?

शिकमसे हज़रते-इन्साँ निजात पा न सके,
अब अपने पेटमें है पहले माँके पेटमे थे ।

ए फ़लक इंगलिश-ओ-जर्मन हो मुबारक तुभको,
हमको तो उर्दू-ओ-हिन्दीमें बसर करना है ।
कर ली है ख़ूब मैंने नई रोशनीकी जांच,
मुभसे बहुत न कीजिये अब आप तीन पाँच ।
इन लीडरोंकी शोला-ज़बानी^२ से क्या हुआ,
हांडी तो सदैव रह गई मज़हब पे आई आंच ।

✓उन्हींकी भंस है भाई कि जिनकी लाठी है,
उन्हींका गाँव है 'अकबर' जो बन सके टाकुर ।

जो देखा साइन्सका ये चक्कर, धरम पुकारा कि ए बिरादर,
हमारे दौरमें पुन मगन थे; तुम्हारे दौरमे पाप खुश है ।

✓तरक्कीकी नई राहें जो ज़ेरे-आस्माँ^३ निकलीं,
मियाँ मसजिदसे निकले और हरमसे बीवियाँ निकलीं ।

^१follower अनुयायी ^२गर्म, उग्र भाषण ^३आकाशके नीचे

मुसीबतमें भी अब यादे-खुदा आती नहीं उनको,
दुआ मुंहसे न निकली 'पाकिटों' से अर्जियाँ निकलीं ।

वो फ़क़त वज़अ^१ के कुश्ता^२ हैं नहीं क़ंद कुछ और
भेंसको 'गौन' पिन्हा दीजिये आशिक़ हो जायें ।

गिरजामें लाट साहब, मसजिदमें शंख़ साहब,
बुद्ध फ़िलास्फीके कमरेमें सड़ रहे हैं ।
खाक उड़ रही है घर में ड्योढ़ीमें गुल मचा है,
मजहबके हैं मुख़ालिफ़ भाई से लड़ रहे हैं ।
✓ तालीम लड़कियोंकी जरूरी तो है मगर,
खातूने-ख़ाना^३ हों वो सभाकी परी न हों ।

✓ 'स्वाह' साहबको तुम सलाम करो
स्वाह मंदिरमें राम राम करो ।
भाई जीका फ़क़त ये मतलब है,
जिसमें रुपया मिले वो काम करो ।

चैनके साथ हम इस वक़्त भी रह सकते हैं,
शर्त ये है कि फ़क़त पेट हो और आँख न हो ।

एक विल्लगी है वक़्त गुज़रनेके वास्ते,
देखो तो मेम्बरोंके ज़रा हेर फेरको ।
ऐसा कमेटियोंसे है फलका उमीदवार,
'अकबर' दरहस्त समझा है पत्तोंके ढेरको ।

मरऊब^१ हो गए हैं विलायतसे शैख जी,
अब सिर्फ मनअ^२ करते हैं देसी शराबको ।

क्यों अपने सर पे जहमते-बेसूद^३ लीजिये,
कौंसिल के बदले घर में उछल कूद लीजिये ।
खा पी के घरमें बैठिये और गाइये भजन,
काशीसे जल, प्रयागसे अमरूद लीजिये ।
हो वज्रअ अपने देशकी माल अपने देशका,
बेहतर है राहे मंजिले बहबूद^४ लीजिये ।

नई महफ़िलकी 'नकटाई' तो गोया तौक़े गर्दन है
वही बुतखाना बेहतर था वही जुम्हार^५ अच्छी थी ।

हर चन्द कि है मिसका 'लवण्डर'^६ भी बहुत खूब
बेगमका मगर इत्रे-हिना और ही कुछ है ।
साएकी भी सन सन हवस अंगेज है लेकिन,
उस शोखके धुंधरूकी सदा और ही कुछ है ।

✓ एजाज बढ़ गया है आराम घट गया है ।
खिदमतमें हैं वो 'लेज़ी'^७ और नाचनेको 'रेडो' ।
तालीमकी ख़राबीसे हो गई बिल आखिर,
शौहर परस्त बीवी, पब्लिक पसन्द लेडी ।

आपकी कार्रवाई पे मैं क्या दूँ इलज़ाम,
कर ही क्या सकते हैं अब आप हिमाक़तके सिवा ।

^१प्रभावित, रोबमें आना ^२मनाही ^३व्यर्थका कष्ट ^४भलाईकी
मंजिल ^५जनेऊ ^६अंग्रेज़ी इत्र ^७lazy मुम्त, आलसी ^८ready तैयार

पाए-मेम्बरी जो उबले, समझ उसको खून अच्छा
ये बजा है क़ौले-शायर 'गज़टेड' जुनून अच्छा ।

✓ होटलमें ब्रह्मनने अगर भोग लगाया,
समझो कि धरमको ये बड़ा रोग लगाया ।

क्या पूछते हो 'अकबरे'-शोरीदा-सर' का हाल
खुफ़िया पुलिससे पूछ रहा है कमरका हाल ।

✓ साइन्सका मतलब है कि 'नेचर' को निचोड़ें,
उस बुतकी ये ख्वाहिश है कि 'अकबर' को निचोड़ें ।

ख़ुदाकी राहमें अब रेल चल गई 'अकबर'
जो जान देना हो इंजनसे कट मरो एक दिन ।

हम उर्दूको अरबी क्यों न करे, उर्दूको वो भाषा क्यों न करे
भगड़ेके लिये अख़बारोंमें मज़मून तराशा क्यों न करे ।

✓ क़ौमके ग़ममें 'डिनर'^१ खाते हैं हुक्कामके साथ
रंज लीडरको बहुत है मगर आरामके साथ ।

हिज़्रकी शब यूँ ही काटो भाइयो
उनकी फ़ोटो लेके चाटो भाइयो ।

'ब्रिगेड'^२ के मौलवीको क्या पूछते हो क्या है,
मगरिबकी पालिसीका अरबीमें तरजुमा^३ है ।

^१परेशान ^२dinner, रातका खाना ^३brigade छावनी
अनुवाद

धुन देशकी थी जिसमें गाता था एक दिहाती,
बिस्कुटसे है मुलायम पूरी हो या चपाती ।

फ़रमाये गए हैं ये ख़ूब भाई घूरन,
दुनिया रोटी है और मजहब चूरन ।

नबूवत^१ का ज़माना और था अब और भुरमुट है
वहाँ सीनेमें कुरआं^२ था यहाँ सीनेमें बिस्कुट है ।

कम्पूका जो हो बार तो घर उसका मिटेगा
बंगलेमें हो तुम और वो मुहल्लेमें पिटेगा ।

नुस्खा तो हाथ लगा डाक्टर अन्सारी^३ का,
बाँध दे ठीक ये अब काम है पंसारिका ।

कमज़ोर है मेरी सेहत^४ भी, कमज़ोर मेरी बीमारी भी,
अच्छा जो रहा कुछ कर न सका, बीमार पड़ा तो मर न सका ।

पहले तो 'सबजज' हुए थे अब हुए हैं जज हुज़ूर,
पहले थे सबसे मिले और अब हुए सबसे जुदा ।

दे दिया फ़ितरतने ठीका बाग़का संयादको,
मौसमे-गुलज़ारमें बुलबुलको चुप होना पड़ा ।

योरपके जागने पर सदियों नज़र नहीं की,
क्रिस्मतको एशियाकी सोना ही चाहिए था ।

^१पैगम्बरी

^२क़ुरान

^३स्वर्गीय डा० अन्सारी, बड़े नेता कांग्रेसके

^४स्वास्थ्य

करते फिरते हैं वो जिक्रे-शीर-माल'
घर मे चूल्हे पर नहीं लेकिन तवा ।

मुझको ये भोल भाल ये घिस घिस नहीं पसन्द,
मातहतिये-रक्कीबमें आफ़िस नहीं पसन्द ।

चोरके भाई गिरहकट तो सुना करते थे
अब ये सुनते हैं 'एडोटर' के बिरादर 'लीडर' ।

इस दरजा भुक पड़े हैं वो 'बीफ़' पर 'मटन'^१ पर
हैं बारे-पेट^२ उनका पतलूनके बटन पर ।
सूरत पर और नसब^३ पर तरजीह^४ दी हुनर को
कस बल जो उसके देखे, दिल आगया नटन^५ पर ।

हम धोएँ गैयाके सींग, तुम बेचो काबुलमे हींग ।
साहब लोगकी गाड़ी दौड़े, जोतें हमको, मारें डींग ।

वो साहब हैं 'परेडों' पर मनो बारूद उड़ती है
ये बाबू हैं कमेटीमे गपे बे सूद उड़ती हैं ।

मुझे भी दीजिये अखबारका वरक^६ कोई
मगर वो, जिसमें दवाओं का इश्तहार^७ न हो ।

कहा उनके बैरे ने गो हूँ शरीक,
ख़यालात हैं गांधी बाबाके साथ ।

^१दूध मैदेकी वनी रोटी ^२गोमांस ^३बकरेका मांस ^४पेटका भार
^५कुल ^६बड़ा समझा, अपेक्षाकृत अधिक महत्व देना ^७नट की औरत
^८पन्ना ^९विज्ञापन

मैं समझूंगा लेकिन यही ‘होमरूल’^१
तअल्लूक़ जो हो जाय आयाके साथ।

दियासलाईकी तेज़ी तो आगई हममे
कसर यही है कि डिबिया उन्हींकी जेबमे है।

सुन लो ये भेद, मुल्क जो गांधीके साथ है,
तुम क्या हो ? सिर्फ़ पेट हो, वो क्या है ? हाथ है।

भाई गांधीका निहायत ही मुकद्दस^२ काम है,
रामपूरी साथ है और राम ही का नाम है।

हमें भगवान्की कृपाने तो बाबू बनाया है
मगर योरपके ‘शाला लोग’ ने उल्लू बनाया है।

शबे-विसालमे गांधीका वअज़^३ आफ़त है
ये हुक्म है कि न बढ़िये लिबासकी हदसे।

मंज़ूर उन्हें इस वक़्त मुलाक़ात नहीं है,
नींद आ रही है और कोई बात नहीं है।
दांतका दर्द बदस्तूर चला आता है,
वही माजू^४ वही काफ़ूर चला आता है।
‘डार्विन’^५ के उसी लेक्चरका सबक़ है अबतक
वही बन्दर वही लंगूर चला आता है।

^१Home Rule ^२पवित्र ^३उपदेश ^४दवा ^५Darwin एक यूरोपीय
महापंडित जिमने सामाजिक विकासका सिद्धान्त प्रतिपादित किया था।

बक^१ के लम्पमे आँखोंको बचाए अल्लाह,
रोशनी आती है और नूर चला जाता है ।

तुम्हारे हाथसे नालाँ है नेचर वरना ए साहब
न ये मोटरका गुल होता न ये इंजनकी पीं होती ।

खुदा इतनी समझ दे भाई जी को
है मुश्किल मेम बनना बाई जीको ।

मैं समझता हूँ फिर उनको दुबारा
बने लहंगा पहन कर क्यों गुबारा ।

चक्करमे है आज 'हिस्ट्री' भी
चरखा भी है और 'मिनिस्ट्री' भी ।

आगे तुम्हारे रंग किसीका न जम सका,
जय हो तुम्हारी ए मेरे गांधी महात्मा ।

लेनेके तुम नहीं हो गवर्नमेन्टकी मदद,
चूरनको क्या जरूर पिपरमेटकी मदद ।
अपनी जगह हरेकका अरमाँ निकल रहा है,
तोपें भी चल रही हैं, जूता भी चल रहा है ।

लेकिन रहा मैं चुपका, दिलमें ये बात सोची,
किस तक्रवियत^२ पर उटूँ इंजीनियर न मोची ।

^१विजली ^२परेशान ^३बल, भरोसे

यही गांधीसे कहकर हम तो भागे
 क्रदम जमते नहीं साहबके आगे ।
 वो भागे हज़रते-गांधीसे कहके,
 मगरसे बैर क्यों दरियामें रहके ।

स्वाह महुआ हो, स्वाह हो अंगूर,
 दोनों अब हैं ब-क्रञ्जए^१ लंगूर ।

मेरी रोट्टी आप ले सकते नहीं,
 क्या मुझे पापड़ भी दे सकते नहीं ।
 मेरी जानिब कुछ नहीं है छूत-छात
 क्यों न पाऊँ गाहे-माहे एक परात ।

जमींदारोंसे कह दो भाइयो बेसूद रोते हो,
 असामी बैल, साहब आदमी, तुम कौन होते हो ।

न शायक हिस्ट्रीका हूँ न मतलब मुझको नाविल^२ से
 मगर होता हूँ खुश इस फ़स्ले सर्मा^३मे रसाबलसे

हमे चरखा वो क्यों देते हैं क्यों खदर पिन्हाते हैं
 वो बोलें तुम क़ुली हो, शकल भी बंसी बनाते हैं ।

जिसके लायक थी जो चीज़ उसको मिली,
 है खुदा ही की तरफ़ हर एक सोर्स^४ ।
 उनका पाकिट और पैदावारे-मुल्क,
 हाफ़िज़ा^५ बन्दे का और कालिजका 'कोर्स'^६ ।

^१क्रञ्जमें ^२Novel उपन्यास ^३मर्दी ^४source साधन,
 ज़रिया ^५स्मृति ^६course पाठ्य-विषय

बड़ी कविताएँ—

जलवाए-दरबारे-दिल्ली

सरमें शौक्रका सौदा^१ देखा
देहलीको हमने भी जा देखा ।
जो कुछ देखा अच्छा देखा
क्या बतलाएँ क्या क्या देखा ।

जमुनाजीके पाटको देखा
अच्छे सुथरे घाटको देखा ।
सबसे ऊँचे लाटको देखा
हज़रत ड्यूक कनाट^२ को देखा ।

पलटन और रिसाले देखे
गोरे देखे, काले देखे ।
संगीने और भाले देखे
बंड बजानेवाले देखे ।

खेमोंका एक जंगल देखा
उस जंगलमे मंगल देखा
बरमा और वरंगल^३ देखा
इज्जत ख्वाहोंका दंगल देखा ।

सड़कें थीं हर कम्प^४ से जारी
पानी था हर पम्पसे जारी ।

^१जून, सनक ^२Duke of Connaught ^३वरंगल ^४camp खेमा

नूरकी मौजें लम्प^१ से जारी
तेजी थी हर जम्प^२ से जारी ।

कुछ चेहरों पर मरदी देखी
कुछ चेहरों पर जरदी देखी ।
अच्छी खासी सरदी देखी,
दिलने जो हालत कर दी देखी

डालीमे नारंगी देखी
महफ़िलमें तारंगी देखी ।
बेरंगी बारंगी देखी
दह^३ की रंगा-रंगी देखी

अच्छे अच्छोंको भटका देखा
भीड़में खाते भटका देखा
मुंहको अगरचे लटका देखा
दिल दरबार से अटका देखा ।

हाथी देखे भारी भरकम
उनका चलना कम-कम, थम-थम
जर्रीं भोले, नूरका आलम
मीलों तक वह चम-चम, चम-चम

सुखी सड़क पर कुटती देखी
साँस भी भीड़ में घुटती देखी
आतशबाजी छुटती देखी
मुफ़तकी दौलत लुटती देखी

^१Lamp रोशनी ^२jump कूद ^३संसार ^४मुनहरे भोल

चौकी एक चौलखी देखी
 खूब ही चक्खी-पक्खी देखी
 हर सू नेमत रक्खी देखी
 शहद और दूधकी मक्खी देखी

एकका हिस्सा मन-ओ-सलवा^१
 एकका हिस्सा थोड़ा हलवा
 एकका हिस्सा भीड़ और बलवा
 मेरा हिस्सा दूरका जलवा

औज^२ वो ब्रिटिश राजका देखा
 परतव-तस्त-ओ-ताजका देखा
 रंगे-जमाना आजका देखा
 रख करजन महाराज का देखा ।

औजे-बस्त मुलाक़ी^३ उनका
 चखें-हफ़्त तबाक़ी^४ उनका
 महफ़िल उनकी साक़ी^५ उनका
 आँखें मेरी बाक़ी^६ उनका

जशने-अज़ीम^७ इस साल हुआ है
 शाही 'फ़ोर्ट'^८ मे 'बाल'^९ हुआ है
 रोशन हर एक 'हाल'^{१०} हुआ है
 क्रिस्सए-माज़ी^{११} हाल^{१२} हुआ है

^१बहुत अच्छी खानेकी चीजे ^२ऊँचाई ^३भलक ^४मिलानेवाला
^५आकाशकी सात परत ^६महान उत्सव ^७fort किला
^८'Ball dance' अँग्रेज़ी नाच ^९'hall' बड़े कमरे ^{१०}अनीनकी
 कहानी ^{११}वर्तमान

हैं मशहूरे-कूचा व बरजन^१
 हाल में नाचीं लेडी करजन^२
 तायरे-होश^३ थे सब के परजन^४
 रश्क^५ से देख रही थी हरजन^६

हालमें चमकीं आके यकायक
 ज़र्रीं^७ थी पोशाक भूकाभक
 मद्द^८ था उनका औज समा^९ तक
 चर्ख^{१०} पै जोहरा^{११} उनकी थी गाहक

की है ये बन्दिश जेह्ने-रसा^{१२} ने
 कोई माने सवाह न माने
 मुनते हैं हम तो ये फ़साने
 जिसने देखा हो वह जाने

^१गली ^२होशके पक्षी ^३उडे हुए ^४ईर्ष्या ^५हर मंत्री ^६छाया
 हुआ ^७आकाश ^८आकाश ^९एक तारा ^{१०}जेह्ने=दिमाग रसा=पहुँच

पानीका बहाव

[अंग्रेजी के प्रसिद्ध कवि साउदी (Southey) की एक मशहूर कविता है जिसमें उसने लोडोर में पानी बहने का दृश्य दिखाया है । अकबर ने उसीको सामने रखकर यह कविता लिखी है ।]

उछलता हुआ और उबलता हुआ
अकड़ता हुआ और मचलता हुआ
ये बनता हुआ और वो तनता हुआ
टपकता हुआ और छनता हुआ
रवानों^१में एक शोर करता हुआ
रुकावटमें एक जोर करता हुआ
इधर फूलता और पचकता उधर
रुख इस सिम्त करता खिसकता उधर
पहाड़ों पे सरको पटकता हुआ
चटानों पे दामन भटकता हुआ
वो पहलू-साहिल^२ दबाता हुआ
ये सज्जा^३ पे चादर बिछाता हुआ
भटकता हुआ गुल मचाता हुआ
वो जल थलका आलम रचाता हुआ
वो गाता हुआ और बजाता हुआ
ये लहरोंको पंहुम^४ नचाता हुआ
इधर भूमता और भटकता हुआ
उधर घूमता और अटकता हुआ

^१बहाव ^२किनारेका पहलू ^३हरियाली ^४बारम्बार

बिफरता हुआ जोश खाता हुआ
 बिगड़ कर वो कफ़ मुँह पे लाता हुआ
 वो ऊँचे सुरोंमें तमध्वज^१ का राग
 वो खुद जोश में आके लाना ये भाग ।
 सुधरता हुआ और सँवरता हुआ
 थिरकता हुआ रक्स^२ करता हुआ
 इधर गँजता गुनगुनाता हुआ
 उधर खुद-ब-खुद भुनभुनाता हुआ
 लिपटता हुआ और चिमटता हुआ
 ये फटता हुआ वो सिमटता हुआ
 समाता हुआ और पिलता हुआ
 सरकता हुआ और मिलता हुआ
 ये घटता हुआ और वो बढ़ता हुआ
 उतरता हुआ और चढ़ता हुआ
 ये हटता हुआ और वो बचता हुआ
 दबाता हुआ और लचता हुआ
 फिसलता हुआ डगमगाता हुआ
 लचकता हुआ लड़खड़ाता हुआ
 वो रूए-जमी^३ को छिपाता हुआ
 वो खाकीको सीमी^४ बनाता हुआ
 गुल-ओ-खार यकसाँ समझता हुआ
 हरेकसे बराबर उलझता हुआ
 बहाता हुआ और बहता हुआ
 हवाके तमाचोंको सहता हुआ

लरजता हुआ, तिलमिलाता हुआ
 बिलकता हुआ, बिलबिलाता हुआ
 बलन्दीसे गिरता गिराता हुआ
 नशेबोंमें फिरता फिराता हुआ
 उचकता हुआ और उड़ता हुआ
 अटकता हुआ और मुड़ता हुआ
 वो खेतोंमें राहें कतरता हुआ
 जमीनोंको शादाब^१ करता हुआ
 ये थालोंकी गोदोंको भरता हुआ
 वो धरती पे एहसान करता हुआ
 ये फूलोंके गजरे बहाता हुआ
 वो चक्करमें बजरे फँसाता हुआ
 लपकता हुआ दनदनाता हुआ
 उमंडता हुआ सनसनाता हुआ
 चमकता हुआ और झलकता हुआ
 सँभलता हुआ और छलकता हुआ
 हवाओंसे मौजें लड़ाता हुआ
 हवाबों की फ़ौजें बढ़ाता हुआ
 तड़पता हुआ जगमगाता हुआ
 शुआओं^२का जोबन दिखाता हुआ
 यँही अलगरज हैं ये पानी रवाँ
 बस अब देख लें शायरे-नुक्ता दाँ^३
 वो 'सौदी'^४ का सैलान आबे-लोडोर^५
 ये बहरे-खयालाते^६ 'अकबर' का जोर

^१पानीसे तर ^२बुलबुलों ^३किरणों ^४नुक्ता पहचाननेवाले शायर
^५'Southey एक अंग्रेज कवि ^६'लोडोरके पानीका बहाव ^७विचार सागर

कान्फ्रेंस

कान्फ्रेंस अहबाब^१ से पुर^२ है
जो सफ़ है वह सिल्के दुर^३ है
सबको याद उस्तादका गुर है
दिलकश हर 'स्पीच' का सुर है

क्रीमी तरक्कीकी राधा प्यारी
बैठी है पहने जोड़ा भारी
नौ मन तेलकी फ़िक्क है तारी^४
चन्देकी तहसील^५ है जारी

लाई है सखियाँ भर कर भोली
खूब खिली है ब्रजमे होली
रंगमें डूबी है सबकी चोली
सबने जबाँ इस गीत पे खोली

शंखको उलफ़त हो गई मिसकी
खूब पिये अब शौकसे 'ग़िहस्की'
अगली दुनिया दहसे खिसकी
बैठा कौन है, शर्म है किसकी

जमअ है मेम्बर भोले-भाले
जाड़ोंका मौसम फूले फाले
आँखें फाड़े दाँत निकाले
चन्दा देकर फँसने वाले

^१मित्रगण ^२भरे ^३मोतीकी माला ^४छायी ^५वमूली

बअज^१ है बादा-ओ-जाम^२ के लवाहाँ
 बअज नमूद-ओ-नाम^३ के लवाहाँ
 बअज फ़क़त आरामके लवाहाँ
 कम है फ़ंजे-आम^४ के लवाहाँ

हरदम क़ौमका रोना क्या है
 इन बातोंसे होना क्या है
 मुफ़्तमें रुपया खोना क्या है
 शोर ज़मीनमें बोना क्या है

तड़पोगे जितना जालके अन्दर
 जाल घुसेगा खालके अन्दर
 क्या हुआ तीस ही सालके अन्दर
 ग़ौर करो इस हालके अन्दर

आज़ादीकी पी के 'ब्राँडी'
 आप चलाते है डंडा बाँडी
 गाता है क़ौमी किश्तीका डांडी
 मक्कतब^५ गर्म है सर्द है हाँडी

ये बे मअनी^६ मजलिस कैसी
 ये नाहक़ की घिस-घिस कैसी ।
 ये बे हुक्मकी आफ़िस कैसी
 बात ये सटरम पोइस कैसी

क़ौमसे उसकी गाढ़ी कमाई
 आपने फ़िक़र^७ देके उड़ाई

^१कुछ ^२शराब और प्याले ^३नाम, ख़्याति ^४जनहित ^५इच्छुक
^६पाठशाला ^७अर्थहीन ^८बात बनाके

और वो यूँ बेसूद गँवाई
शाहे-लन्दन तेरी दुहाई

तुम हो फ़िक्के-जाह' में उलभे
शोहरत-ओ-शान' की चाहमे उलभे
ना फ़हमों' की 'वाह' में उलभे
दिल क्योंकर अल्लाहमे उलभे

जब हों गुरु जी खुद अलबेले
खूब रचाएँ मेले ठेले
राह पर आएँ क्यों कर चले
मंदिरमे क्यों जायँ अकेले

जिसने खेमा यहाँ पर गाड़ा
उसको मुबारक हो ये अखाड़ा
लेकिन क्रीमको क्यों है पिछाड़ा
इस नग्गे' पै गला क्यों फाड़ा

गज़लें

(१)

गमजा^१ नहीं होता कि इशारा नहीं होता
 आँख़ उनसे जो मिलती है तो क्या क्या नहीं होता
 जलवा न हो मअनी का तो सूरतका असर क्या
 बुलबुल गुले-तसबीर^२ का शैदा नहीं होता
 अल्लाह बचाए मरजे-इश्क़से दिलको
 सुनते हैं कि ये आरजा^३ अच्छा नहीं होता
 तसबीह^४ तेरे चेहरेको क्या दूँ गुले-तरसे
 होता है शगुफ़्ता^५ मगर इतना नहीं होता
 हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
 वो क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता

✓ (२)

आज आराइशे-गेसूए-दीता^१ होती है
 फिर मेरी जान गिरफ़्तारे-बला होती है
 फिर किसी कामका बाक़ी नहीं रहता इन्सान
 सच तो ये है कि मुहब्बत भी बला होती है
 खुद समझता हूँ कि रोनेसे भला क्या हासिल
 पर क़हूँ क्या यूँही तस्कीन ज़रा होती है

^१नख़रा ^२फूलके चित्र पर ^३रोग ^४प्रफुल्लित ^५काकुलीका
 वनाव सिंगार

नाला कर लेने दें लिल्लाह न छोड़ें अहबाब
जब्त^१ करता हूँ तो तकलीफ़ सिवा होती है
जिस्म तो खाकमें मिल जाते हुए देखते हैं
रूह क्या जाने किधर जाती है क्या होती है
हूँ फ़रेबे-सितमे-यार का कायल 'अकबर'
मरते मरते न खुला यह कि जफ़ा होती है

(३)

कहूँ किससे क्रिस्सए-दर्द-ओ-ग़म कोई हम नशों है न यार है
जो अनीस^२ है, तेरी याद है, जो शफ़ीक़^३ है, दिले-ज़ार है
तू हज़ार करता लगावटें मैं कभी न आता फ़रेबमें
मुझे पहले इसकी ख़बर न थी तेरा दो ही दिनका ये प्यार है
ये नवेद^४ ओरोको जा सुना, हम असीरे-दाम^५ है ए सबा^६
हमें क्या चमन है जो रंग पर, हमें क्या जो फ़स्ले-बहार है
वो नज़र जो मुझसे मिला गए तो ये और आफ़तें ढा गए
कि हवास-ओ-होश-ओ-ख़िरद^७ है अब, न शकेब^८-ओ-सब्र-ओ-क्रार है
मुझे रह्य आता है देखकर तेरा हाल 'अकबरे' नौहागर^९
तुझे वो भी चाहे खुदा करे कि तू जिसका आशिक़े-ज़ार^{१०} है

✓ (४)

जो उस सरव-ओ-क्रदसे जुदाई हुई है
क़यामत मेरे सर पे आई हुई है
ज़रा देखना फिर उन्हीं चितवनोंसे
ये प्यारी अदा दिलको भाई हुई है

^१अपनेको रोनेसे रोकता ^२माथी ^३स्नेही ^४शुभ सम्वाद
^५जालमें फँसे क़ैदी ^६पवन ^७बुद्धि ^८सहन शक्ति ^९रोनेवाला ^{१०}परेशान

मेरा सोजे-दिल^१ आप क्या देखते हैं ?
 ये आग आप हीकी लगाई हुई है
 नहीं रूए-रंगी पे जुल्फोंका जलवा
 गुलिस्ताँ पे बदली ये छाई हुई है
 न देखेंगे वो इस तरफ आँख उठाकर
 कुछ और उनके दिलमें समाई हुई है
 दिखाते न थे आप यूँ मुझको आँखें
 ये शोखी किसीकी सिखाई हुई है
 जो चाहें करें बेवफ़ाई वो 'अकबर'
 तबीयत मेरी उन पे आई हुई है

(५)

शायरी रंग तबीयतका दिखा देती है
 बूए-गुल^२ रंग गुलिस्ताँ का बता देती है
 सैरे गुरबत^३ कोई जलसा जो दिखा देती है
 यादे-एहबाबे-वतन^४ मुझको खला देती है
 हो न रंगीन तबीयत भी किसीकी यारब
 आदमीको ये मुसीबतमे फँसा देती है
 मौतसे कोई न घबराये अगर ये समझे
 कि ये दुनियाके बखेड़ोंसे छुड़ा देती है
 बदसलूकी तेरी लाती है खराबी मुझपर
 मेरी तकदीरको इल्जाम लगा देती है
 फ़िक्रे 'अकबर'^५ गुले मज़मूँ का दिखाकर जलवा
 महफ़िले-शेर^६ में रंग अपना जमा देती है

^१दिलकी जलन ^२फूलकी सुगन्ध ^३वाटिका ^४परदेशकी यात्रा ^५देशके दोस्तोंकी याद ^६अकबरके विचार ^७मज़मूनके फूल ^८जिस गोष्ठीमें शेर पढ़े जाते हैं

✓ (६)

क्या ही रह रहके तबीयत मेरी घबराती है
 मौत आती है शबे-हिज्र^१ न नींद आती है
 वो भी चुप बैठे हैं, अगियार भी चुप, मैं भी खमोश
 ऐसी सोहबतसे तबीयत मेरी घबराती है
 क्यों न हो अपनी लगावटकी नज़र पर नाज़ां ?^२
 जानते हो कि दिलोंको यह लगा लाती है
 बज़्मे-इशरत^३ कहीं होती है तो रो देता हूँ
 कोई गुज़री हुई सोहबत मुझे याद आती है

(७)

दुनियाका दीदनी^४ वो तमाशा निकल गया
 अब गर्द रह गई है ये मेला निकल गया
 अब मादे^५ के छानने वाले ही रह गये
 रूहानियात^६ का वो अखाड़ा निकल गया
 मौत आई इश्कमें तो हमे नींद आ गई
 निकली बदनसे जान तो काँटा निकल गया
 ✓ मैं खुश हुआ तो आपने दीं गालियाँ मुझे
 अच्छा हुआ बुखार^७ तो दिलका निकल गया
 क्या दिल लगाऊँ मौसिमे-गुलसे मैं ए सबा
 इसको भी कुछ सबात^८ है आया, निकल गया
 बाज़ारे-मगरिबीकी हवासे खुदा बचाए
 मैं क्या महाजनोंका दिवाला निकल गया

^१विरहकी रगत ^२नाज़ करना ^३आनन्द मंडली ^४देखने योग्य
^५पदार्थ ^६अध्यात्मवाद ^७गुवार गर्मी ^८स्थायित्व

✓ (८)

हयासे सर झुका लेना, अदासे मुस्करा देना
 हसीनोंको भी कितना सल्लू है बिजली गिरा देना
 ये तर्ज^१ एहसान करनेका तुम्हींको जेब^२ देता है
 मरजमें मुब्तिला^३ करके मरीजोंको दवा देना
 बलाएँ लेते हैं उनकी हम उन पर जान देते हैं
 ये सौदा दीदके काबिल हैं, क्या लेना है क्या देना
 खुदाकी यादमें महवीयते-दिल^४ बादशाही है
 मगर आसाँ नहीं है सारी दुनियाको भुला देना

(९)

जान ही लेनेकी हिकमत^५ में तरक्की देखी
 मौतका रोकने वाला कोई पैदा न हुआ
 उसकी बेटीने उठा रखी है दुनिया सर पर
 खैरियत गुजरी कि अंगूरके बेटा^६ न हुआ
 जस्तसे काम लिया दिलने तो क्या फ़िक्र करूँ
 इसमें क्या इश्ककी इज्जत थी कि रुसवा न हुआ
 मुझको हैरत है ये किस पेचमें आया जाहिद
 दामे-हस्ती^७ में फ़ँसा जुल्फ़का सौदा न हुआ

(१०)

कानने होशको उलभाया है अफ़सानोंमें
 आँखने दिलको फँसा रक्खा है अरमानोंमें

^१ढग ^२शोभा ^३फँसाकर ^४‘हृदयकी तल्लीनता’ ^५‘चिकित्साशास्त्र’
^६फ़ारसीमें अंगूरकी शराबको ‘दुस्ते-रज़’ अर्थात् अंगूरकी बेटी कहते हैं
^७माया जाल

मसजिदे छोड़के जा बैठे हैं मयखानोंम
 वाह क्या जोशे-तरक्की है मुसलमानोंमे
 गर्मिये-दिल जो है मंजूर तो मनतिक^१ पे न जा
 इश्क है आग लगानेके लिए जानोंमें
 जिसने रक्खा न फुज्ज़लीसे सरोकार 'अकबर'
 मर्दे आकिल है वही दह के मेहमानोंमें

(११)

हंगामा है क्यों बरपा, थोड़ी सी जो पी ली है
 डाका तो नहीं मारा, चोरी तो नहीं की है
 नातजरबाकारीसे वाइज^२ की ये है बाते
 इस रंगको क्या जाने, पूछो तो कभी पी है
 उस मयसे नहीं मतलब दिल जिससे है बेगाना
 मकसूद है उस मयसे दिल ही मे जो खिचती है
 तालीमका शोर ऐसा तहजीब का गुल ऐसा
 बरकत जां नहीं होती नीयतकी खराबी है

(१२)

✓ जलवए-गुलने चमनमे मुझे बेचैन किया
 मिल ही जाते हैं तेरी याद दिलाने वाले
 ✓ आज बँगलेमें मेरे आई थी आवाजे-अज्जा^३
 जी रहे हैं अभी कुछ अगले जमाने वाले
 न उन्हें साजकी हाजत है न सामअ^४ की तलाश
 खूब हैं फ़स्ले-बहारीके ये गाने वाले

तेग़े-क़ातिलने ये क्या अपने दिखाए जौहर
सर-बक़र^१ फिरते हैं अब जान चुराने वाले

(१३)

साथ यारोंके हमारे राहते-दिल उठ गई
एक दोका ज़िक्र क्या महफ़िलकी महफ़िल उठ गई
क़त्ल होनेकी किसे उम्मीद थी किस्मतकी बात
इत्तफ़ाक़न मेरी जानिब चश्मे-क़ातिल उठ गई

(१४)

आह जो दिलसे निकाली जायगी
क्या समझते हो कि ख़ाली जायगी ?
क्या ग़मे-दुनियाका डर मुझ रिंदको
और एक बोटल चढ़ा ली जायगी
ज़िन्दगीकी कल है पेचीदा तो ख़ैर
सांस ले लेकर चला ली जायगी
शेख़की दावतमें मयका काम क्या
एहतियातन कुछ मँगा ली जायगी

(१५)

कहाँ वो अब लुत्फ़-बाहमी^३ हैं मुहब्बतोंमे बहुत कमी है
चली है कैसी हवा इलाही कि हर तबीयतमें बरहमी^४ है
कहाँके मुस्लिम कहाँके हिन्दू, भुलाई है सबने अगली रस्में
अक़ीदे^५ सबके है तीन तेरह न ग्यारवीं है न अष्टमी है

^१सर हथेलीमें लिये ^२फिर भी शायद ज़रूरत पड़ जाय ^३परस्पर
प्रेम ^४खटका द्वेष ^५धार्मिक विश्वास

नज़र मेरी और ही तरफ़ है हजार रंगे-जमाना बदले
 हजार बाते बनाये नासेह जमी है दिलमें जो कुछ जमी है
 अगरचे मैं रिद मोहतरम^१ हूँ मगर इसे शेख़से न पूछो
 कि उनके आगे तो इस जमानेमें सारी दुनिया जहन्नमी है

(१६)

नहीं साइन्स वाक्रिफ़ कारे-दी^२से
 खुदा बाहर है हद्दे-दूरबी^३ से ।
 मशीनोंने किया नेकोंको रहसत
 कबूतर उड़ गये इंजनकी पीं से ।
 बिसाते-हलक़ये-म्यूनीसिपल देख
 तुम्हे क्या काम है जापान-ओ-चीं से ।

✓ (१७)

आपसे बेहद मुहब्बत है मुझे
 आप क्यों चुप हैं ये हँरत है मुझे ।
 शायरी मेरे लिये आसां नहीं
 भूठसे बल्लाह नफ़रत है मुझे ।
 नरमए यूरोपसे मैं वाक्रिफ़ नहीं
 देस ही की याद है बस गत मुझे ।
 दे दिया मैंने बिला शर्त उनको दिल
 मिल रहेगी कुछ न कुछ क़ीमत मुझे

(१८)

रंगे शराबसे मेरी नीयत बदल गई
 वाइज़की बात रह गई साक़ीकी चल गई ।

^१आदरणीय शराबी ^२धर्म के कार्य ^३दूरबीन की मीमा

मछलीने ढील पाई है लुकमे' पे शाद है
 सैय्याद' मुतमइन है कि कांटा निगल गई।
 हसरत बहुत तरक्किये-दुस्तर' की थी उन्हें
 परदा जो उठ गया तो वो आखिर निकल गई

(१९)

ये दुनिया रंज-ओ-राहतका गलत अन्दाजा करती है
 खुदा ही खूब वाक्फ़ि है कि किस पर क्या गुजरती है
 नये उसुर' नहीं आते चमनमें गुल खिलानेको
 यही जर्रे उभरते हैं यही मिट्टा सँवरती है
 जबानें मुस्तलिफ़ भी हों अगर दो हक परस्तोंकी
 बहम' निभ जाती है नीयतकी खूबी काम करती है

(२०)

जब यास' हुई तो आहोंने सीनेसे निकलना छोड़ दिया
 अब खुश्कमिजाज आँखे भी हुई दिलने भी मचलना छोड़ दिया
 बदली वो हवा गुजरा वो समाँ, वो राह नहीं वो लोग नहीं
 तफ़रीह कहाँ और संर कहाँ, घरसे भी निकलना छोड़ दिया
 वो सोज-ओ-गुदाज इस महफ़िलमे बाक़ी न रहा अन्धेर हुआ
 परवानेने जलना छोड़ दिया, शमओंने पिघलना छोड़ दिया
 अल्लाहकी राह अब तक है खुली आसार-ओ-निशाँ सब क़ायम हैं
 अल्लाहके बन्दोंने लेकिन उस राहमें चलना छोड़ दिया
 उस हूरे-लक्का' को घर लाये, हो तुमको मुबारक ए 'अकबर'
 लेकिन ये क़ायामत की तुमने घरसे जो निकलना छोड़ दिया

'कौर 'पकड़ने वाला, फँसाने वाला 'बेटी 'नत्व 'परस्पर
 'निराशा 'अप्सरा मी सुन्दर

(२१)

जवाबे-शेखमे ये तो कभी कहा जाता
 कि वअज^१ ठीक है लेकिन नहीं रहा जाता
 उमीदे-वस्ल जो होती न जाँ-फ़जा^२ 'अकबर'
 भला ये सदमए-फ़ुरक़त कभी सहा जाता
 मैं पूछूँ क्यों मेरे मरने पर लोग कहते हैं क्या
 ये क्या यक़ीन कि है कुछ न कुछ कहा जाता

(२२)

जलमी न हुआ था दिल ऐसा सीनेमें खटक दिन रात न थी
 पहले भी हुए थे कुछ सदमे, रोये थे मगर ये बात न थी

✓(२३)

ज़िन्दगानीका मज़ा दिलका सहारा न रहा
 हम किसीके न रहे कोई हमारा न रहा
 बोलनेकी है न क़ूबत^३ न इशारेकी सकत^४
 इतना बस भी मेरा फ़ितरतकी ग़वारा न रहा
 पूछता कोई दमे-मर्ग^५ सिकंदर 'अकबर'
 कितने दिनकी ये तअल्ली^६ थी कि दारा^७ न रहा

(२४)

जब ये देखा कि जहाँमें कोई मेरा न रहा
 शिद्दे-यास^८ से मैं आप भी अपना न रहा

^१उपदेश ^२आत्माको बढ़ाने वाली ^३शक्ति ^४शक्ति ^५मृत्यु के समय ^६धमड ^७ईरानका एक महान सम्राट ^८निगशाकी तीव्रता

इसकी परवा न रही खुश रहे दुनिया मुझसे
आक्रिलों^१ में मेरी गिनती हो ये सौदा न रहा
देखनेकी तो है ये बात रहा क्या उसमें
आप 'अकबर' से अबस^२ पछते हैं क्या न रहा

(२५)

कहूँ क्या गम कि दुनियासे मिला क्या ?
किसीको क्या मिला, दुनियामें था क्या ?
ये दोनों मसअले^३ हैं सरत मुश्किल
न पूछो तुम कि मैं क्या और खुदा क्या ?
रहा मरनेकी तैयारीमें मसरूफ़
मेरा काम और इस दुनियामें था क्या ?
वही सदमा रहा फुरकतका दिल पर
बहुत रोये मगर इससे हुआ क्या ?
इलाही 'अकबरे'-बेकस की हो ख़र
ये चर्चे हो रहे हैं जा-ब-जा क्या ?

(२६)

हैं दो रोज़ा कयामे-सराये-फना^४, न बहुतकी खुशी है न कमका गिला
ये कहाँका फसानए-सूद-ओ-ज़ियाँ^५, जो गया वो गया, जो मिला, वो मिला ।
न बहार ज़मी न ख़िजाँ ही रही, किसी अहले-नज़र^६ ने ये खूब कही
ये किरशमए-शाने-ज़ुहर^७ है सब, कभी ख़ाक उड़ी, कभी फूल खिला ।

^१बुद्धिमानों ^२व्यर्थ ^३प्रश्न ^४फना (मिट जाने) की सराय
अर्थात् दुनियाका कयाम (रहना) ^५लाभ-हानि ^६दूरदर्शी ^७प्रकट
होनेकी शान

(२७)

किस तरह कहता कि जो चाहूँ वो होना चाहिये
कुछ समझ ही मैं न आया चाहना क्या चाहिये
कह दिया मैंने कि हूँ और यह नहीं समझा कि क्या
इस खुदी^१ का हथ^२ क्या होता है देखा चाहिये

✓ (२८)

खिजाँ आती ही है और खाकमे मिलना ही पड़ता है
मगर कलियोंको इस गुलजारमें खिलना ही पड़ता है
जिगरको जलमसे, जलमोंको आहोंसे बचाता हूँ
मगर होते ही है जलम, और उन्हें छिलना ही पड़ता है
फनाके रंगसे दिल खून होता है मगर 'अकबर'
जबाँको याद करनेके लिये हिलना ही पड़ता है

(२९)

बस यही काम सबको करना है
यानी जीना है और मरना है
गुलसे पूछो किस इन्तजारमें है
गुन्चे^३ को तो अभी सँवरना है

(३०)

उमीद टूटी हुई है मेरी जो दिल मेरा था वो मर चुका है
जो ज़िन्दगानीको तलख कर दे वो वक़्त मुझपर गुज़र चुका है
अगरचे सीनेमें साँस अभी है नहीं तबीअतमें जान बाक़ी
अजल^४ को है देर एक नज़र की फ़लक तो काम अपना कर चुका है

^१अहंकार ^२परिणाम ^३कली ^४मृत्यु

शरीबख़ानेकी ये उदासी, ये नादुस्ती नहीं कदीमी'
चहल पहल भी कभी यहाँ थी कभी ये घर भी सँवर चुका है
शरीब 'अकबर' के गिर्द क्यों है जनाबे वाइजसे कोई कह दे
उसे डराते हो मौतसे क्या, वो ज़िन्दगी ही से डर चुका है

(३१)

तहज़ीबे-नौ' जिसे तुम कहते हो उसमे 'अकबर'
दुनिया बिगड़ रही है अब या सँवर रही है
नक़्शोंको तुम न जाँचो, ख़िलक़त' से मिलके देखो
क्या हो रहा है आख़िर कैंसी गुज़र रही है
दिलमे खुशी बहुत है या रंज और तरदुद
क्या चीज़ जी रही है क्या चीज़ मर रही है

(३२)

ज़िन्दगी बेलुफ़ है दुश्वार है
साँस लेना अब मुझे बेगार है

(३३)

कहाँसे बातका उसको ख़याल होता है
जमाना माज़ी' ही होने को हाल' होता है
मैं चाहता हूँ कि बस एक ही ख़याल रहे
मगर ख़यालसे पैदा ख़याल होता है
✓ सोसायटीसे अलग हो तो ज़िन्दगी दुश्वार
अगर मिलो तो नतीजा मलाल' होता है

खुदाका शौक हो जिसको मैं उसका शायक^१ हूँ
खुदाका यूँ तो हर एकको खयाल होता है

(३४)

फुगानो-आहकी लज्जत जो दिल हिले तो मिले
निशाने-नकहते-गुल^२ जब कली खिले तो मिले
हुई जो सुल्ह तो अब एहतियात ये कंसी
तकल्लुफ़ातकी तय कोजिये मिले तो मिले
मैं शिकवा^३ करता था इस वजहसे न मिलते थे
जो तर्क कर दिये मैंने वो सब गिले^४ तो मिले
खुजा रहा है तू जरूमोंको अपने ए ‘अकबर’
पर इसका लुत्फ़ कोई जरूम अगर छिले तो मिले

(३५)

जिन्दगी करती ही रहती है मुसीबत पंदा
बाख़ुदा इसमें भी कर लेते हैं लज्जत पंदा
दिलमें वो रगे-मुहब्बतको जगह देते हैं
जिससे हो जाती है तल्ली^५ में हलावत^६ पंदा
खल्क सूरतमें ही करती है मआनी की तलाश
वो मआनीसे भी कर लेते हैं सूरत^७ पंदा

(३६)

सावन भी बादलोंको इस साल है तरसता
गर्मी नहीं खिसकती पानी नहीं बरसता
हलवाईयोंको भी है गरमीसे तल्लकामी^८
पूरी सजा मिली है खुद हो रहे हैं खस्ता

^१प्रेमी ^२फूलकी खुशबू का निशान ^३शिकायत ^४शिकायत ^५कड़वाहट
^६मिठास ^७रूप ^८मुँहका कड़वा स्वाद

करना पड़ेंगी बाहम यारोंको चश्म पोशी
बाजारमें जो उनको कपड़ा मिला न सस्ता

(३७)

कोई डारविनका मुरीद है, कोई तजरबोंका शहीद है
वो खयाले-सिरें-अजल^१ कहाँ, वो सुरूरे-यादे-खुदा कहाँ
न हदीसे-इश्क^२ कहीं रही, न वो शमए-हुस्ने-हसीं रही
दिलो-दर्द-शोके-लका^३ कहाँ, वो हिजाबे-लुत्फे-जहाँ कहाँ ?
न इस अंजुमनकी वो बात है, न वो दिन है अब न वो रात है
न वो दिल है अब, न वो जौक^४ है, वो असर कहाँ, वो मजा कहाँ
हुई है पुरानी ये दास्ताँ, और उठा है अब ये पए-फ़ुसाँ^५
नहीं 'अकबर' अपने हवासमे, कोई उससे पूछे ये था कहाँ ?

(३८)

सँभाले दिलको कि हम हालते-जिगर देखे
तमाम आग लगी है किधर किधर देखे
करे न लुत्फ-ओ-करम वो तो क्या वफ़ा न करूँ
यही समझ है तो अच्छा सितम भी कर देखे
ये कहके रुहने दिलको किया सुपुर्द उनके
कि हम तो जाते हैं अब आप अपना घर देखे
तड़पके जान अभी दूँ कि हों ख़िजिल^१ अशियार
खुदा करे कि मुझे भी वो एक नज़र देखे

(३९)

तुम्हींसे हुई मुझको उलफ़त कुछ ऐसी
न थी वरना मेरी तबीयत कुछ ऐसी

^१मृष्टिका प्रथम दिन ^२भेदकी वात ^३चेहरा ^४रुचि ^५रोने धोनेके लिए ^६लज्जित

जहाँ दिल दुखा बस निकल आए आँसू
 बिगाड़ी मुहब्बतने आदत कुछ ऐसी
 हयाकी निगाहोंने मारा हँ मुझको
 नहीं चितवनोंकी शरारत कुछ ऐसी
 मैं रने लगा हाले-दिल कहते कहते
 यकायक भर आई तबीयत कुछ ऐसी
 ये गैरोंने अब उनको बरहम^१ किया है
 न थी वरना रंजिशकी सूरत कुछ ऐसी
 बसर क्यों न हो इश्क़े-खूबों में 'अकबर'
 खुदा हीने दी है तबीअत कुछ ऐसी

(४०)

जमानासाजी^२ है अब यह कि मुन्तज़िर था मैं
 हमारे आनेकी तुमको तो कुछ खबर भी न थी
 तुम्हारे दिलकी नज़ाकत पे उसको रहा आया
 नहीं तो आह मेरी ऐसी बे असर भी न थी
 जो आप होते हैं मुनकिर^३ तो खैर, मैं भूठा
 मेरा जिगर भी न था, आपकी नज़र भी न थी
 निगाहे क़हसे देखा यही ग़नीमत है
 मुझे तो आपसे उम्मीद इस क़दर भी न थी

✓ (४१)

दम लबों पर था दिले-ज़ारके घबरानेसे
 आगई जानमें जान आपके आ जानेसे

^१भड़काया है ^२मुन्दर्गियोंका प्रेम ^३दुनियादारी ^४इनकार करनेवाला

तेरा कूचा न छुटेगा तेरे दीवानेसे
 इसको काबेसे न मतलब है न बुतखानेसे
 बचता हूँ कूए-हसीना^१ की हवा खानेसे
 फ़ायदा क्या है दबी आगके भड़कानेसे
 रक्स^२ करती है सबा^३ गर्म-नवा^४ है बुलबुल
 कुश्ता^५ इस नाचका हूँ, मस्त हूँ इस गानेसे
 जो कहा मैंने, करो कुछ मेरे रोनेका खयाल
 हँसके बोले मुझे फ़ुरसत ही नहीं गानेसे
 जाँ-बलब^६ देखके सीनेसे लगाया उसने
 घट गई शर्म मेरे शौकके बढ़ जानसे
 खुश करे क्या मुझे गुँचों^७ का शगुफ़्ता^८ होना
 रंज होता है बहुत फूलोंके कुम्हलानेसे
 मैं जो कहता हूँ कि मरता हूँ, तो फ़रमाते हैं
 कारे-दुनिया न रुकेगा तेरे मर जानसे
 कौन हमदर्द किसीका है जहाँमे 'अकबर'
 एक उभरता है यहाँ एकेके मिट जानसे

(४२)

समझे वही इसको जो हो दोवाना किसीका
 'अकबर' ये गज़ल मेरी है अफ़साना किसीका
 दिखलाते हैं बुत जलवए मस्ताना किसीका
 याँ काबए-मक़सूद^९ है बुतखाना किसी का

^१हमीनोके कूचे ^२नृत्य ^३पवन ^४गाती है ^५मारा हुआ ^६मृत्युके
 निकट जब जान होठों पर थी ^७कलियो ^८खिलना ^९जिस काबेको
 मैं चाहता हूँ

अल्लाहने दी है जो तुम्हें चाँद सी सूरत
 रोशन भी करो जाके सियह खाना किसीका
 अइक^१ आँखोंमें आजाएँ एवज^२ नौंदके साहब
 ऐसा भी किसी शब सुनो अफ़साना किसीका
 जान अपनी जो दाँ शमअके शोलेसे लिपट कर
 समझा रह्ये-रोशन इसे परवाना किसीका
 क्या बर्क^३की शोखी मेरी आँखोंमें समाए
 है पेशे-नज़र जलवए-मस्ताना किसीका
 उलफ़त मुझे उससे है, उसे ग़रसे है शौक
 में शोफ़ता^४ उसका हूँ वो दीवाना किसीका
 इशरत^५ नहीं आती जो मेरे दिलमें न आए
 हसरत ही से आबाद है वीराना किसी का
 करने नहीं देते जो बयाँ हालते-दिलको
 सुनियेगा लबे-गोर^६ से अफ़साना किसीका
 सामाने-तकल्लुफ़ नज़र आएँगे जो हरसू^७
 जन्नतमें भी याद आएगा काशाना^८ किसीका
 अहबाबने पूछा जो मेरा हाल तो बोले
 सुनते हैं वो इन रोज़ों हैं दीवाना किसीका
 करते वो निगाहोंसे अगर बादा-फ़रोशी^९
 होता न गुज़र जानिबे मयखाना किसीका
 हम जानसे बेज़ार रहा करते हैं 'अकबर'
 जबसे दिले-बेताब है दीवाना किसीका

^१आँसू^२बदले, वजाय^३प्रेमी^४खुशी^५कब्रके

होटों से

^६हर तरफ़^७घर^८शराब बेचते

✓ (४३)

जानिबे-जंजीरे-गोसू^१ फिर खिंचा जाता है दिल
 देखिये अब मेरे सर पर क्या बला लाता है दिल
 लोग क्योंकर छोड़ देते हैं मुहब्बत दफ़ातन^२
 मैं तो जब यह क्रस्द करता हूँ मचल जाता है दिल
 रखके तस्वीरे-खयाली यारकी पेशे-नज़र
 रात भर मुझको शबे-फ़ुरक़तमे तड़पाता है दिल
 खोफ़के पर्दे में छिप जाती है जाने-नातवाँ
 आशिकीके मअरके^३ में काम आ जाता है दिल
 शंख अगर काबेमें खुश है ब्रह्मन बुतखानेमें
 अपने अपने तौर पर हर शरूस बहलाता है दिल
 क्रस्द करता हूँ जो उठनेका तो फ़रमाते हैं वो
 और बैठो दो घड़ी साहब, कि घबराता है दिल
 यह नहीं कहते यहीं रह जाओ अब तुम रातको
 बस इन्हीं बातोंसे 'अकबर' मेरा जल जाता है दिल

(४४)

खुदाने अक़लकी दौलत अता^४ की मेह्लबाँ होकर
 अदाए-शुक्र कर दीवानए-हुस्ने-बुताँ^५ होकर
 खुलीं वो शर्मगीं^६ आँखे शबे-वसलत^७ जबाँ होकर
 मुहब्बतकी नज़रने दी इजाज़त मुझको हाँ होकर
 मुझीसे सब ये कहते हैं कि नीची रख नज़र अपनी
 कोई उनसे नहीं कहता न निकलो यों अयाँ^८ होकर

^१काकुलकी जंजीर ^२एकाएक ^३युद्ध ^४प्रदान की ^५सुन्दरियोंके
 रूपका दीवाना ^६लज्जित ^७मिलनकी रात ^८खुले चेहरेके
 साथ, बे पदार्थ

अगर अल्लाह देता कूबते-गुफ्तार^१ शमओंको
तो दादे-हिम्मते-परवाना देतीं यक जबाँ होकर
मजाले-गुफ्तगू किसको है उनके हुस्नके आगे
जबाने बन्द कर दीं इन बुतोंने बे जबाँ होकर
क़रोबे-ख़त्म थी मजलिस कि आ निकले इधर वह भी
गरज वायज की मेहनत रह गई सब रायगाँ होकर
ये इरशाद आपका बिलकुल बजा है हज़रते-वायज
मगर में क्या कहूँ कुछ बन नहीं पड़ती जबाँ होकर
निगाहें मिल गई थीं मेरी उनकी रात महफ़िलमें
ये दुनिया है बस इतनी बात फ़ली दास्ताँ होकर
बहुत मुश्किल हुआ है ख़त्म करना मुझको नामे^२ का
वफ़ूरे-शौक़^३ है रुकता नहीं ख़ामा^४ रवाँ^५ होकर
फ़िरी क्रिस्मत हवाकी आपकी जुल्फ़ोंके सदक़ेमे
परेशाँ होके उट्ठी थी चली अंबरफ़शाँ^६ होकर

(४५)

बनोगे ख़ुसरए-अक़लीमे-दिल^७ शीरीं जबाँ^८ होकर
जहाँगीरी^९ करेगी ये अदा नूरे-जहाँ^{१०} होकर
ग़रोबीसे लिपट जाती है दुनिया फ़िक़े-नाँ^{११} होकर
अमीरोंके मुक़ाबिल^{१२} होती है हुस्ने-बुताँ होकर
पए-जब्ते मुहब्बत^{१३} अक़ल मजहबमें हुई दाख़िल
बनी वजहे-अनाद^{१४} आख़िर नसीबे-दुश्मनाँ^{१५} होकर

^१बोलनेकी शक्ति ^२एक स्वर ^३पत्र ^४तीव्र चाव ^५क़लम ^६चलकर
^७अंगूरकी सी मुगन्धि फैलाने वाली ^८हृदयके राज्यके बादशाह ^९मधुरभाषी
^{१०}मंसार पर राज्य ^{११}दुनियाका नूर (ज्योति) ^{१२}रोटीकी चिन्ता ^{१३}सामने
^{१४}प्रेमकी भावनाको दवाने ^{१५}वैरका कारण ^{१६}दुश्मनके भाग्यसे

मजाले-गुप्तगू किसको फ़नाका जब पयाम आया
 हुई खामोश आख़िर शमअ भी आतिश-जबाँ^१ होकर
 जो दानिशमन्द^२ हैं वो यूँ दुआ देते हैं लड़कोंको
 न हो मक्कार पीरी^३ में, न हो आशिक़ जवाँ होकर
 जवानीकी दुआ लड़कोंको नाहक़ लोग देते हैं
 यही लड़के मिटाते हैं जवानीको जवाँ होकर
 बदी तीनत^४ की छिप सकती नहीं शीरों ज़बानीसे
 दिल अच्छा हो तो निभ जाती है शायद बद जबाँ होकर
 जमींकी तरह जिसने आजिज़ी-‘ओ-खाक़सारी’ की
 खुदाकी रहमतों^५ ने उसको ढांका आस्माँ होकर
 जईफ़ी^६ जोर पर आई, हुए बेदस्त-ओ-पा^७ ‘अक़बर’
 किया बच्चोंसे बदतर हमको पीरीने जवाँ होकर

(४६)

मेरी रूह तनसे जुदा हो गई

किसीने न जाना कि क्या होगई

मरीज़े-मुहब्बत तेरा मर गया

ख़ुदाकी तरफ़से दवा हो गई

मिला मैं भी एक रात दुनियासे ख़ूब

मेरे घर भी ये बेसवा^१ हो गई

गवारा न था ज़िक्के-ख़ूने-जिगर

मगर अब तो मेरी सिज़ा हो गई

बुतों को मुहब्बत न होती मेरी

ख़ुदाका करम हो गया, हो गई

^१अग्निकी ज़बान ^२समझदार ^३बुढ़ापे ^४‘प्रकृति’ ^५‘नम्रता’ ^६‘कृपा’
 दया ^७‘बुढ़ापा’ ^८‘बे हाथ पैर, हाथ पैरसे काम लेनेमें असमर्थ’ ^९‘हरजाई’

इशारा किया बैठनेका मुझे
 इनायतकी आज इन्तहा हो गई
 वो सारी उमीदे मिलीं खाकमें
 जो बदली उठी थो हवा हो गई
 दवा क्या कि वक़्ते-दुआ भी नहीं
 तेरी हालत 'अकबर' ये क्या हो गई

✓ (४७)

लिखा हुआ है जो रोना मेरे मुक़द्दरमे
 खयाल तक नहीं जाता कभी हँसी की तरफ़
 तुम्हारा साया भी जो लोग देख लेते हैं
 वो आँख उठाके नहीं देखते परोकी तरफ़
 बलामे फँसता है दिल मुफ्त जान जाती है
 खुदा किसीको न ले जाय उस गलीकी तरफ़
 कभी जो होती है तकरार ग़ैरसे, हमसे
 तो दिलसे होते हो दर पर्दा तुम उसीकी तरफ़
 निगाह पड़ती है उन पर तमाम महफ़िलकी
 वो आँख उठाके नहीं देखते किसीकी तरफ़
 निगाह उस बुते-खुदबी की है मेरे दिल पर
 न आइनेकी तरफ़ है न आरसीकी तरफ़
 यही नज़र है जो अब क़ातिले-जमाना हुई
 यही नज़र है कि उठती न थी किसीकी तरफ़
 ग़रीब ख़ानेमें लिल्लाह दो घड़ी बँठो
 बहुत दिनोंमें तुम आए हो इस गलीकी तरफ़

जरा सी देर ही हो जायगी तो क्या होगा
घड़ी घड़ी न उठाओ नज़र घड़ीकी तरफ़
जो घरमें पूछे कोई ख़ौफ़ क्या है कह देना
चले गये थे टहलते हुए किसीकी तरफ़
हज़ार जलवए-हुस्ने-बुताँ हो ए 'अकबर'
तुम अपना ध्यान लगाये रहो उसीकी तरफ़

(४८)

जमाना हो गया बिस्मिल तेरी सीधी निगाहोंसे
ख़ुदानख़्वास्ता^१ तिरछी नज़र होती तो क्या होता
पिसा जाता हूँ मैं सौ जानसे इम बेवफ़ाई पर
मुहब्बत प्यारकी मुझसे अगर होती तो क्या होता
मेरी हसरतकी नज़रों ही पै ज़ालिम इस क़दर बिगड़ा
कहीं ददें-जिगरसे चश्म तर होती तो क्या होता

(४९)

बेचैन है दिल सीनेमे मेरा रह रहके तेरी याद आती है
वो चश्मे-सियह जादूकी भरी आँखोंमें मेरी फिर जाती है
ए हसरते-वस्ल ख़ुदाके लिये बेचैन न कर इतना मुझको
क्यों ज़लम बनी है दिलमे मेरे क्यों रूहको ये तड़पाती है
तुम उसके जुदा हो जानेका 'अकबर' न करो कुछ रंज-ओ-अलम
है जानसे प्यारी कौन सी शै इन्सांसे यही छुट जाती है

(५०)

दो ही दिनमे रुख़े-गुल ज़र्द हुआ जाता है
चमने-दह्लसे दिल सर्द हुआ जाता है
हो रही है मेरी फ़रियादकी उलटी तासीर
वो तो कुछ और भी बेवर्द हुआ जाता है

^१ख़ुदा न करे

मुस्तजात*

वस्ले-जानांकी दिले-ज़ारको हसरत ही रही
 पर मयस्सर न हुआ
 उम्र भर जान पै फुरकतकी मुसीबत ही रही
 था ये किस्मतका लिखा
 तुमने जो बात कही मैंने दिल-ओ-जाँ से वो की
 न किया उज़्र कभी
 तुमको इस पर भी मगर मुझसे शिकायत ही रही
 फल ये खिदमतका मिला
 चश्मये-चश्मसे अशकोंकी भी मौजे निकलीं
 ठंडी साँसें भी भरों
 आतिशे-गमकी मगर दिलमे हरारत ही रही
 न हुआ फर्क ज़रा
 खाई सौ मरतबा क़समे कि हूँ आशिक़ तुझ पर
 नहीं औरों पै नज़र
 बदगुमानी मगर उस शोख़की आदत ही रही
 साफ़ मुझसे न हुआ
 एक तुम हो कि हज़ारों ही किये मुझ पै सितम
 मिलके ग़ैरोंसे बहम
 एक में हूँ कि मुझे तुमसे मुहब्बत ही रही
 कभी शिकवा न किया

*यें भी ग़ज़लकी तरह उर्दू शायरीकी एक किस्म है। शैलीके दृष्टि-कोणसे बिल्कुल ग़ज़ल है, अन्तर केवल यह है कि ग़ज़लमें दोनों चरण बराबर होते हैं और इसमें हर छन्दका एक चरण बड़ा और एक उससे छोटा होता है।

दुश्मनोंने तो बहुत बात बनाई जाकर
 कि वो बिगड़े मुझ पर
 हाल पर मेरे मगर उनकी इनायत ही रही
 कुछ किसीसे न हुआ
 है तुम्हारी भी अजब सख्त तबीअत ब खुदा'^१
 रहा दिलमें न मजा
 मिश्रतें करते रहे हम तुम्हें वहशत ही रही
 पास बैठे न जरा
 मजिले-गोरमें तनहा मुझे सब छोड़ चले
 अपने बेगाने जो थे
 साथ देने को फ़क़त उसकी इनायत ही रही
 और कोई न रहा
 हमनशी'^२ उठ गये इस बज्रमसे अपनी 'अकबर'
 तुम भी बस बाँधो कमर
 न वो जलसे ही रहे अब न वो सोहबत ही रही
 क्या है जीनेका मजा

रुबाइयाँ

(१)

क्या फ़र्ज है यह कि हम ढिठाईसे रहें
लाज़िम क्या है बलन्द-अदाई^१ से रहें
काफ़ी है खुदाकी याद एक गोशेमें
रोटी मिल जाय और सफ़ाईसे रहें

(२)

रोशन सीनेमें शमए-ईमाँ कर दे
दिल तेरी तरफ़ रहे वो सामाँ कर दे
दुनिया से हो बे ख़बर तेरे शीक़में रूह
यारब ! 'अक़बर' पे जीस्त^२ आसाँ कर दे

(३)

क्या तुमसे कहें जहाँको कंसा पाया
ग़फ़लत हीमें आदमीको डूबा पाया
आँखें तो बेशुमार देखीं लेकिन
कम थीं बख़ुदा कि जिनको बीना^३ पाया

(४)

ऊँचा नीयतका अपनी जीना रखना
अहबाब^४ से साफ़ अपना सीना रखना

^१ऊँचे ढंग ^२जीवन ^३देखनेवाली ^४मिश्रगण

गुस्सा आना तो नेचुरल^१ है 'अकबर'
लेकिन हँ शदोद^२ ऐब कीना^३ रखना

(५)

रिश्वत है गलूए-नेकनामी^४ का छुरा
ऐय्याशी है बदीके पहिएका धुरा
हरचन्द कि बेमहल^५ खुशामद है बुरी
गुस्ताख़ मगर खुशामदीसे भी बुरा

(६)

पीरी आई हुई जवानी रहसत
साथ इसके वो लुत्फ़ ज़िन्दगानी रहसत
है अब तो इसीका इन्तज़ार ए 'अकबर'
हमको भी करे जहाने-फ़ानी^६ रहसत

(७)

इस बज़्मसे सबके सब उठे जाते हैं
तसकींके जो थे सबब उठे जाते हैं
एक क़ूवत मज़हबी अक़ीदों^७ से थी
वो भी तो दिलोंसे अब उठे जाते हैं

(८)

गर जेबमे जर नहीं तो राहत भी नहीं
बाज़ूमे सकत नहीं तो इज़्जत भी नहीं

^१स्वाभाविक ^२बड़ा, बहुत बड़ा ^३बैर ^४'नेकनामी'के गले
^५'बेमौका' ^६'मृत्यु' लोक ^७'धार्मिक विश्वासों

गर इल्म नहीं तो जोर-ओ-ज़र है बेकार
मजहब जो नहीं तो आदमीयत भी नहीं

(९)

दुनियासे मेलकी जरूरत ही नहीं
मुझको इस खेलकी जरूरत ही नहीं
दर पेश है मंज़िले-अदम^१ ए 'अकबर'
इस राहमें रेलकी जरूरत ही नहीं

(१०)

मुश्किलसे ये हालतें सही जाती हैं
फासैं हैं कि क़ल्बमें रही जाती हैं
तफ़सील न पूछ हैं इशारे काफ़ी
यूँही ये कहानियाँ कही जाती हैं

(११)

ख़ातिर मजबूत दिल तवाना रखो
उम्मीद अच्छी ख़याल अच्छा रखो
हो जायेंगी मुश्किलें तुम्हारी आसाँ
'अकबर' अल्लाह पर भरोसा रखो

(१२)

ख़्वाहिश है अगर तुम्हें ग़नी बननेकी
दौलतकी हविस है और धनी बननेकी

^१परलोककी मंज़िल धनी दानी

शहसी^१ हालतको छोड़ कर ए हिन्दी
कोशिश लाजिम है कम्पनी^२ बननेकी

(१३)

हर एको नौकरी नहीं मिलनेकी
हर बाग़में यह कली नहीं खिलनेकी
कुछ पढ़के तो सनअत-ओ-ज़राअत^३ को देख
इज्जतके लिये काफ़ी है ए दिल नेकी

(१४)

रुकता नहीं इन्क़लाब चारा क्या है
हैरां है मलक^४ बशर^५ बिचारा क्या है
तसकीके लिये मगर है काफ़ी ये ख़याल
जो कुछ है खुदाका है हमारा क्या है

(१५)

तूने दिल दहसे मिला रक्खा है
कायम राफ़लतका सिलसिला रक्खा है
क्या खुद ज़िन्दा है अपनी ताक़त से तू
आख़िर किसने तुझे जिला रक्खा है

(१६)

हासिद^६ तुझ पर अगर हसद करता है
कर सब कि खुद वो कारे-बद^७ करता है

^१व्यक्तिगत ^२संस्था ^३उद्योग और खेती ^४फ़रिश्ते ^५मनुष्य
^६ईर्ष्या करने वाला ^७बुरा काम

अपनी पस्तीको कर रहा है महसूस
और तेरी बलन्दियोंसे कद^१ करता है

(१९)

इन्साँ जो उम्र खत्म कर चुकता है
खुश हो चुकता है आह भर चुकता है
फ़ानी दुनियाका देख लेता है रंग
जिन्दा जो रहा भी वो तो मर चुकता है

(२०)

इन्साँ चाहे जो बात अच्छी चाहे
बदियों से मुहतरिज^२ हो नेकी चाहे
शैतानसे वो फ़िलासफ़ी^३ है मन्सूब^४
जिसका मतलब है कर वो जो जी चाहे

(२१)

चीखे चिल्लाए कूदे उछले टहले
हिरफिरके वहीं रहे जहाँ थे पहले
हालत तो वही है बल्कि उससे बदतर
यूँ मुँहसे जो जिसके दिलमें आये कह ले

(२२)

हर एकसे सुना नया फ़साना हमने
देखा दुनियामे एक ज़माना हमने
अवबल ये था कि बाक़फ़ीयत पे था नाज़
आख़िर ये खुला कि कुछ न जाना हमने

अन्य कविताएँ—

वर्क-कलीसा*

रात उस मिससे कलीसामे हुआ मैं दोचार^१
 हाय वो हुस्न, वो शोखी, वो नजाकत वो उभार
 जुल्फे पेचाँ मे वो सजधज कि बलाएँ भी मुरीद^२
 कद्दे-रअना मे वो चमखम कि कयामत^३ भी शहीद
 दिलकशी चालमे ऐसी कि सितारे रुक जायें
 सरकशी^४ नाजमे ऐसी कि गवर्नर भुक जायें
 पिस गया, लोट गया, दिलमें सकत ही न रही
 सुर थे तमकीन^५ के जिस गतमे वो गत ही न रही
 अज्र की मने कि ए गुलशने-फ़ितरत^६ की बहार
 दोलत-ओ-इज्जत-ओ-ईमाँ तेरे कदमों पे निसार
 तू अगर अहदे-वफ़ा^७ बाँधके मेरी हो जाय
 भरी दुनियासे मेरे क़त्वको सेरी^८ हो जाय
 शोकके जोशमे मने जो जबाँ यूँ खोली
 नाज-ओ-अन्दाजसे त्योरीको चढ़ा कर बोली
 गैर मुमकिन है मुझे उन्स^९ मुसलमानोंसे
 बूए-खूँ आती है इस क़ौमके अफ़सानोंसे

* गिरजाकी विजली (रोशनी) ^१आमने सामने ^२पेचदार काकुल
^३शिष्य ^४मुडील, मुन्दर कद ^५प्रलय ^६मनोहरता ^७उद्दता ^८शक्ति
^९रोबदाव ^{१०}प्रकृति-वाटिका ^{११}वफ़ादारीका वचन ^{१२}संतोष ^{१३}घनिष्टता

अर्ज की मैंने कि ए लज्जते-जाँ,^१ राहते-रूह^२
 अब जमाने पे नहीं है असरे-आदम-ओ-नूह^३
 शजरे-तूर^४ का इस बगामें पौदा ही नहीं
 गेमुए-हूर^५ का इस दौरमें सौदा ही नहीं
 अब कहाँ जेह्नु^६ मे बाक़ी है बुराक़-ओ-रफ़-रफ़^७
 टकटकी बंध गई है क़ौमकी इन्जनकी तरफ़
 याँ न वो नारए-तकबीर^८ न वो जोशें-सिपाह
 सबके सब आप ही पर पढ़ते हैं मुबहानल्लाह
 मुझपै कुछ वजहे-अताब^९ आपको ए जान नहीं
 नाम ही नाम है वरना मैं मुसलमान नहीं
 जब कहा साफ़ ये मैंने कि जो हो साहबे-फ़ह्म^{१०}
 तो निकालो दिले-नाज़ुकसे ये शुब्हा ये वह्म^{११}
 मेरे इस्लामको एक क़िस्सए-माज़ी^{१२} समझो
 हँसके बोली कि तो फिर मुझको भी राज़ी समझो

वापस आनेके लिये

लंदनको छोड़ लड़के अब हिन्दकी ख़बर ले
 बनती रहेंगी बातें आबाद घर तो कर ले
 राह अपनी अब बदल दे, बस पास करके चल दे
 अपने वतनका रख कर और रहसते-सफ़र ले

^१जीवनका स्वाद ^२आत्माका आनन्द ^३आदम और नूह पैग़म्बरोंके नाम है ^४तूर पहाड़ पर एक पेड़ था जिससे हज़रत मूसा (एक पैग़म्बर) के साथ ईश्वरके दर्शन हुए थे ^५स्वर्गकी अप्सराओंके केश ^६स्मृति, दिमाग ^७वो सवारियाँ जिनपर मुहम्मद साहब सवार होकर खुदासे मिलने गये ^८मुसलमानोंका धार्मिक नारा ^९प्रकोपका कारण ^{१०}समझदार ^{११}मंदेह ^{१२}अतीतकी कहानी

इंगलिशकी करके कापी, दुनियाकी राह नापी
 दीनी-तरीक़^१ में भी अपने क़दमको धर ले
 'नेचर' पुकारता है, है अस्ल नस्ल^२ तेरी
 कहती है 'हिस्ट्री' भी बस जा और अपना घर ले
 वापस नहीं जो आता, क्या मुंतज़िर^३ है इसका
 माँ खस्ता-हाल होले, बेचारा बाप मरले
 मगरिबके मुरशिदों^४ से तू पा चुका बहुत कुछ
 पीराने-मशरिकी^५ से अब फ़ज़^६ की नज़र ले
 मैं भी हूँ एक सुखनवर^७ आ, सुन, कलामे-अकबर^८
 इन मोतियोंसे आकर दामनको अपने भरले

'डैम फ़ूल'

बहुत ही उम्दा है ए हमनशी^१ ये ब्रिटिश राज
 कि हर तरहके ज़वाबित^२ भी है उसूल^३ भी है
 जो चाहे खोल ले दरवाज़ा-अदालतको
 कि तेल पेचमे है, ढोली इसकी चूल भी है
 जगह भी मिलती है कौंसिलमे 'आनरेबुली' की
 जो इल्तमास^४ हो उम्दा तो वो क़बूल भी है
 चमक दमककी वो चीज़े है हर तरफ़ फैली
 कि आँख मद्ध^५ है, खातिर अगर मलूल^६ भी है
 तरह तरहके बना लो लिबास रंगा-रंग
 अलावा रुईके रेशम भी और 'बूल' भी है

^१धार्मिक ढंग ^२असली नस्ल ^३प्रतीक्षा कर रहा है ^४गुरुओं ^५पूर्वके
 गुरुओं ^६लाभ उठा ^७कवि ^८अकबरकी कविता ^९साथी ^{१०}कानून ^{११}सिद्धान्त
^{१२}प्रार्थना ^{१३}तल्लीन ^{१४}उदास

अँधेरी रातमे जंगलमे है रवाँ इन्जन
 कि जिसको देखके हैरान चश्मे-गूल' भी है
 शिगुफ़ता पार्क है हर सिम्त रहरवों के लिये
 नज़र नवाज़ है पत्ती हसीन फूल भी है
 जब इतनी नेमते मौजूद है यहाँ 'अकबर'
 तो हर्ज क्या है जो साथ उसके 'डैम-फूल' भी है

हुज़ूर जार्ज और हम

लन्दनसे देहली आए हैं दस यौम के लिये
 ये जहमते उठाई फ़क़त क़ौमके लिये
 देखो हुज़ूर जार्ज हैं कैसे खुदापरस्त
 गिरजामे सर झुका है दिसम्बर हो या अगस्त
 रखता नहीं नमाज़से तू अपने दिलको गर्म
 ए मुद्ईए-दीने-खुदा' शर्म ! शर्म !! शर्म !!!
 बाबू 'ग्रेजुएट' है 'काली' के साथ है
 एक आप है कि होटलों वालीके साथ है
 कहते हो तुम जो 'बी' तो उन्हें आती है हँसी
 यानी जबाने-शौक़ ग़लत लफ़्ज़में फँसी
 'बी' का पता कहाँ है वो कितने है कौन है
 मरकज़ से है जुदा न सिवा है न पौन है
 'आनर' के साथ नाम-गिरामी भी लिख गया
 लेकिन इधर से ख़त-गुलामी' भी लिख गया

'भूतप्रेतकी आँख' 'पथिको' 'आँखोंको भानी' 'खुदाके धर्मका
 दावा करनेवाले' 'काली' माना 'we' 'गुलामीका पट्टा'

मौके का है खयाल न अब 'कान्शेन्स' है
 इरशाद हो गलत भी तो उसका 'डिफेन्स' है
 इरशाद लाजवाब तो कुरआन ही का है
 कानून बेमिसाल तो रहमान ही का है
 नकली कमेटियों में न दिल है न दीन है
 यह 'पानियर'-पुरी की फ़क़त एक मशीन है
 एक दिल्लगी है कांग्रेस हो कि लीग हो
 जाती है एक नमूद जो कोई अलीग हो
 घर छोड़ छाड़ कर जो बग़ल चाप बन गए
 कांटों में अब फँसो कि मटन चाप बन गए
 मानूंगा मैं कि आपकी मजबूरियाँ भी हैं
 पर बिलइरादा दीन से कुछ दूरियाँ भी हैं
 कुलफ़त इसीकी मुभको है हर आन हर नफ़स
 लाखों की सहे-राह है दस बीस की हवस
 गो अपने साथ आपका 'हुरी' न ले गया
 'अकबर' मगर खुदा की गवाही तो दे गया

अकबर और एक बुजुर्ग

ख़ूब एक नासहे-मुशफ़िक्क^१ ने ये इरशाद किया
 बज़म में उसने तअल्ली^२ जो कल 'अकबर' से सुनी

^१Conscience ^२defence ^३ईश्वर ^४धर्म ^५पानियरके पन्ने
 भरने ^६अलीगढ़ विश्वविद्यालयके पढ़े हुए ^७mutton chop ^८इरादेके
 साथ ^९परेशानी ^{१०}सॉम ^{११}मार्गकी बाधा ^{१२}लोभ ^{१३}huira
 वाहवाही ^{१४}स्नेही उपदेशक ^{१५}आत्म प्रशंसा

न तेरी फ़ोज, न शागिर्द, न पैरो,^१ न मुरीद
 न तू अर्जुन है, न सुकरात, रिशी है, न मुनी
 किस नगी^२ पर हूँ तेरे बस्त^३ के आसार अयाँ
 नोटबुक तेरी शिकस्ता^४ तेरी पेंसिल हूँ धुनी
 फ़िक्से, ज़िक्से, इबरत^५ से तुझे काम नहीं
 वाहवा के लिए लफ़्ज़ोंकी दुकाँ तूने चुनी
 तबअ^६ में तेरी वही ख़ामये-हिसे-दुनियाँ
 आतिशे-खौफ़े-ख़ुदा^७ से न जली हूँ न भुनी
 खुद परस्ती^८ हूँ बहुत खलक^९ की ख़िदमत^{१०} कम हूँ
 दिल दही^{११} कम हूँ तो हूँ दिल शिकनी^{१२} चार गुनी

वर्तमान युग

क्यों न अपने दिलको हो उनसे मिलाप
 लाट साहब हूँ हमारे माई बाप
 उनके हक्कमें भी दुआ करते हूँ हम
 मंदिरोंमें जब कभी करते हूँ जाप
 उनकी बढ़ती सब मनाते हूँ यहाँ
 स्वाह वो हों, स्वाह हम हों, स्वाह आप
 हर तरफ़ सामान हूँ आरामके
 खुल गई हूँ हर तरफ़ हर शं की 'शाप'^{१३}
 हो गए रोशन हुदूदे-आस्माँ^{१४}
 इल्म चमका हो गई तारोंकी नाप

^१अनुयायी ^२नगीना ^३भाग्य ^४प्रकट ^५फटी पुरानी ^६नसीहत
^७नवियन ^८दुनियाके लालचकी कमज़ोरी ^९ख़ुदाके डरकी आग ^{१०}अपनी
 पूजा ^{११}जनता ^{१२}मेवा ^{१३}दिल रखना ^{१४}दिल तोड़ना ^{१५}shop
^{१६}आकाशकी सीमा

सारी धरती दब गई 'साइन्स' से
लग गए पाइप गया दुनियासे पाप
हज़रते-बाइज हैं राज़ी रक्स' पर
देर क्या है अब पड़े तबले पै थाप

वोटके शैदाई

मुंशी कि 'क्लक' या ज़मोदार
लाजिम है कलकटरी का दीवार
हंगामा ये 'वोट' का फ़क़त है
मतलूब^१ हरेकसे दस्तख़त है
हर सिम्त मची हुई है हलचल
हर दर पं ये शोर है कि चल चल
टमटम हो कि गाड़ियाँ कि मोटर
जिस पर देखो लदे हैं वोटर
शाही वो है या पयमबरी है
आख़िर क्या शं ये मेम्बरी है
'नेटिव' है नमूदके ही मोहताज
कौंसिल तो है उनकी जिनका है राज
कहते जाते हैं या इलाही
सोशल हालतकी है तबाही
हम लोग जो इसमें फँस रहे हैं
अग़ियार^२ भी दिलमें हँस रहे हैं
दर अस्ल न दीन है न दुनिया
पिंजड़ेमें फुदक रही है मुनिया

^१नाचने ^२चाहते हैं ^३दुश्मन

'स्कीम' का भूलना वो भूले
लेकिन ये क्यों अपनी राह भूले
हैं क्रीमके दिलमें खोट पैदा
अच्छे अच्छे हैं वोट के शैदा'

इशरत^१ का घर

फ़रल हो अल्लाहका हों जमअ साले सालियाँ
वो उछाले 'बाल' ये चमकाएँ अपनी बालियाँ
लैम्पकी हो जगमगाहट और बजे 'फ़ोनोग्राफ़'
इशरती^१ भूमा करे बच्चे बजाएँ तालियाँ
घर रहे आबाद समधी और समधिन खुश रहें
डोगनी इनआम पाए गाए प्यारी गालियाँ
गिर्द बंगलेके रहे सरसब्ज हर शाखे-दरख्त
नह्लके पानीसे लहराती रहें सब बालियाँ
ढेर हो फूलोंका गुलदस्ते बनाए बागबाँ
पेड़ फल देते रहें माली लगाए डालियाँ
सोने चाँदीकी बहें मौजे दुल्हनके हाथसे
लें बलाएँ और दुआएँ दें उन्हें घर वालियाँ
गुल मचाएँ खेलमें बच्चे, रहे बंगलेमें धूम
मेहमानोंके लिए पकवानकी हों थालियाँ
भाँक कर देखें तो जज साहबका दिल भी हो निहाल^२
कमरेकी दीवारमें दो एक बनी हों जालियाँ

^१प्रेमी ^२इशरत हुसैन डिप्टी कलक्टर, अकबरके मुपुत्र
गेंद ^३इशरत हुसैन ^४गुश

^१ball

बिगड़ी दशाका कारण

उम चीजका क्या कहना 'अकबर' था जिसने दिलोंको नेक किया
लाखों ही तबाए' को खँचा, हमवार' किया और एक किया
जो कौमको अबतर करते हैं, अब उन असरों' पर रोना है
मालूम नहीं क्या मतलब है, मालूम नहीं क्या होना है
तालीम जिन्होंने पाई है वो बद' तो नहीं है बेहिस' है
दावे जो है रस्म-ओ-मजहबके, सब उनके यहाँसे 'डिसमिस' है
क्यों दोलत-ओ-क़ूवतकी है कमी, इसके तो सबब पेचीदा है
कूछ इसको समझ सकते हैं, वही बूढ़े जो जमाना-दीदा' है
लेकिन ये जो 'सोशल' आफ़त है, तूफ़ान बपा है फ़ितनोंका
वे मेह्लिये-मिल्लत' की ये हवा, एक क़ह्र' है जिसका हर भोंका
इसका जो सबब है सुन लो उसे, सब पर वो अयाँ है जाहिर है
अलफ़ाज सरीह-ओ-वाजेह' है, ये मतलए'^{११}-अकबर' हाज़िर है ।
तालीम जो दी जाती है हमे, वो क्या है फ़क़त बाज़ारी है
जो अक्ल सिखाई जाती है, वो क्या है फ़क़त सरकारी है

एक बूढ़ा और लड़के

एक बूढ़ा नहीफ़-ओ-ख़स्त-ओ-ज़ार'^{१२}

एक ज़रूरतसे जाता था बाज़ार

'नवियतों, मनोवृत्तियों' समतल 'प्रभावों' 'बुरे' 'अनुभूतिहीन'
'जमाना देखे हुए' 'social सामाजिक' 'जाति की बेपरवाही' 'ग़ज़ब,
प्रकोप' 'स्पष्ट' 'मतला उस शेरको कहते हैं जिसकी दोनों पंक्तियोंमें'
एक ही तुक हो' 'कमज़ोर, दुबला पतला थका माँदा'

जोफ़े-पीरी^१ से खम^२ हुई थी कमर
 राह बेचारा चलता था भुक कर
 चन्द लड़कोंको इस पै आई हँसी
 क्रुद पै फ़न्ती कमान^३ की सूभी
 कहा एक लड़केने ये उससे कि बोल
 तूने कितनेको ली कमान ये मोल ?
 पोर मर्दे-लतीफ़-ओ-दानिश मन्द^४
 हँसके कहने लगा कि ए फ़रजन्द^५
 पहुँचोगे मेरी उम्रको जिस आन
 मुफ़्त मिल जायगी तुम्हें ये कमान

अकबर और कालिज

मंने अकबरसे कहा आइये हुजरे^६ में मेरे
 इस चटाई पै नमाज़े पढ़ें हस्बे-दस्तूर^७
 छोड़िये आप ये हंगामए तालीमे-जदीद^८
 काट ही देगा किसी तरह खुदावन्दे-नाफ़ूर
 बोला भुंभलाके कि हं सल्ल जहन्नम^९ मुभको
 इसकी निस्बत कि में कालिजमें हूँ अहमक मशहूर

एक मिस और ज़बान

मंने कहा बहुत सी ज़बानें हूँ जानता
 मुद्दत तक इम्तहान बिये इम्तहान पर

^१बुढ़ापेकी कमजोरी ^२भुकी हुई ^३धनुष ^४समझदार, बुद्धिमान
^५पुत्र ^६मसजिदकी कोठरी ^७पहलेकी तरह ^८नई शिक्षा ^९नरक

जर्मन, फ्रेन्च, लैटिन-ओ-इंग्लिश पं हैं उबूर'
साबित मेरा कमाल है सारे जहान पर
एक शोख-तबअ^१ मिसने दिखाई जबां मुझे
बिजली थी अब^२ मैं कि क़मर^३ आस्मान पर
बोली रहोगे जीस्तकी लज्जतसे बेख़बर
कुदरत^४ न पाई तुमने अगर इस ज़बान पर

१ मजनूं और उसकी मास

कहा मजनूंसे यह लैलाकी मां ने
कि बेटा तू अगर करले एम० ए० पास
तो फ़ौरन ब्याह दूँ लैलाको तुझसे
बिला दिक्कत मैं बन जाऊँ तेरी मास
कहा मजनूंने ये अच्छी सुनाई
कुजा^१ आशिक़, कुजा कालिजकी बकवास
कुजा ये फ़ितरती जोशे-तबीयत^२
कुजा ठूँसी हुई चीज़ोंका एहसास^३
बड़ी बी आपको क्या हो गया है
हिरन पर लादी जाती है कहीं घास ?
ये अच्छी क़द्रदानो आपने की
मुझे समझा है कोई हरचरनदास ?
यही ठहरी जो शर्त-वस्ले-लैला^४
तो इस्तीफ़ा मेरा बा-हसरत-ओ यास^५

^१अधिकार ^२चंचल स्वभाववाली ^३बदली ^४चांद ^५अधिकार
^१कहाँ ^२प्राकृतिक जोश ^३अनुभव ^४लैलाके मिलनकी शर्त ^५हमरन
और निराशाके साथ

सवाल जवाब

हस्ती के शजर में जो ये चाहो कि चमक जाओ
 कच्चे न रहो बल्कि किसी रंगमें पक जाओ
 मैंने कहा क्रायल मैं तसव्वुफ का नहीं हूँ
 कहने लगे इस बज्जम में आओ तो थिरक जाओ
 मैंने कहा कुछ ख़ौफ कलक्टरका नहीं है
 कहने लगे आजाएँ अभी वह तो दबक जाओ
 मैंने कहा वर्जिश की कोई हद भी है आखिर
 कहने लगे बस इसकी यही हद है कि थक जाओ
 मैंने कहा अफ़कार से पीछा नहीं छूटता
 कहने लगे तुम जानिबे-मयखाना लपक जाओ
 मैंने कहा 'अकबर' में कोई रंग नहीं है
 कहने लगे शेर उसके जो सुन लो तो फड़क जाओ

एक वहमी

एक दोस्त हमारे हैं तप उनको शदीद आई
 भेला किये बीमारी मुद्दतमें शफ़ा पाई
 लाहौरके जलसेमें शिरकत को हूँ अब जाते
 हालाँकि अभी क़ूवत पाऊँमें नहीं पाते
 मैं कहता हूँ 'जाते हो लाहौर बिला क़ूवत'
 वो इसको समझते हैं 'लाहौर बिला क़ूवत'!

जीवन पेड़ सूफीवाद कमरत "चिन्ताओं" ज्वर तीव्र
 'स्वास्थ्यलाभ' धीरीक होनेको 'यक्ति' "इस शब्दका अर्थ तो यह
 है कि अल्लाहके सिवा कोई डर या यक्ति नहीं है। परन्तु उर्दूमें यह एक
 मुहावरा सा बन गया है और घृणा या निरस्कारका भाव प्रकट करनेके
 लिये बोला जाता है। ऊपरकी पंक्तिमें जो अन्तिम वाक्य है उसकी
 समानतामें लाभ उठाकर हास्य उत्पन्न किया है।

ये मेरी गलत बंदिश वो उनकी गलत फ़हमी
में हृदसे बड़ा शायर, वो हृदसे सिवा वहमी^१

स्थायी तरक्की

जो देखी हिस्ट्री इस बात पर कामिल^२ यकीं आया
उसे जीना नहीं आया जिसे मरना नहीं आया
अलीगढ़को शरफ़ बख़्शा है एकबाले-नसारा^३ ने
कि जो मुस्लिम उठा शोके तरक्कीमे यहीं आया
वो एक दिन था मिथ्याँ को आर^४ था साहब भी बनने में
पड़ा अब सायए-मगरिब तो बीबी भी बनीं आया^५
तरक्की मुस्तक़िल^६ वो है जो रूहानी^७ होए 'अकबर'
उड़ा जो जरए-उन्सुर^८ वो फिर सूए ज़मी^९ आया

भौरैका राग

छिड़ा है राग भौरैका हवाकी है नई धुन भी
ग़ज़ब है साल के बारह महीनोंमें ये फ़ाग़ुन भी ।
ये रंगे-हुस्ने-गुल, ये नग़मए-मस्तानए-^{१०}बुलबुल
इशारा करती है फ़ितरत^{११} इधर आ देख भी सुन भी ।
बड़े दर्शन तुम्हारे हो गए राजाकी सेवासे
मगर मनका पनपना चाहते हो तो करो पुन भी

बीमारी

ज़ुल्फ़मे दिलकी गिरफ़्तारी बुरी
सब मरज़ अच्छे ये बीमारी बुरी

^१शक्की 'पूर्ण' 'गौरव' 'अप्रेज़ाका एकवाल' 'आपनि' 'दाई'
^२स्थायी 'आध्यात्मिक' 'मिस्ट्रीका कण' 'धरनीकी ओर' 'बुलबुलका'
मस्ती भरा गीत ^३'प्रकृति'

होशसे आशिकको बचना चाहिए
 राहे-दिलमें ये गरीबारी' बुरी
 आज मुनिये आके 'अकबर' से कबीर
 शैख जी होली में खुददारी' बुरी

कटहलका पारसल

इस पेड़में खूब ही कटहल आए हैं
 हर शाखमें पाँच सात फल आए हैं
 'अकबर' ने कहा कि हम गरीबोंके लिए
 'नेचर' की तरफसे पारसल आए हैं

नए लड़के

देख आए क़ौम मुनते थे जिसे
 चन्द लड़के हैं मिशन स्कूलके
 बार-आवर' पार्कमें होंगे ये क्या
 गमलों ही पर रह गए हैं फूल के

क़ौमी राग

इंजनको ये आग हो मुबारक
 अंग्रेज़को भाग हो मुबारक
 देहलीको सुहाग हो मुबारक
 क़ौमी हमें राग हो मुबारक

शायरी क्या है

एक शायरी वो है जो बढ़ाती है अक्ल-ओ-होश
 एक शायरी वो है जो दिलाती है दिलको जोश
 इरशाद हो तो किस्मे-सोयम^१ का भी कर दूँ जिक्र
 एक शायरी है वो भी जो है सिर्फ़ नाव-नोश^२
 लेकिन कोई भी किस्म हो, अच्छा है शेर अगर
 महफ़िलको ग़ालिबन^३ हम:तन^४ पाइयेगा गोश^५

सेल्फ़ गवर्नमेन्टका नतीजा

मुल्ह रही अब न गवारा हमे
 'सेल्फ़ गवर्नमेन्ट'^६ ने मारा हमे
 काम तो जो कुछ है वो है आपका
 नाम ही ने सिर्फ़ उभारा हमे
 दर्द किसीका न रहा दिलमें अब
 खूब दिया तुमने अफ़ारा हमे
 कौमकी तफ़रीक़^७ मे टुकड़े उड़े
 मुल्कसे अब क्या है सहारा हमे
 जलवा दिखानेका उन्हें शौक़ है
 काश मुबारक हो नज़ारा हमे

पूरब और पच्छिम

दिला दे हमको भी साहब से 'लायल्टी'^८ का परवाना
 क़यामत तक रहे सय्यद^९ तेरे 'आनर' का अफ़साना

^१तीसरी किस्म ^२पीने खाने ^३प्रायः ^४साकार ^५कान ^६'self
 government ^७विभाजन ^८loyalty ^९सर सय्यद अहमद खा

बहुत मुश्किल है निभना मशरिफ-ओ-मशरिफका याराना
 इधर सूरत फ़कीराना उधर सामान शाहाना
 मुबारक शैखको नाने-जबी' के साथ ये क्रिरअत'
 हमें तो दैर' में प्रसाद खाना और भजन गाना

बिना केन्द्र बिन्दुके गोलाई

मेरी समझसे है बाहर मुहीत-बेमरकज'
 तरक्कियां हुई किसकी जो क़ौम ही न रही
 तमाम क़ौम 'एडीटर' बनी है या 'लीडर'
 सबब ये है कि कोई और दिल्लगी न रही

नए युगकी नारी

चल बसे वो जिन्हें मक़दूर' था खुद-दारी का
 न वो तक्रवा' न वो तालीम न वो दिलकी उमीद
 नए अन्दाज़े-इबादत हैं नई सूरते-ऐश
 रमज़ा माअते-'क्रिकेट' है 'थियेटर' में है ईद
 दबी आवाज़ किसीने जो कहा भी कि जनाब
 कुछ मुनासिब नहीं इस वक़्तमें ऐसी तमहीद'
 शैखसाहब हीका है बज़ममें क्या रोब-ओ-वक्रार'
 कि ख़वातीन' को पब्लिकमें हो वक्रअत'^१ की उमीद
 नारे तहक़ीर'^२ के इस पर हुए यारोंमें बलन्द
 लड़कियां बोल उठीं खुद बतरीक़े-ताईव'^३

^१जों की रोटी ^२लयके साथ क़ुरान पाठ मंदिर 'बिना केन्द्रका वृत्त
 'सामर्थ्य' ^३piety 'क्रिकेट खेलने का समय 'भूमिका' 'रोब और इज़्ज़त
 'स्त्रियों' 'मम्मान अपमान' 'अपमान सूचक नारे' 'समर्थनका ढग

तुमने शलवारको पतलूनसे बदला ए शैव
फिर मेरे वास्ते महरम^१ रहे क्यों जवले-वरीद^२ ?
खुद तो गिटपिटके लिए जान दिये देते हो
हमसे कहते हो कि पढ़ बैठके कुरआने-मजीद
लाल जब खुद ही कनेरीका हुआ है बन्दा
तो ये मँना रहे क्यों गोशए-उजलत^३ में शहीद

दिल्ली दरबार

दरबारे-दिल्ली एक तरफ लोकल मजालिस एक तरफ
मिरजाका चमखम एक तरफ बुद्धकी घिस घिस एक तरफ
ये रंग-ओ-बू ये जीनते,^४ ये पुर तकल्लुफ नेमते
हर गोशए-कैम्प^५ एक तरफ और सारा पेरिस एक तरफ
भूले हैं सब किव्व-ओ-मनो^६ हैं शाने-देहली दीदनी
दिलकश दुकाने एक तरफ, बारोब^७ 'आफिस' एक तरफ
सरकश कोफिक्रे हिफजे-जो^८, 'अकबर' का शोरे-अलअमाँ^९
साइन्सका जोर एक तरफ हुस्ने-रखे-मिस एक तरफ
जाने-जहाँबानी^{१०} है ये, अजमत^{११} में लासानी है ये
हफ्त आस्माँ^{१२} है एक तरफ और जार्जे-खामिस^{१३} एक तरफ

शैव और नई शिक्षा

ये पूछा शैवसे मैंने कि कहिये क्या गुजरती है
ये सन उन्नीस सौ दस है नए मकसूद-ओ-मंज़ूर^{१४} है

^१चोली ^२कुरआनकी एक मीख जिमका अर्थ है कि खुदा हमारी
गर्दनकी रगसे ज्यादा करीब है ^३एकान्त ^४सजावट ^५कैम्प, शिविरका
कोना ^६धनीमानी ओर साधुसन्यासी ^७गोबदार ^८प्राणरक्षाकी चिन्ता
^९दुहाईका शोर ^{१०}मंसार पर राज्य करना ^{११}महानता ^{१२}सात
आस्मान ^{१३}जार्जे-पंचम ^{१४}इच्छाएं और दृश्य

निहायत यास-ओ-हसरत' से वो बोले क्या कहूँ तुमसे
 ये दो मिसरे^१ सुनो जिसमें निहाँ बफ़तरके दफ़तर हैं
 नई तालीमके मुर्दे तो जिन्दा हैं तमाशोंमें
 पुरानी वज़अ^२ के जिन्दे मगर मुर्दोंसे बदतर हैं

कल क्या होगा

एक साअत^३ की यहाँ कह नहीं सकता कोई
 यह भला कौन बताए तुम्हें कल क्या होगा
 बढ़ता ही जाता है सोज़े-गमे-फ़ुर्कत^४ यारब
 आज यह हाल हमारा है तो कल क्या होगा ?
 एक दिन और क़यामत खिसक आएगी इधर
 और क्या अर्ज^५ कहूँ आपसे कल क्या होगा ?

दिसम्बर भी माह जून हुआ

जहाँमें हाल मेरा इस क़दर ज़बून^६ हुआ
 कि मुझको देखके बिस्मिलको भी सुकून^७ हुआ
 ग़रीब दिलने बहुत आरज़ूएँ पंदा कीं
 मगर नसीबका लिक्खा, कि सबका खून हुआ
 वो अपने हुस्नसे वाक्रिफ़^८ में अपनी अक़लसे सेर^९
 उन्होंने होश संभाला मुझे जुनून^{१०} हुआ
 उमीदे-चदमे-मुरब्बत^{११} कहाँ रही बाक़ी
 ज़रीया बातोंका अब सिर्फ़ टेलीफ़ोन हुआ

^१निराशा और हसरत ^२पंक्तियाँ ^३ढंग, रहन सहन ^४क्षण ^५विरहके
 दुखकी जलन ^६खराब ^७शान्ति ^८परिचित ^९संतुष्ट ^{१०}पागलपन
^{११}मुरब्बतकी निगाह

निगाहे-गर्म क्रिस्मसमें भी रही हम पर
हमारे हकमें दिसम्बर भी माह जून हुआ

इन्सान कौन है

हँसके दुनियाँमें मरा कोई, कोई रोके मरा
जिन्दगी पाई मगर उसने जो कुछ होके मरा
जो उठा मरने से वह जिसकी खुदा पर थी नज़र
जिसने दुनिया ही को पाया था वो कुछ खोके मरा
था लगा रूह पे ग़फ़लतसे दुई^१ का धब्बा
था वही सूफ़िये-साफ़ी^२ जो उसे धोके मरा

शैख और अकबर

शैखजी की नज़रमे मैं हूँ फ़क़त
मेरी नज़रोंमें सारी दुनिया है
बस यही वजह है कि ए 'अकबर'
मुझको हैरत है उनको गुस्सा है

बदला हुआ ज़माना

ख़ाली हरम^३ को शैख ही तनहा न कर गए
हैरतमें बुत भी हैं कि ब्रह्मन किधर गए
सौबाए-मग़रिबी^४ से हैं सबके हवास गुम
ऐसी ये तप चढ़ी है कि चेहरे उतर गए
आया बतनमें फिरके अगर इसकी क्या खुशी
जिन जिनको पूछता हूँ ये सुनता हूँ मर गए

^१द्वैत ^२पवित्र साफ़ ^३मसजिद ^४पश्चिमके अनुकरणकी सनक

भगवानका प्रेम

इस बागमें ये निगाह 'अकबर'
दिलको बेहद उभारती है
है किसके फ़िराकमें पपीहा
कोयल किसको पुकारती है

दाल में काला

फँसती है अगर तो सिर्फ़ मछली
कहनेको तो जल भी जालमें है
'नेटिव' की गुज़र है दाल ही पर
काला इस तरह दालमें है

कहाँ तक है

खुदाकी राहमें बेशर्त करते थे सफ़र पहले
मगर अब पूछते हैं रेलवे इसमें कहाँ तक है ?
कहो मिल्लतके लीडरसे वो साहबसे न हो शाफ़िल
कि क़ौमी ज़िन्दगी कुछ है तो बस इस नीमज़ाँ तक है

अलफ़ाज़ और मअनी

मअनीकी गिरह कहाँ खुली है
अलफ़ाज़की ही दुकाँ खुली है
हर वाहकी तह में है यहाँ आह
दम बन्द है और ज़बाँ खुली है

क्या गुजरी

तमन्नाओंकी हालत कुछ न पूछो दिलके बुझने पर
अंधेरेमें नहीं मालूम परवानों पे क्या गुजरी ?
सदी है चौदहवीं और इन्कलाबोंकी नहीं कुछ हद
खुदा ही को है इल्म इसका मुसलमानों पे क्या गुजरी ?

दवा

किताबों ही में रह जाएगी सारी तीन पांच उनकी
तरीके इसके लेकिन और है कहनेको क्या हाजत
बुतोंने सच कहा इस दौरमें रहसत है या शेखी
अकीदों की दवा कालिज, तबस्सुम की दवा हाजत

क्या हो रहा है

कोई हँस रहा है कोई रो रहा है
कोई पा रहा है कोई खो रहा है
कोई ताकमे है किसीको है गफलत
कोई जागता है कोई सो रहा है
कहीं ना उम्मीदीने बिजली गिराई
कोई बीज उम्मीदके बो रहा है
इसी सोचमें मैं तो रहता हूँ 'अकबर'
ये क्या हो रहा है, ये क्यों हो रहा है ?

धरम

दुनियाकी हवस धरमका लेती है जो रंग
दिक्कत होती है यात्री होते हैं तंग

गंगा जीका बहाव तो एकसाँ है
आफ़त है मगर प्रयाग वालोंकी ये जंग

इल्म और जहालत

मैं भी ग्रेजुएट हूँ तू भी ग्रेजुएट
इल्मी मुबाहिसे^१ हों जरा पास आके लेट
दोनोंने पास कर लिये हैं सख्त इम्तहाँ
मुमकिन नहीं कि अब हो कोई हमसे बदगुमाँ
बोली, ये सच है, इल्म बढ़ा, जेह्ल^२ घट गया
लेकिन ये क्या खबर है कि शैतान हट गया

हरिको जपना

उसका घोड़ा जिसकी काठी
भेंस उसीकी जिसकी लाठी
जोर बिठादे थाने थाने
दुनिया देखे, दुनिया माने
तुमको तो है खाली छपना
इससे अच्छा हरिको जपना

उर्दू शायरी पर हमारी अन्य पुस्तकें

नजीरकी बानी—सम्पादक : 'फ़िराक़' गोरखपुरी : नजीरका कलम सावनकी घटा है जो सैकड़ों शीर्षकोंपर बरस जाया करता है। नजीरकी कुलकी कुल रचना शुद्ध खड़ी बोलीमें है और खड़ी बोलीका हिन्दी या उर्दूका, कोई दूसरा कवि हिन्दीकी ऐसी भरमार और बोछार अपनी रचनाओंमें नहीं कर सका जैसी नजीरने की है। भूमिका व टिप्पणी सहित—पृष्ठ २५२ मूल्य २।।)

राग-विराग—सम्पादक : 'फ़िराक़' गोरखपुरी : उर्दूकी सुरीली तथा चुटीली छन्द-वद्ध प्रेम-कहानियों व वैराग्य तथा नीतिपूर्ण उक्तियों-का हिन्दीमें संकलन। उर्दूकी जगत-प्रसिद्ध मसनवियाँ भी इसमें मिलेंगी। पढ़ते ही मजा आ जायगा। भूमिका व टिप्पणी सहित—पृष्ठ २२४ मूल्य २।।)

धरतीकी करबट—लेखक व सम्पादक : 'फ़िराक़' गोरखपुरी : लेखककी ४० हजार पंक्तियोंमेंसे केवल ३ हजार पंक्तियोंका जिनमें चन्द चुनिन्दा नवीनतम नज़्मों व रोवाइयोंका कविके ही द्वारा संकलन व सम्पादन। कई हजार हिन्दी पाठक आज 'फ़िराक़'की रचना-को पढ़नेके लिए उत्सुक रहते हैं इस दृष्टिसे कविने हिन्दी पाठकोंके लिए यह संकलन तैयार किया है। भाषा सरल और सुगम तथा बोलचालके निकट है। भूमिका व टिप्पणी सहित— मूल्य २।।)

'अकबर' इलाहाबादी—सम्पादक : डा० सैयद ऐजाज हुसैन, एम० ए० डी० लिट० : उर्दूके हास्य रस-सम्राट अकबरकी हास्यरस प्रधान तथा अन्य गज़लोंका हिन्दी पाठकोंके लिए हिन्दी लिपिमें यह संकलन निस्सन्देह पाठकोंको बड़ा ही रुचिकर होगा। भूमिका व टिप्पणी सहित— मूल्य २।।)

महाकवि 'मीर'—सम्पादक : डा० सैयद ऐजाज हुसैन, एम० ए० डी० लिट० : 'मीर' अकबराबादी उर्दू साहित्यमें 'गज़लोंके बादशाह' कहे जाते हैं। 'ग़ालिब' ग़ौर 'जौक़' जैसे काव्य-महारथियोंने भी 'मीर'का लोहा माना है। हिन्दी पाठकोंको उर्दू-साहित्यके ऐसे बड़े कवि-सम्राट-की रचनाओंसे परिचित करानेके लिए यह संकलन प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक गज़ल पढ़ने लायक है। भूमिका व टिप्पणी सहित—

मूल्य लगभग २।।)

